༄ ཀུན་འཛོམ།

कुन्ज़ोम

सिस्कर आपआ

Society for

Conservation and Promotion of Culture in Lahul and Spiti (Kunzom)

C/O Tobdan, Miyan Behad, Dhalpur, Kullu-175 101, Post Box No. 24

Society for Conservation and Promotion of Culture in Lahul & Spiti (Kunzom).

Registered under Societies Registration Act No. Kyelang 210/SCPC dt.7-12-2000

संस्था के कुछ सीमित उद्देश्य निम्न प्रकार से है:

लाहुल स्पिति तथा इसके साथ–साथ हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्र की भाषा व संस्कृति से सम्बन्धित काम करना, इन के विषय में सामग्री एकत्रित करना तथा इस क्षेत्र में काम करने वाले विद्वानों तथा संस्थाओं और सरकारी विभागों व संस्थाओं व आदान–प्रदान करना।

सदस्य संस्थापक

1. तोबदन, कुल्लु,
2. कर्नल (रिटायर्ड) प्रेम चन्द्र, के.सी.एस.एम.वी.एस.एम. (कुल्लू)
3. टशी सन्डुब, मंडी।
4. नवांस नोरबू कुकुजी, केलांग।
5. डा. बनारसी लाल, वाराणसी।
6. डा. रन्धीर मानेपा, केलांग।
7. सोनम होजेर, क्वारिंग।
8. अमर सिंह, शिमला।
9. उरग्यान छैरिंग, कुल्लू।
10. छेरिंग दोर्जे, दिल्ली।

सम्पर्क :
तोबदन,
मुख्य सम्पादक, कुन्ज़ोम,
मियां बेहड़, ढालपुर,
पोस्ट बाक्स 24
कुल्लू–175101 (हि० प्र०)
रजिस्टर्ड आफिस: गांव तिनो, डा. कोलोंग, जिला लाहुल स्पिति (हि० प्र०)

मूल्य रू. 50/-

रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं! इनमें संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं।

मुख्य संपादक

बर्ष 2

अंक 2

मुख्य सम्पादक : तोबदन

पट्टनी
कर्नल (रिटायर्ड) प्रेमचंद, के. सी.
एस. एम. वी एस. एम.

पुनन्
नवांग नोरबू कुकुजी

तिनन
डा. बनारसी लाल

༄ ཀུན་འཛོམས།
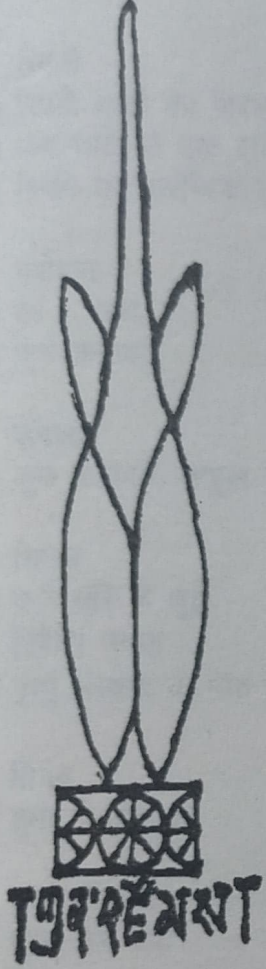
कुन्ज़ोम

लाहुल स्पिति की भाषा एवं संस्कृति की बार्पिकी

जनवरी दिसम्बर, 2006

Society for

CONSERVATION AND PROMOTION OF CULTURE IN LAHUL & SPITI (KUNZOM)

Registered under Societies Registration Act. No. Kyelang. 210/SCPC dt. 7-12-2000

Published by : Society for Conservation and Promotion of Culture in Lahul & Spiti (Kunzom)

इस अंक में

ख) विविध विषय

लेखकों की ओर से

आदरणीय तोबदन जी,
नमस्कार।

अपार हर्ष का विषय है नई सहस्राब्दि में हम अपनी संस्कृति के प्रत्येक पहलू को लेकर जागरूक हो गये हैं। यह सब अचानक नहीं हुआ है। आपकी पीढ़ी ने जो शून्यता झेली होगी उसे हम नई पीढ़ी के लोग महसूस कर सकते हैं। हम सौभाग्यवान हैं कि हमें कुछ आधार तो मिल ही रहा है। आप जैसे संस्कृति कर्मियों की बदौलत। लेकिन अभी भी कम से कम मैं आश्वस्त नहीं हूं कि हमारी पीढ़ी इसे यथोचित ढंग से आगे नहीं वहन कर पाएगी। आधुनिक भौतिकतावादी एवं आर्थिक विकास का दबाव इस दिशा में एक बड़ा अवरोध है। हम इस से बच नहीं पा रहे है।

पढ़ना–लिखना आज मूर्खों का काम रह गया है। या फिर पलायनवादी साधू सन्यासियों का। निसन्देह हम लोग अपनी अपनी जगह इस मशाल को जलाए हुए हैं और आप जैसे वरिष्ठ लोगों के दिशा निर्देशन में कुछ ठोस प्रतिफल भी नज़र आ रहे हैं। गीत, संगीत, इतिहास, धर्म, साहित्य, जीवन शैली, खानपान, पहरावा, परंपराएं, मिथक हर विषय पर आज लाहुल स्पिति का कोई न कोई संस्कृति कर्मी कार्यरत है। भाषा एवं बोलियों पर अभी तक बहुत ही कम काम हुआ है। सर्वप्रथम ग्रिअरसन और काफी देर बाद में डी0डी0 शर्मा ने हमारी बोलियों एवं उपभाषाओं पर महत्वपूर्ण काम किया है। कुंज़ोम से उम्मीदें जगी हैं। हमारे अपने लोग शायद इस क्षेत्र में अधिक मौलिक काम कर पाएंगें।

कुंज़ोम के प्रवेशांक को लेकर बहुत कुछ कहना है। भोटी लिपी का ज्ञान न होने का मलाल मुझे बार बार तंग करता है। देवनागरी एक समृद्ध तथा वैज्ञानिक लिपि है। लेकिन मुझे लगता है उस की उपयोगिता का पूरा लाभ लेखक बन्धु नहीं उठा पा रहे हैं। रोमन में भी कुछ लिखा जाना चाहिए क्योंकि इस लिपि में अन्तर्राष्ट्रीय फोनेटिक सिम्बल विकसित हो चुके हैं। हमारी बोलियां उच्चारण पर आधारित हैं। अतः शब्दों के लिप्यान्तरण में अत्यन्त सावधानी की आवश्यकता है। पत्रिका के लिए कुछ सुझाव हैंः–

पत्रिका के दो अनुभाग हों। एक में नमूना लेख दिए जाएं तथा दूसरे में पिछले अंक के लेखों पर विचार विमर्श। इस तरह हम एक सही दिशा पकड़ पाएंगे। प्रवेशांक के प्रयोगों पर कुछ टिप्पणियां दे रहा हूं।

1 दीर्घ ई की मात्रा का प्रयोग अधिक हुआ है। जैसे तुलची़, यांग पेची़, तथा बहुत से अन्य शब्द। उच्चारण पर ध्यान दें तो मेरी समझ में ये समस्त मात्राएं लघु होनी चाहिए।

2 र्‍हूमु, र्‍हिनमो, पोर्‍ह, स्रस्रीन, पेस्रीरिंग। मैं समझता हुं यहां वास्तविक ध्वनि एक ही है– मूर्धन्य "ष"। इन्हें इन अलग रूपों में लिखना जरूरी नहीं था। इसी प्रकार अन्यत्र 'श्र' वर्ण भी प्रयोग हुआ है।

3 ञिमिंग, चुंग, रंग, ञिमिंड्, चुड्. रंड्. लिखना उचित मालूम होता है।

4 विसर्ग एवं हलन्त का उचित प्रयोग नहीं हुआ है।
मिन्दिनः, हतिनः, कः, मलैनः में विसर्ग का प्रयोग आवश्यक है। इन में अ स्वर पूर्व में ही उपस्थित है। अलबता दोरथल, ञिरग, में उच्चारण के अनुरूप हलन्त लगना चाहिए।

5 बुक्या और कुरचा़ शब्दों को ध्यान से देखें क्या इनका उच्चारण इसी प्रकार होता है? नहीं। बुक्च़ सही जान पड़ता है। और कुर्‍चा़ अथवा कुर्चा़ ।

कुछ और विकल्प

गरो क्योपी	ग्रोक्पोयी
तफस दो	तफस्दोग्
ज़म्पा रोची	ज़म्प रोक्ची
हीती	हितिग्
दपसंग	दग्सम्

और भी बहुत कुछ। सभी लेखों पर लिखना कठिन है। स्थान भी नहीं है। बहरलाल हमारी भाषाएं अलिखित हैं। उच्चारण वैविध्य तो रहेगा ही। फिर भी प्रयास यह रहना चाहिए कि शब्द के मूल को आधार मान कर उस का लिखित रूप तय हो। इस से हम वैज्ञानिक अध्ययन के लिए सुविधाजनक पृष्ठभूमि तैयार कर पायेंगे। मेरे सुझाव अन्तिम नहीं हैं। मैं चाहता हूं कि बहस हो और हम कुछ महत्व पूर्ण निष्कर्षों पर पहुंचें।

भवदीय
—अजेय, केलांग।

आदरणीय गुरू जी,

नमस्कार

मेरे अगले लेख का शीर्षक होगा 'सेन्डु' यानि ब्याह—शादी व जन्म—मरण के समय काम कैसे निभाते हैं। आगे मैं सोच रहा हूं कि 'हल्डा' के विषय में लिखूं विशेष कर जैसे कि तिनन—रांगलो की तरफ मनाया जाता है।

अन्त में कुन्ज़ोम से जुड़े सभी सदस्यों को मेरी ओर से टशी दे—लेग व जुले।>

आपका शुभचिन्तक
—डा0 रणधीर मनेपा

यशो जोगे सम्पादक जी,

पड़.ठेल। केनो गुट्रे स्वड़.लो घरतिरी रिड. कुन्ज़ोम ज़े जलम ल्हेप्ति। केन्दिड. बधाई रन्ड्रिमि जोगे गप्पा शु। चिट्री रूठे मिन बीणेकतन। कुन्ज़ोम! घ्यमा आँर भत्ते ट्रोक्कन श्वातोर। चड़.स:, लोग्स:, गाहरि, तोत्प:, स्वड़.ल:, पिति:, भत्तेतु ट्रोक्कन शुविमि ठारि कुन्ज़ोम। कुन्ज़ोम! यहुरन: मोड़े शु कनु था:करिड स्वड़.लो थल्ज़ि बड़ा भारी मोड़े कुर अपिमि तो।

स्वड़.लो बोलीतु शचि़ रिड. कुन्ज़ोम मीलो मुण्ढो र्‌हग शु। दि छल्ले मे मोड़े ए रूठे कम शुच:। अञो तचे चे़रिञि मा, बोली श्रिडि. केश्रिमि म:, यो:पि ए बोड.पि त आँर । कुन्ज़ोम'बी स्वड.लो बोली तु जीबि शुबि लेपोतो। अञों तचे कुन्ज़ोम श्रिडि. बड़.ज़ोतो, बोली रे श्रिडि. बड़.ज़ोर । थलो अन्ज़ातु थल्ज़ि दि इ तेर शोतो, ध्वां गिबि चेसअ।

चे़चि़रिड. देवनागरी चेद त हेन्दिड. तचि़ ए लेपः, छेरि कुचेदि चे़द कुले शुड़्ज़ि शुचो़ग, हेन्ज़ेला, दग्थो दोचे लः। छाह् ल्हे ला दि–चे़दू सग् हेन्दु बोलीतु सग्सड़. चिग्पि ल्हेइ लेपोतो। दि छले में मोड़े ए खरे कम चेसः तोग, दि कमः लहेइ ए लेपोतो हेन्दिड., छेइ कोर कुन्ज़ोम खोग्पड. चिन्ची तोदआ।

द फोआ मुन्धो अंको बारे कोग। पट्थाक 6 रिड. ' खैपर खानी' ' नैनादेवता', ' शरशोक', दि श्रुमू बसणो मतलब चे़चि़ता सल्जि केश्रि तो। स्वड़.लड. खेप्पर खानी ए खेप्पर धारी जुट्ट ए सद्कुतु थल्ज़ि अपि, इ हिड़्म अई राडु. दु, ध्यमाः माता भक्पती। दि शागुण रिड. हिड़्मो मिन शरनः ल्हेप्चतो शत्ते, ध्वां ल्हे खेप्पर खानी राड॰ु, दोउ थल्ज़ि कुश्रि शु कुचे चेसअ। नैना देवता ञेणगारो सादु थल्ज़ि शोतो चेसअ अउंदिबि नील कण्ठ कुट्रः तई। शरशोक सड़. बोद भाषे शर – छोग, ध्यमाः ज़िरकेउ ध्कः शुबिमि छो़द तों । कुट्रिमि मतलब घरबारड. ज़िरकेउ आरिड़. छोगड़. युन तो, दोउ मिन्ज़े लः फरजुड. शुर केट्रअ।

चे़चि़ता छ़िगयुन देतु क्वच्चि ख्याल तचि़ लेपोतो, मल्तः ' अर्थो अनर्थ' शुचे इबिमि तो । छनः कुइनः तः ' ज़ोवःतगो बि ' जोबःतगो' चे़रिञि सेइतः मतलब एनो उई ए शुचे य्वा. । दि गप्पा पदथाक 43 रिड. योड़. जे़ खेकः त्रुग्रिम्बः रिड. चे़सि दु खमे ञेसा य्वा। अई 'श्र' ए 'श्र' उ विचड. फर्क ल्हज़ि जूंशि तो, छेरि कुचे ' श्र' उ संग हिन्दी रिड. तुई बेः ठाहरेक्श्रि तो। दि 'श्र सग् हुचि़ रिड. 'श्र' चे़चि़ मेफः। श्र कि ' ष्र चे़चि़ जूंशि शु। पोथड. लेचा़ बिन्दीतु, लः खास ख्याल तचि़ लेपः।

दग्थो मीतिड. ए हेन्दु लः इ बोली मञेचा़ उइ मीतिड. कुन्जोमु प्रसि शुड़.सि अपि जुस, ध्वां ल्हे चीः ए चे़चतइ दोउ हिन्दी रिड. 'ग्युर' साथे रण्ड्रि ल धुई धा जूंशि तो, गिबि ध्वां चेसअ।

चि ञेसि जुट गप्पा दि केन्दड., उइ केः नरे ञेचा़ शुञि! (जुट घीतकु लः चे़ चर्चि लेकि तोतोग, रूठे चेतिञि त कुन्जोमबि शोतो।)>

फुटनोटः–

1 पदथाक – पद = कागज़ + थाकः = पीठ
अतः पाद थाकः = पदथाक = पृष्ठ

2 छ़िगयुन – छ़िगों से बना युन = अक्षरों से बना प्रारम्भिक पिण्ड = वर्तनी/ हिज्जे।
ये दो शब्द मैनें अपनी सुविधा के लिए गढ़ लिए हैं।

–केन्दुए ।

–सतीश कुमार लोप्पा

सम्पादकीय

प्रस्तुत प्रति 'कुन्ज़ोम' के विकास का दूसरा चरण है। इसके प्रथम अंक की सराहना हुई है: सुधी पाठकों और विद्वानों, सब की ओर से। अपने मूल उद्‌देश्य को थोड़ा और मज़बूत बनाते हुए हमने कुछ नये क्षेत्रों में प्रवेश किया है और नये सहयोगियों को जोड़ा है। इसमें पाएंगे राज्य के कुछ वरिष्ठतम विद्वानों के हस्ताक्षर। कुछ होनहार युवा लेखकों–लेखिकाओं के भी हस्ताक्षर हैं। स्पिति के सहयोगियों का हार्दिक स्वागत है।

कुछ अधिक रूचि रखने वाले पाठकों ने कुन्ज़ोम का अर्थ जानना चाहा है। यह तो सभी को ज्ञात है कि कुन्ज़ोम लाहुल और स्पिति को जोड़ने वाली एक जोत का नाम है। इसका शब्दिक अर्थ है सर्व–मिलन, या ऐसी जगह जहां सभी मिलते हैं। वैसे सीमित पाठकों के हित के लिए सतीश जी ने इस अंक में दिये अपने पत्र में भी कुन्ज़ोम का अर्थ काफी स्पष्ट कर दिया है। कुछ पाठकों ने भाषा के आधार पर मानचित्र के लिए इच्छा व्यक्त की है। हम इस ओर प्रयत्न करेंगे। यह तो आप सब लोगों को ज्ञात हो गया होगा कि भारत सरकार देश की भाषाओं का फिर से शीघ्र ही सर्वेक्षण करवाने जा रही है, जैसे कि हम खबरों में पढ़ते है । भारतीय भाषाओं के इतिहास में यह घटना अविस्मरणीय होगी।

इस दौरान इस वर्ष वरिष्ठ विद्वान श्री के0 (कुशोग) अंगरूप लाहुली हमारे बीच नहीं रहे हैं। हम समझते हैं कि इस क्षति की भरपाई कर पाना असंभव है। उनकी भोटी व्याकरण विद्वता पूर्ण रचना थी। उनकी अधिकतर रचनाएं अनुवाद में है। कुन्ज़ोम' परिवार उनके शोक सन्तप्त परिवार से सहानुभूति व्यक्त करती है।

भारत सरकार ने सन् 2006 को सम्पूर्ण भारतवर्ष में तथागत गौतम बुद्ध के 2550 वीं महापरिनिर्वाण वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया। हिमाचल सरकार ने रामपुर, जिला शिमला, में अक्तूबर माह के 28 से 30 तक राज्य स्तर का इस समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर महामहिम दलाई लामा, प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री बीरभद्र सिंह तथा सांसद श्रीमति प्रतिभा सिंह उपस्थित थे। दलाई लामा ने रामपुर के पुनर्निर्मित बुद्ध मन्दिर का अनावरण किया तथा उपासकों को प्रवचन दिये। इन तीन दिनों में राज्य के भाषा विभाग की ओर से एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें प्रदेश के कुछ शीर्ष विद्वानों के अतिरिक्त देश के अन्य राज्यों से आए विद्वानों ने भी भाग लिया।

गौतम बुद्ध का दर्शन कहता है मनुष्य के जीवन में उत्पन्न होने वाले दुखों का मूल कारण है उसका जन्म। मृत्यु प्रत्येक प्राणी के लिए अवश्यंभावी है। जन्म मरण के इस क्रम का उच्छेदन ही उनके दर्शन का सार है।

जब तथागत को अपने परिनिर्वाण के नियत काल का ज्ञान हो गया था वो अपने अनुचरों को बुलाकर कहते है – " हमारे जाने पर आप लोग कुशल पूर्वक धर्म की मानना करें– यही परम लक्ष्य है।

" मैंने जो सूत्र नही लिखा है तथा विनय में जो नहीं लिखा है उसे मेरे मन के विरूद्ध जानना चाहिए।

" जिसमें विनय नहीं है वह न तो मेरा वचन है, और न ही धर्म"।

अतः किसी भी तथ्य की सच्चाई को जानने के लिए मूल स्त्रोत तक जाना आवश्यक है।

कुल्लू में प्रचलित विरशू गीत

—डा0 सूरत ठाकुर

कुल्लू जनपदा न वौरशे रै सभी महीनै न कोई न कोई जाच लागी दी होआ सा। इना जाचा न लोक नाटी पा सी होर गाणै गा सी। एन्धाऐ एक उच्छव होआ सा बशाखा महीने न। एई महीने ने विरशू री जाचा लागा सी । इन्हा जाचा न ग्रं री बेटड़ी नोउऐं नोउऐं पौटू लाईया देउऐ रै डेहरा आगे कट्ठ हो आ सी होर तौखे देउऐ री सौलह न विरशू रा नाच नौचा सी। संधै गाणे वी गा सी। इन्हा गीता वे पहलै आगे आगे नौचणू आली बजुर्ग बेटड़ी गा सी । तुई न बाद पीछे पीछे नौचणूं आली बेटड़ी भी तेई टप्पे वे दोहरा सी । किछ गीत ऐण्डे चाणहै सी –

हौथड़ू धोंधीऐ मुंडकू धौंधीए,
आरशी बिसरी बाई।
राज़ै री आरशी आऊंदै जाऊंदै,
आरशी बिसरी बाई।
लोहै री आरशी , आऊंदै जाऊंदै,
सोने री देनू बणाई।
काठै री आरशी आऊंदै जाऊंदै,
पीतलै री देनू बणाई।
चांदी री आरशी कुआ देणी गेच्छ़णै,
सोने री देनू बणाई।
देऊर भ्राऊज़ी पाणी वे जांदे,
आई ता गणगणाई।
हौथडू धौधीए मुंडकू धोंधीए,
अरशी बिसरी बाई।

दूजा गीत एन्ढै चाणहै सा –
ओ मेरी जिन्दड़ीऐ हो,
घोणी लाईऐ मौसरै री दाल।
ओ मेरी जिन्दड़ीऐ हो,
पाणी छ़ोड़ै बादली रा च़ार।
पातलें जें फुलकुऐ हो,
घौणी लाईए मौसरै री दाल।
औ मेरी जिन्दड़ीऐ हो,
सर भर मौसरै री दाल।
हांडकुऐ डिबकुऐ हो,
सर भर मौसरै री दाल।
ओ मेरी जिन्दड़ीऐ हो,
पाणी हिक्षा वाधणीऐ चार।

अनुवाद :

कुल्लू जनपद में वर्ष के सभी महीनों में कोई न कोई मेला लगा रहता है । इन महीनों में लोग नाटी नाचते हैं तथा गीत गाते हैं। ऐसा ही एक मेला लगता है बैशाख मास में। इस मेले को बिरशू कहा जाता है। इनमें गांव की महिलाएं नये नये पट्टू पहन कर देव मन्दिर में इकट्ठा होती हैं और वहां देव प्रांगण में बिरशू का नाच नाचती हैं। नाचते समय लोक गीत भी गाती हैं। इन गीतो की पंक्तियों को पहले आगे आगे नाचने वाली बुजुर्ग महिला गाती है। उसके पश्चात उनके पीछे नाचने वाली महिलाएं उन पंक्तियों को दोहराती हैं कुछ गीत इस प्रकार हैः–

हाथ धोते सिर धोते हुए,
दर्पण भूल गई बावड़ी के पास।
दर्पण राजा ने आते जाते दिया था,
उसे भूल गई बावड़ी के पास।
लोहे का दर्पण आते जाते,
सोने का बना दिया।
लकड़ी का दर्पण आते जाते,
पीतल का बना दिया।
चांदी का दर्पण कही फैंक दे,
सोने का बना दे।
देवर भाभी पानी भरने जाते हुए,
खूब बातें करते हैं।
हाथ धोते सिर धोते हुए,
दर्पण भूल गई बावड़ी के पास।

दूसरा गीत इस प्रकार हैः–

ओ मेरी जीवन संगिनी,
घनी लगाई है मसर की दाल।
ओ मेरी जीवन संगिनी,
अभी अभी बादल द्वारा बरसाया पानी,
इस दाल में चार गिलास डाल।
गेहूं की रोटी पतली पतली बना,
जिसे घनी मसर की दाल के साथ खिला।
ओ मेरी जीवन संगिनी,
धुली मिली मसर की दाल,
मिटटी की हंडियां में रख।
ओ मेरी जीवन संगिनी,
दाल में चार गिलास पानी डाल।

देऊ–धर्म

–ए ग0 आर0 ठाकुर

आसा रा धर्म सा देऊ–धर्म; न हिन्दू धर्म, न मुसलमान, न सिख, न इसाई, न बुद्ध न जैन। सीधा देऊ–धर्म; देऊ री धौरत, देवभूमि, देऊ–धर्म । आसे शिवजी वै भी मना सी, विष्णु राम, कृष्ण, नाग ऋषि, नारायण, जमलू , देवी फुंगणी, नौणी, भागासिद्ध, भोटंती, हिड़िमा सेभी रे मन्द्रान ज़ाआ सी, भेंट चढ़ाआ सी मौथा टेका सी । आसे देऊ संगै सीधी गला केरा सी । "दस मेरा की कसूर सा? तु कीबै नाराज हुआ।''श्सौ आसा रा कष्ट दूर केरा सा । ऐ देऊधर्म की सा? आसे रै देऊ जेबै बी आसा सोंगै गल केरा सी, ता सेभी न पहला फियाड़ा सा देऊआ रा '' हे मनुखो'' देऊ नी बोलदा '' हे मेरे भगतो, हे मेरे पुजारियो, हे मेरे लोको'' एऐ सा म्हारा देऊ धर्म, मनुख धर्म यानि मनुखता रा धर्म , मानवता रा धर्म , इन्सानियता रा धर्म। जौखे भी सारी मनुखता री भलाई रा विचार हो सो देऊ–धर्म, सो मनुखता रा धर्म। कोई भाई भतीजावाद नी, कोई जात पात नी, कोई ऊंच नीच नी। ए आसा वै भेद–भाव नी सखांदा, झीक–मीश, बैर द्वेष किछ नी। प्रेमा सोंगे रौहणा, शान्ति, सुख समृद्धि लोड़ी।

देऊ आगै बोला सी '' तुसा रा भारा आसै आगै, आसा रा भारा महाराजा आगै'' । एण्डी तरह देऊ आसा –वै सीधा प्रभू सोंगे , परमेशरा सोंगै मलाआ सा, कोई धड़ाबाजी, पार्टीबाजी, सम्प्रदाय या गठ –जोड़ा सोंगै नाईं। मानव समाजे री भलाई देऊ– धर्मा री सेभी – न बड़ी खूबी या गुण सा। पराणे जुगा–न ओर देऊ – देवी मनुखारी भलाई, मनुखा री सुख – सुविधा, शान्ति –चैन, तरक्की –उन्नति रे कोम केरे। मनुखता रे ज़ो दोखी –बैरी थी तिन्हारा नाश केरू, निणी ते दूत, भूत,राखस, प्रेता रातू थी या अत्याचारी राणे –ठाकुर।

पिछलै दिहाड़े किछ पढ़े – लिखे, जानकर, भेदीए आसा पांधै दोष लाऊ '' तुसैरे देऊ – देवी प्रगतिशील नी औथी। ते तुसारी तरक्की न रूकावट सी। ते बोलासी ज़ौखे सी तुसै तौखैए रौहा।'' ए गल सही ता सच नी आथी। जेबै बी देऊ – देवीए बोलू '' पराणी नीति छौड़नी नीं, नौईं नीति लाणी नी'', तेबै 'नीति' रा अर्थ ' नियति ' सा, 'मर्यादा' सा, मात्र परम्परा नाई आथी। नियति –न ईश्वर या प्रकृति रा विधान सा, मर्यादा –न न्यायपरक सदाचार सा। देऊ – देवीए कदी बी स्वार्था री गल नी केरी। सदा मनुखा री भलाई रा कोम केरू। भलाईऐ विकास सा, भलाईए प्रगति सा । ' पराणी नीति छौड़नी नी' रा भाव सा मानव भलाई होर तरक्की रा कोम नी छौड़ना, सो केरदै रौहणा। जो आदमी, जो समाज, जो संस्था बदलदै जमाने सौंगे नी बदलदा सो पीछे रौहा सा, विकास नी केरी सकदा। ' नौंई नीति नी लाणी ' रा अर्थ सा ' स्वार्था रा कोम नी केरना, बद– नीयती रा कोम नी केरना।' एंडे कोम केरनु आले मकाणे री तेंईऐ देऊ – देवी आपु आगे आए हुंदे। काहिका बै सलौखरा (सुरक्षा) रा फेरा मारदेआ तारापुरा रा कतरूसी (कृष्ण) नारायण अखीरा –न बोला सा '' ठारा ठाकर कुणीए मारै?'' लोका बोला सी '' नारायणे मारे, नारायणे मारे। '' नारायणे कीबै मारे? सो की माण्हु मार सा? नी औथी। पर कई बार पाप ता ज़ुल्म मारने री तेईए पापी ता ज़ालिम वी मारना पोआ सा। जेबै देऊ – देवते समाज –विरोधी तत्व वै मारने री तेंईए तैयार रौहा सी तेबै ते विकास ता तरक्की विरोधी किहां हुए। देऊ सदाऐं बोला सा '' झूठ हांऊ बोलदा नी, पापा –न हाऊं डुबदा नी। मतलब झूठ बोलना सेभी – न बड़ा पाप सा। देऊ – देवीए सदा नीति री मर्यादा री गल केरी हुंदी। जेंडै म्हारै वेंद सदके सच सी तेंडेए म्हारी देऊ – वाणी भी सा – सो पहलै बी सच थी, एवें बी सच सा, एणू आलै सोमा– न बी सच रौहणा।

स्पिति घाटी का पारम्परिक उत्सव

लदारचा

–नीरजा ठाकुर

स्पिति का मौसम अति तीक्ष्ण है। यहां के मौसम को हम दो भागों में बांट सकते हैं। बहुत ठंड वाले नौ महीने और बाकि तीन महीने जुलाई, अगस्त व सितम्बर कम ठण्ड वाले। इन तीन महीनों में आंशिक रूप से गर्मी होती है। स्पिति घाटी को श्शीत मरूस्थल के नाम से भी जाना जाता है। यहां वारिश ना के बराबर होती है। वार्षिक वर्षा लगभग 20 मिलीमीटर तथा साल में छः महीने वर्फ पड़ी रहती है। इसलिए साल में एक ही फसल यहां उगाई जाती है। जिसकी बिजाई अप्रैल–मई व कटाई सितम्बर की जाती है। आलू, मटर और जौ यहां की मुख्य फसल है। यहां दिसम्बर, जनवरी व फरवरी में कड़ाके की ठण्ड पड़ती है। इन महीनों में तापमान –40 डिग्री सैंटीग्रेट तक चला जाता है। इस दौरान स्पिति की पिन घाटी छः महीनों के लिए स्पिति के अन्य गांवों से कट जाती है।

गर्मियों में यानि जुलाई, अगस्त के महीनों में पिन वैली कई प्रकार के फूलों से झूम उठती है। पिन वैली के अन्दर पिन वैली नैशनल पार्क है जो कि आईवैक्स (टंगरोल स्थानीय भाषा में) व स्नो लेपर्डज के लिए मशहूर है। कुंगरी गोम्पा के कारण प्रसिद्ध कुंगरी गांव भी पिन वैली में ही स्थित है। यहां जुलाई महीनें में एक मेला लगता है।

स्पिति घाटी के सभी लोग बौद्ध धर्म के मानने वाले हैं। ये लोग अतिथि सत्कार दिल खोल कर करते है। जब कोई इन लोंगों के घर आता है तो पहले चाय देते हैं, इसके पश्चात छाजा नमकीन चाय पिलाते हैं। स्पिति घाटी राज्य स्तरीय लदारचा मेले के लिए भी जानी जाती है। यह जनजातिय लदारचा मेला हर वर्ष अगस्त मास में उपमण्डल मुख्यालय काजा में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। यह पारम्पारिक लदारचा मेला जहां हमे अतीत मे भारत तिब्बत व्यापार की याद दिलाता है वहां यह मेला हमारी पुरानी संस्कृति की झलक भी पैदा करता है। इस व्यापारिक मेले में प्रेदश के विभिन्न जिलों से आए सांस्कृतिक दल भाग लेते हैं।

आरम्भ में यह एक व्यापारिक केन्द्र था। यह मेला हिन्दूस्तान और तिब्बत सीमा से सटे लदारचा मैदान में लगता था। इस मैदान में हिन्दुस्तान व तिब्बत के व्यापारी अपना अपना सामान लेकर आते थे। चीजों के लेन–देन में पैसों की कोई भूमिका नहीं थी। बल्कि एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु का आदान–प्रदान किया जाता था। हिन्दूस्तान के व्यापारी अपने साथ चाय, नमक, गुड़, चावल इत्यादि उत्पाद लाते थे और तिब्बत के व्यापारी पशमीना, ऊन, याक, भेड़, बकरी और मक्खन घी आदि लेकर आते थे। और इन सभी आवश्यक चीजों का आदान–प्रदान किया जाता था। अब यह व्यापारिक मेला सांस्कृतिक मेले में परिवर्तित हो गया है। अब इस मेले में आधुनिक देशी विदेशी सामान का व्यापार होता है तथा यहां पर छुमुर्ती घोड़े की प्रदर्शनी भी लगाई जाती है।

वर्तमान में तिब्बत के साथ शिपकिला (किन्नौर) से व्यापार होता हैं। तथा अभी हाल ही में सिक्किम का नाथुला भी चीन के साथ व्यापार के लिए खोल दिया गया है। ये सभी दर्रे भारत की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए अत्यावश्यक है। उसी तरह यह लदारचा मेला भी पड़ोसी देशों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

पिन घाटी से एक ऐतिहासिक दस्तावेज़

–छेवांग दोर्जे

अनुवादः द्वीपों में सर्वोत्तम जम्बूद्वीप दक्षिण में स्थित है। हिमवत में सद्धर्भ का विस्तार है। ग्रीवा के सदृश हिमवान पर्वत ती–से (कैलाश) में अर्हतों का निवास है।

विशेषतः जैसे कि गंगा का अवतरण हो रहा है, उसके बांईं पक्ष में राजधानी डंखर–चे तथा उसमें राजप्रासाद अवस्थित है। महान धर्मराज दे–छोग नमझल का मुकुट युक्त शिर ऊंचा रहे तथा उनका राज्य विस्तृत हो। उनके महान का–लोन नम–खा झलछ़न की आयु दीर्घ हो।

प्रगतिशील गुरू की दीर्घ आयु, दयालु माता–पिता के दया का भार चुकाने तथा छः प्रकार की प्राणियों की भलाई के हेतु हमारी प्रार्थना है । विशेषतः जैसे कि गंगा का अवतरण हो रहा है, उसके बांऐ पार्श्व में राजधानी डंखर–चे़ तथा उसमें राजप्रासाद हैं । महान धर्मभीरु राजा दे–छोग नमझाल का मुकुट–युक्त शिर उच्च रहे और उनका राज्य विस्तृत हो। उनके महान का–लोन नमखा झलछ़न की आयु दीर्घ हो । अहो!

विशाल पिन का क्षेत्र सर्व सम्पन्न है जिसमें स्थित च़गनम का गांव पृथ्वी पर उभार से उकेरा हुआ (चित्र) के समान है। पुर्नजन्मों में संग्रहीत कर्मो के फलस्वरूप जिसको यह मानव जन्म उपलब्ध हुआ है, ऐसे दानपति नमखा ड.ोरे अत्यन्त दानशील और व्यवहार कुशल हैं। विशेष रूप से माता जी जो इहलोक त्याग चुकी है, उनकी मृत्यु के उपरान्त उनकी यात्रा सुगम हो ऐसा चाहते हुए उत्तम सूत्र ज़–म–तोग (करण्ड व्यूह) की रचना की गई है।

....

उक्त दस्तावेज़ यह दर्शाता है कि राजा दे–छोग नमझल, सुपुत्र सिंगे नमझल, के समय स्पिति लद्दाख के अधीन था और लद्दाख का अधिकारी स्पिति में डंखर में रहता था। स्पिति के इतिहास की दृष्टि से यह दस्तावेज़ अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

स्पिति का संक्षिप्त इतिहास

–डा0 नोरबू ज्ञलछन

सारांशः सर्वप्रथम मैं शाक्यपुत्र भगवान बुद्ध तथा भारत व तिब्बत के विद्वानों को प्रार्थना करता हूं।

दुद–जोम के इतिहास ग्रन्थ में ऐसा बताया गया है कि आरम्भ में तिब्बत जल से भरा था। श्ऐसे ही स्पिति भी सागर में विलीन था। फिर क्रमशः पानी घटता गया और स्पिति में धरती बन गया। यहां के ऊंचे क्षेत्रों को देखने से यह ज्ञात हो जाता है।

आरम्भ मैं स्पिति की जनसंख्या बहुत कम थी। धीरे–धीरे यहां 250 सिपाही तथा छः सौ ग्रह हो गये। इस प्रकार 850 घर–परिवार हो गये। खुनू (किन्नौर) पड़ोसी इलाका था। तीन पैरों का शत्रु ,अथवा तथाकथित चोगला तीन गांव का शत्रु, लरी, तफो और पो तीन, माना जाता है। यह न हो कर बलती, कुल्लू और पंजाब आदि की ओर से शत्रु और लुटेरे आते रहे है। ऐसी परम्परा है।

उस समय स्पिति के लोग क्या करते थे। लोग ऊंची जगह पर चले जाते थे। और अपने आप को बचा लेते थे। उस समय लामाओं, कारीगरों व अमचियों को पैसा नहीं दिया जाता था वल्कि वस्तुऐं भेंट में दी जातीं थी। दूध अन्न आदि का भी मूल्य नहीं लिया जाता था। लोग घर में ताला नहीं लगाते थे फिर भी चोरी नहीं होती थी। अन्न कपड़ा सब अपना अपना पैदा करते थे।

स्पिति का प्राचीन इतिहास तिब्बत के इतिहास से काफी जुड़ी प्रतीत होती है। यह दे–चुग–गोन के समय से आरम्भ होता है तथा लंग दरमा, नवीं सदी के आरम्भ तक सतत चलता रहा। लंग दरमा ने अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित परंपराओं को समाप्त कर दिया। बाद में किद–दे ञिमा–गोन, एक राजकुमार, ङारी, यानी पश्चिमी तिब्बत, की ओर आया और उसने अपना राज्य स्थापित किया। उसने राज्य अपने तीन पुत्रों में बांट दिया । जंखर और स्पिति उनके सबसे छोटे राजकुमार दे–चुग–गोन को दिया। वही स्पिति के प्रथम राजा माना जा सकता है। इस काल में रिंछेन ज़ांगपो जैसे बडे विद्वान हुए। उन्होंने स्पिति में ताबो व ल्ह–लुंग का मन्दिर बनवाया। इसके अतिरिक्त उन्होंने संस्कृत से भोटी में अनेकों ग्रन्थों का अनुवाद करवाया। इसके पश्चात स्पिति लद्दाख के अधीन आ गया। कुछ इलाका बुशहर के पास भी रहा।

मूल लेख नीचे दी जा रही है।

༄༅། །སྤྱི་ཏིའི་རྒྱལ་རབས་མདོར་བསྡུས།

༄༅། །ཐབས་མཁས་ཐུགས་རྗེས་པདྨ་ཀཱའི་རིགས་སུ་འཁྲུངས་༎

གཞན་གྱི་མི་ཐུབ་བདུད་ཀྱི་དཔུང་འཇོམས་པ།

གསེར་གྱི་ལྷུན་པོ་ལྟ་བུར་རྗེད་པའི་སྐུ།

པདྨ་ཀཱའི་རྒྱལ་པོ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

སྣ་ཚོགས་དངོས་པོའི་གཟིགས་ལུགས་རྣམ་པར་བཀྲ།

རྟོག་དཔྱོད་རྣམས་འབྱེད་གསོག་ཐབས་ཆེས་ཡངས་པོར།

ལེགས་བཤད་ནོར་བུའི་འབྱུང་གནས་རྒྱ་མཚོ་ཆེ།

འཕགས་བོད་མཁས་གྲུབ་ལོ་པཎ་རྣམས་ལ་འདུད།།

ཞེས་མཆོད་པར་བརྗོད་པའི་སྔོན་བསུས་ཏེ། བརྗོད་བྱ་དངོས་གླེང་བར་བྱ་བ་དེ་ལ་ཡང་ སྤྱི་ཏི་ནི་ ཇི་ལྟར་བོད་ཡུལ་ཡོངས་རྫོགས་གནའ་རབས་ཀྱི་ཡིག་ཆ་དང་ བདུད་འཇོམས་ཆོས་འབྱུང་སོགས་སུ་འཁོད་གསལ་ལྟར་དང་པོ་མཚོ་རུ་ཡོད་པ་ལས། སྤྱི་ལོ་མ་བྱུང་བའི་ལོ་ཆིག་སྟོང་ལྷག་ཙམ་ལ་མཚོ་བྲི་ནས་བོད་ཡུལ་ཆགས་པ་བཞིན། སྤྱི་ཏི་དང་པོ་མཚོ་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ལོ་འབུམ་ཕྲག་སྔོན་ལ་མཚོ་རུ་ཡོད་པ་ནི་དེང་སང་ཡང་སྤྱི་ཏི་སྣེང་རྒྱུད་སོགས་ཀྱི་ས་གཞིར་བལྟས་ན་གསལ་པོ་ཤེས་ཐུབ། སྤྱི་ཏི་ནང་སྔ་མོ་ནས་མི་འཁོར་ཆུང་ཆུང་ཡིན་པ་དང་ དེ་ཡང་ ཁ་རྒྱུན་ལ་ དམག་ཁྱེད་དང་གསུམ་བརྒྱ་ (ཉི་བརྒྱ་ལྔ་བཅུ་) དང་གཟའ་དུག་བརྒྱ་ཞེས་གྲོང་འཁོར་བསྡོམ་བརྒྱད་བརྒྱ་ལྔ་བཅུ་ལས་མེད་པ་ཁྲིམ་མཆེ་ཡུལ་གྲུ་ཁྲུ་ནུ་དང་ ཀྲང་གསུམ་དཀྲའམ་ཅོག་ལ་ཡུལ་གསུམ་གྱི་དཀྲ་ཟེར་བའི་ལ་རི་ཧ་ཋོ་དང་སྤྱི་གསུམ་དེ་མིན་ཐལ་ཏེ་ ཀུ་ལུ་ པཎ་ཇབ་སོགས་ནས་དཀྲའམ་འཚེམ་"ཀྲུན་ཡང་ཡང་ཡོང་གི་ཡོད་པ་བཤད་སྲོལ་འདུག དེ་

ནཱ་བྱུའི་ཉེན་ཁ་ལ་རི་མཐོ་སར་མི་བཏང་ནས་མཚན་གཅིག་ལ་སྤྱི་ཏི་ཡོངས་རྫོགས་ལ་ཉེན་"བརྡ་བཏང་གི་ཡོད་པ་དང་ཉེན་བརྡ་སྒྲིང་མ་ཐག་མི་རྣམས་རི་མཐོ་སར་གབ་ཐབ་སོགས་བྱེད་ཀྱི་ཡོད་པ་ནི་ ད་ལྟ་ཡང་རི་ཁ་ཤས་ཀྱི་མིང་ལ་ གབ་ས་ ཞེས་འབོད་ཀྱི་འདུག། སྔར་མི་རྣམས་རང་འདོད་དང་འགྲན་སེམས་མེད་པ་ ཡ་རབས་ཉམས་ཆུང་བདག་བཅག་གི་སྟོན་པ་སྔ་ཀྱུའི་རྒྱལ་པོའི་གསུངས་དྲི་མེད་ལྟར་སྤྱོད་བཞིན་གནས་ཡོད་པའི་དུས་སུ་ ཟླ་མ་དང་ ཨེམ་ཆི་ ལག་ཤེས་བཟོ་པ་ཀུན་ལ་རང་མོས་ཀྱི་ཡོན་ཕུལ་བ་མ་གཏོགས་རིན་བཅད་སྤྲོལ་མེད་པ་ནང་བཞིན་ ཟས་ཀྱི་རིགས་ འོ་མ་དར་བ་ ཆང་ ལ་ཕུག འབྲུ་དང་གྲོ་སྣན་སོགས་ལ་རིན་འཕེན་སྤྲོལ་མེད་ ཁང་པའི་སྒོ་ཀུན་ལའང་ལྡེ་མིག་གམ་ཀ་ལེག་རྒྱབ་སྤྲོལ་མེད་ ཀུན་མ་ཀུ་བ་དང་རྫུན་གཏོང་བ་ལ་ང་ཙང་ངོ་ཚ་བྱེད་ བཟའ་བཏུང་དང་གྱོན་ཆས"ཚང་མ"རང་རང་སོ་སོའི་ཁང་པར་བཟོ་སྤྲོལ་བཟང་པོ་དང་ ཡུལ་ཕན་རྒྱུན་དང་སོ་སོའི་ཐོན་རྫས་ཀུན་བརྗེ་ལེན་བྱེད་སྤྲོལ་ཡོད་པ་ཡིན།།

སྤྱི་ཏི་རྒྱལ་རབས་ལ་ རྒྱལ་པོ་དང་པོ་ལྡེ་བཙུག་མགོན་ནི་བོད་ཀྱི་ཆོས་རྒྱལ་མེས་དབོན་རྣམས་གསུམ་ལས་བྱུང་བའི་དར་མ་འུ་དུམ་བཙན་ནམ་གླང་དར་མས་(༡༠༣ནས་༡༩༡) རྒྱལ་སྲིད་བཟུང་ནས་ཡབ་མེས་ཀུན་གྱིས་གཏོད་པའི་སྲོལ་བཟང་ཀུན་བསྣུབས་ དེ་ནས་བཟུང་བོད་སྤྱི་ལ་དབང་བའི་རྒྱལ་པོ་ཞིག་མ་བྱུང་བར་བོད་གསིལ་བུར་སོང་ གླང་དར་གྱི་སྲས་འོད་སྲུང་དེ་ཡི་སྲས་ལྡེ་དཔལ་འཁོར་བཙན་ དེ་ཡི་སྲས་སྐྱིད་ལྡེ་ཉི་མ་མགོན་ཀུན་གྱིས་བོད་ནང་རྒྱལ་སྲིད་བཟུང་བར་འབད་བརྩོན་ཆད་མེད་བྱས་ཀྱང་བོད་མི་དམངས་གྱིན་ལངས་བྱུང་བའི་རྐྱེན་གྱིས་རྒྱལ་སྲིད་བཟུང་མ་ཐུབ་ སྤྱི་ལོ་ ༧༡༠ ཙམ་ནས་སྐྱིད་ལྡེ་ཉི་མ་མགོན་བོད་ནང་བཞུགས་མ་བདེ་བར་སྟོད་མངའ་རིས་སུ་བྲོས་འཛེབས་དགོས་བྱུང་མངའ་རིས་ཀྱི་ཆོས་བློན་ཞང་པ་ཚབ་ལྡེ་དང་ཙོ་རེ་ལེགས་སྐྱ་གཉིས་ཀྱིས་རྒྱལ་པོ་ལ་དགའ་བསུ་ཞུས་ མངའ་རིས་ཀྱི་རྒྱལ་པོར་མངའ་གསོལ་ ཁོང་རང་གཉིས་ཀྱི་སྲས་མོ་རེ་རེ་བཙུན་མོར་ཕུལ་ རིམ་པས་མངའ་རིས་སྐོར་གསུམ་གྱི་རྒྱལ་པོར་གྱུར་ སྲས་གསུམ་བཙམས་ ཆེ་བ་དཔལ་གྱི་མགོན་ བར་པ་བཀྲིས་མགོན་དང་ཆུང་བ་ལྡེ་བཙུག་མགོན་

ཡིན་ སྐྱིད་ལྡེ་ཉི་མ་མགོན་མ་གྲོངས་གོང་ཁོང་རང་གིས་སྲས་གསུམ་ལ་རྒྱལ་སྲིད་སོ་སོར་དགོས་ ཆེ་བ་དཔལ་གྱི་མགོན་ལ་མང་ཡུལ་ལ་དྭགས་ བར་པ་བཀྲིས་མགོན་ལ་གུ་གེ་དང་པུ་རངས་ ཆུང་བ་ལྡེ་བཙུག་མགོན་ལ་ཟངས་དཀར་དང་སྤྱི་ཏི་ཐོབ་ནས་སྲིད་དབང་བསྒྱུར་ དུས་དེར་སྟོད་གྱི་མགོན་གསུམ་ཞེས་ཡོངས་སུ་གྲགས་ བོད་ཀྱི་ཆོས་རྒྱལ་ཀུན་གྱི་གདུང་བརྒྱུད་ཡིན་པས་མི་དམངས་ཀྱིས་གུས་བཀུར་ཆེན་པོ་ཞུས་བདུག ལྡེ་བཙུག་མགོན་ནི་སྤྱི་ཏི་རྒྱལ་པོ་ཐོག་མ་ཡིན་པ་འདི་ནས་གོ་ཐུབ། དེ་ནས་ལ་དྭགས་ཀྱི་རྒྱལ་རབས་ཉེར་གཉིས་པ་རྒྱལ་པོ་འཇམ་དབྱངས་རྣམ་རྒྱལ་(༡༥༦༠ནས་༡༥༩༠) གྱི་སྲས་ཡོངས་སུ་གྲགས་པའི་ཆོས་རྒྱལ་སེང་གེ་རྣམ་རྒྱལ་ (༡༥༩༠ནས་༡༦༣༠) མཆོག་ལ་རིགས་སྲས་གསུམ་འཁྲུངས་པར་ཆེ་བ་བདེ་ལྡན་རྣམ་རྒྱལ་ བར་པ་ཨིནྡྲ་བོ་དྷི་རྣམ་རྒྱལ་ ཆུང་བ་བདེ་མཆོག་རྣམ་རྒྱལ་བཅས་ལས་ བདེ་ལྡན་རྣམ་རྒྱལ་ནི་བརྒྱ་ཕྲག་བཅུ་དྲུག་པའི་མཇུག་གམ་བཅུ་བདུན་པའི་འགོ་ཟུག་ཙམ་ལ་འཁྲུངས་སྲས་ཐ་ཆུང་བདེ་མཆོག་རྣམ་རྒྱལ་ལ་སྤྱི་ཏི་གསོལ་བསྐལ་དུ་གནང་བ་ཡིན་ བརྒྱ་ཕྲག་བཅུ་བདུན་པའི་སྐབས་སྤྱི་ཏི་ཕྱོགས་སུ་ལ་དྭགས་པའི་ནུས་ཤུགས་ཏེ་ཆེ་བྱུང་ཡོད་པ་ནི་ཏ་པོ་དགོན་གྱི་འབྲོམ་སྟོན་ལྷ་ཁང་དུ་གསལ་བར་བསྟན་ཡོད་ཞེས་ཏ་པོ་དགོན་པའི་བྱུང་རབས་ནང་གསལ་བ་དེ་ཏ་ལམ་རྒྱལ་པོ་སེང་གེ་རྣམ་རྒྱལ་གྱི་སྲས་བདེ་མཆོག་རྣམ་རྒྱལ་གྱི་སྐབས་མིན་ནམ་བསམ།

ཕལ་ཆེར་བརྒྱ་ཕྲག་བདུན་པ་ཙམ་ནས་སྤྱི་ཏི་ནང་ནང་པའི་ཆོས་དང་རིག་གཞུང་སོགས་ཐོག་མར་དར་ཁྱབ་བྱུང་ནས་དུས་རབས་བཅུ་པའི་ནང་ལོ་ཙ་བ་རིན་ཆེན་བཟང་པོས་ (༩༥༨ནས་༡༠༥༥) སྤྱིར་ནང་པའི་བསྟན་པ་སྤྱི་དང་ བྱེ་བྲག་ཏུ་སྨན་གཞུང་སློབ་དཔོན་དཔའ་བོས་ (Bhagvatta) མཛད་པའི་ཡན་ལག་བརྒྱད་པའི་སྙིང་པོ་བསྡུས་པ་ སློབ་དཔོན་ཟླ་བ་མངོན་དགའི་ (Chandrananda) ཡན་ལག་བརྒྱད་པའི་སྙིང་པོ་བསྡུས་པའི་ཚིག་དོན་རྒྱས་པར་འགྲེལ་བ་ཟླ་བའི་འོད་ཟེར་སོགས་དཔེ་ཆ་མང་པོ་བསྒྱུར་ དེ་མིན་སྨན་གྱི་སློབ་མ་མང་པོ་ཞིག་བྱུང་ དེ་རྣམས་ལས་མྱང་འདས་སེང་གེ་སྒྲ་ ཤཱཀྱ་ཁྲི་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་གནས་ འོག་སྨན་ཨ་ནེ་དང་མང་མོ་སྨན་བཙུན་རྣམས་སྨན་གྱི་སློབ་མ་རྩེ་ཕུད་ལྟ་བུར་

བྱུང་། ལོ་ཆེན་གྱིས་ལྷ་བླ་མ་ཡེ་ཤེས་འོད་དང་ལྷ་ཆེན་པོ་ལྷ་ལྡེས་གསོལ་བ་བཏབས་པ་བཞིན་" གུ་གེའི་མཐོ་ལྡིང་
སྤུ་རངས་ཀྱི་ཁ་ཆར་དང་ མང་ཡུལ་གྱི་ཉར་མ་གཙོས་ ཤྲཱི་དེ་ཏ་པོ་དགོན་དང་ལྷ་ལུང་གི་གསེར་ཁང་ལ་སོགས་པ་
བཅུག་ལག་ཁང་ ཆོས་སྐོར་ལྷ་ཁང་མཆོད་རྟེན་མང་པོ་བཞེངས་པ་སོགས་མདོར་ན་ལོ་ཙཱ་བ་རིན་ཆེན་བཟང་པོས་
གངས་ལྗོངས་འདིར་བཟོ་རིག་པ་དང་གསོ་བ་རིག་པ་སོགས་རིག་གནས་ཆེ་ཆུང་བཅུ་པོ་དར་སྤེལ་མཛད་ ལོ་ཙཱ་བ་ལ་
སློབ་མ་ཀ་བཞི་གདུང་བརྒྱུད་སོགས་དངོས་སློབ་དང་ཡང་སློབ་མང་དུ་བྱུང་ དེ་དག་གིས་ཀྱང་ལྷ་ཁང་དང་མཆོད་རྟེན་
མང་པོ་བཞེངས་ ལོ་ཙཱ་བ་འདི་ཉིད་ལྗོངས་འདིར་སངས་རྒྱས་བསྟན་པའི་གཞི་འམ་རྩ་བ་འཛུགས་མཁན་དང་རིག་
གཞུང་སྤྱི་ལ་མཁན་ཤེས་རིག་གི་མེས་པོ་དམ་པ་ཉག་གཅིག་ཡིན་པར་ཁས་ལེན་གཙང་མ་བྱས་དང་བྱེད་བཞིན་ཡིན་ནོ།

བློ་དམན་བདག་འདྲར་རྩོམ་པའི་ལྡོན་ཐང་བྲལ། དཔེ་གཞུང་རྒྱ་མཚོར་བསྟུས་ནས་ཕྱོགས་བསྒྲིགས་མཛད།
ནོར་འཁྲུལ་འགལ་བ་ཁྲུངས་བསྐྱལ་མ་མཆིས་ན། བློ་ལྡན་སྐྱེས་བུའི་ཚོགས་ཀྱིས་བཟོད་པར་མཛོད།།།

རྩོམ་སྒྲིག་པ" ཤྲཱི་དེ་སྨན་པ་ནོར་བུ་རྒྱལ་མཚན་

का – वाड.

–लामा छेरिंग वांग्याल गांव सारांग

एक

हो, ड.जा मीग स्रिंग छड.मा।
लोवडा खांग ला क्योद दड.।।
हो छुड. – छुड. जोन – नु दुस ला ।
चम – थुब योनतन जंग गोए।।
योनतन योद पे मी ला।
चिवा मड.पो योड.चेन।।
योनतन चिग ला मवद।
ड.ोनमे लुगसोल मा फड.।।
यब –युम फ मा ञीस के।
दोड. ला तोस दे मजुग।।
चम थुब चोन डुस चोस ते।
रंग – गो रड. –गीस ज़द गोए।।
दव सड. लेलो चोस ना।
तिड. ला झोदपा योड. चेन।
मजुग लोवडा ला क्योद।
योनतन रीगनेस जंगसल।

दो

कवा ज़ंगपो नोरदन मिलु जुड.ला लेब सोड.।
खड.न छींग ड.न मेदपा जबतोग जु–रू जलेन।
गनी ग़रू डोग क्यांग डे. –जा मनी मिजल।
ड.जा गरू डाग क्यांग डे.जा मनी माजल।
चंगमे – चंगसेब देरू फयुल यीद ला खोरजुड.।
छे– रोग सेम गी ञेमो याड. यीद ला खोर जुड.।
जा –छंग थुड.दोद मेदपा फामा ञीड. ने डन जुड.।
ञामो कुन दड. जलवे ञेनडुड. यीदला खोर जुंग।
तिंग –तिंग देमो खाला फोढांग सोमा जांग योद।
यानी लामा टुल्कु छड.मा ञमदु –ञमदु जुग योद।।
देसड. ड.जे युलला फवा ज़ंगपो यी नग।
नामला तीन गी सेवनाला दांग लामो सुड.कद।
पलदन चावे लामा गरजा युल ला फेव योद।

फमा बुचा छड.मा कवांग जुरू लेव सोड.।
वदड. वेहु चोगसे ड.जा मीग स्रींड. छड.मा।
मदद खंगपर मदद लोबडा खांगला क्योद सल।
चपीग चोनडुए चोना यरज्ञस चीला मीछा।
छडड. ञीसका सलखन गरजा मिमांग छड.मा।
ज़वो यतो कुनगी जबशी याड. –याड. जुगोए।
वामो सेमचन चोगसे चमथुब चंगपो झुर गोए।।
ज़मो करपो गोनखन गरजा मीमांग छाड.मा।
ज़चे – थुड. चे चीग ला समलो याड. मताड.।
हा –हा ही –ही चोसदे टवर ञम दु जुग गोए।
यर की मेतोग चोगसे जलगुन जुम –जुम ज़द गोए।
रंग गी फमा कुन ला जव तोग ञीड. नेजु गोए।
ललुड. गल ते क्योददे ञेज़ा मिमांग छाड.मा।
शा– छंग चम थुब मदोन मदोन मीमाड. छड.मा।
सेमचन नमखा छांगमे सोग कुन चमजिग क्योवेन।
हचांग छुगपो योद ना, जिन वा याड. –याड. सल गोए।
ड.ा जा दीजुग काछोए गरजा जुड. ला साल सोंग।

तीन

गरजा खडोही लिंड.ला कवा ज़ांगपो यी नग।
कवा ज़ांगपो यिन दे फोंटांग सोमा जंग योद।।
मीमाड. चीगडील चोसदे दुसखोर वाड.छेन जुस्पेन।
दी जुग तेनडेल ज्ञाला देसांग ड.ोन ला मजुंग।।
गरजा मी – मांग छाड.मेस जुवाजुएन चीग दड.।
गरजा युलछुड. दीरू यीदजिन नोरबू फेब जुंग।।
ताना दिन दा तावू ,लामा टुलफा फेब योद।
मेतोग छोएना ताबू , लामा टुलफा फेब योद।।
देलेस गवा छेनमो, सेमला ञीनछ़न डन जुंग।
मयोड. योड.चे चनला दी जुग तेनडेल योड. गोए।।
दुसखोर वाड. ला क्योद दे, ञेजा मीमाड. छड.मा।
गरजा युल छुड. दी रू, याड.–याड. जलवे मोन लम।।

जुले!

कुछ कहावतें– स्तोद से।

– सोनम आंगदुई

བལ་ལུ་བསད་དེ་མི་ཁེ། བཀོལ་ན་ཁེ།

बलु को मारने से लाभ नहीं, उससे काम लेना लाभदायक है। बलु एक काल्पनिक वन मानुष माना जाता है जो लगभग एक हाथ ऊंचा होता है व निरन्तर काम करता रहता है।

ཁལ་ར་བརྒྱ་ལ་མ་མོ་གཅིག་གིས་ལམ་འགགས།

एक भेड़ सौ मेढों का रास्ता रोक सकती है।

ཁ་བ་སྒོ་རུ་བབས་ན་དེ་ཚོ་ཁྱིམ་པ་འཛུང་།

दरवाजे पर बर्फ इकट्ठा हो जाए तो यह घर वाले के लिए शर्म की बात है।

ཕྱུག་པོའི་རྨོས་གླང་ལ་སོར་པོའི་སྒོ་ཁྱི་ལ་མ་སྐྱེ་ཤོག།

अमीर के घर में खेत जोतने वाला बैल और गरीब के घर में दरवाजे का पहरेदार कुत्ता–इन दोनों जातियों में मुझे जन्म न मिले, यह मेरी इच्छा है। दोनो अवस्थाएं कष्टदायक हैं।

ཕྱེས་སྟོད་གླན་པ་ཡིན། ཟས་རྫུང་ཚོད་མ་ཡིན།

आधा कपड़ा पैबन्द जैसा है और आधा भोजन जैसे भाजी।

རྟ་རྒོད་མ་ཕྱིས་མར་ར་ཡུལ་མི་གཙུགས། ཡ་རེ་མ་རང་ས་
མ་ཡིན་ས་མར་ར་ཡུལ་མི་གཞིག།

घोड़ी गांव को बसाती है और विधवा गांव को बदनाम करती है। घोड़े से लोग ढुलाई करके कमाते हैं। घोड़ा कई बच्चो को जन्म देती है जिनके आगे और कई सन्तान होता है।

ཁུར་ཐག་ཆད་ར་ཁུ་རུ་ཡང་ངས།

अगर बोझ की रस्सी टूट जाए तो बोझ हल्का हो जाता है।

གངས་རེ་དཀར་པོ་ལ་སོལ་ལ་རེ་མ་ཐོག་པ།

सफेद ग्लेशियर के बर्फ की तरह, जिस पर कालिख का दाग तक नहीं छू सका है।

ཞིང་ས་ནང་ལ། བུ་མོ་ཕྱི་ལ།

ज़मीन की उपज घर के भीतर को और बेटी को घर से बाहर– ऐसी परम्परा है।

ཕ་ཙནྡན་དཀར་པོ་བུ་ཆུ་ཤིང་།
पिता चन्दन के समान अच्छा, परन्तु बेटा नदी की लकड़ी के समान किसी काम का नहीं है।

ཡོར་བདག་འཐད་ན་རན་ཐག་མདོ་ལ།
यदि मालिक प्रसन्न हो जाए तो पनचक्की निकट में तैयार हो जाता है।

ཤེས་ལ་ཡོད་ན་ཕྱིར་ལ་བཏོང་།
बात जानते हो तो उसको बाहर निकालो और समय पर दूसरों को बताओ।

ཀུར་འབྲུམ་མང་པོ་སྨིན་པའི་ལོ་ལ། བྱ་ངན་ནེ་ཁ་ལ་
འགམ་རྡོ་འཐོན།
जिस वर्ष अनार की फसल अच्छी हुई, दुष्ट पक्षी के मुंह में फोड़ा निकल आया।

ཁྱིའི་ངོ་རྔ་མ་ལ། མིའི་ངོ་མདོང་ལ།
कुत्ते की पहचान उसकी पूंछ से तथा आदमी की पहचान उसके चेहरे से होती है।

བག་མའི་ངུ་རྫུན།
बहू का रोना झूठा होता है।

རྒན་པ་མ་ཤེས་ཡུལ་ལ་མཐའ་ཤིག།
कोई बूढ़ा ठीक से अपनी उम्र नहीं बिताएगा तो देश में उसकी बदनामी होती है।

རྐུན་མ་ཡང་ལོག་ཤེས་ཟུངས། ནད་པ་ཅན་ལོག་གིས་ཟུངས།
चोर दुबारा चोरी करने आएगा तो पकड़ा जाता है। बीमार आदमी परहेज़ न करने से उसे दुबारा बीमारी होती है।

ཡུན་རིང་ན་བྱ་སྒྲོག་ཤེས་སྡོང་པོ་བཅད།
अधिक लम्बा समय हो जाने पर पंख से भी तना काटा जा सकता है।

གཉིད་ལོག་པ་པ་ལ་བསྐལ་བ་བ་མེད།
सोते रहने वाला भाग्यहीन होता है।

བསོད་ནམས་དབང་འདུས།
ཀོ་ལོང་།
सोनम आंग दुई, कोलांग

གར་ཞུའི་སྐད་ནང་ཁ་དཔེ་དང་བཤད་པ་ཁག་ཅིག

བཏྭ་རསྐྱི་ལྭལ།

(i)

གཅིད་ལོག་པ་ལ་སྐ་ལ་(སྐལ་བ་)མེད། (जिद् लोग् प ल क-ल मेद्)= जो सोवे वह खोव।

ཏིང་བཞུགས་པ་ལ་སྐ་ལ་(སྐལ་བ་)མེད།(तिङ् जुग् प ल क-ल मेद्)=जो अन्त में आवे वह खोवे।

ལག་པ་རིང་པོ། (लग्-प रिङ्-पो)= चोरी की आदत।

ཚ་བཙོང་བ་ལ་སོང་བ། (छ़ चो़ङ् व ल सोङ् व)= रूठ कर जाना।

ཚ་ཀྱུང་ང་ལ་སོང་བ། (छ़ ञङ् ङ ल सोङ् व)= रूठ कर जाना।

སྣ་སྦྲོས་པ། (न बोय् प)= रूठना/ नाराज होना।

ཕྱི་སིང་སིང་ནང་ཧོང་ཧོང་། (फ्यी सिङ् सिङ् नङ् होङ् होङ्)= ऊँची दुकान फीकी पकवान।

དཔྲལ་བ་ལ་ཆུ་སེར་མེད་མཁན། (ट्र व ल छु सेर मेद् खन्)= निर्लज्ज।

གདོང་ལ་ཆུ་སེར་མེད་མཁན། (दोङ् ल छु सेर मेद् खन्)= निर्लज्ज।

རྣ་མཆོག་ཤོར་མཁན། (नम् छोग् शोर् खन्)= ऊँचा सुनने वाला।

གོང་ཁལ། (गोङ् खल)= अतिरिक्त भार।

ཁ་ལ་མ་ཤོང་བའི་ཁམ་བུ་བཅུག་པ། (ख ल म शोङ् वहि खम्बु चुग प)= लालची।

རང་མགོ་ཐོན་པ། (रङ् गो थोन प)= स्वावलम्बी।

སྦུད་པ་འབུར་བ། (बुद् प बुर व)= झूठ बोलना।

ཁོག་པ་ན་མེ་འབར་བ། (खोग् प न मे बर व)= मन ही मन में गुस्सा होना।

ཕག་ཟས་ཟ་བ། (फग् ज़े ज़ व)= छुपकर खाना।

ས་དང་རྡོ་བ་བསྲེས་པ། (स दङ् दो व स्रेद् प)= परिश्रम करना।

རྡོ་ལྡོག་ས་ལྡོག (दो लोग् स लोग्)= परिश्रम करना/उलट-प्रलट देना।

མཚན་ཉིན་བསྲེས་པ། (छ़न जिन् स्रेद् प)= दिन-रात एक करना/परिश्रम करना।

ཁ་ལ་མེ་འབར་བ། (ख ल मे बर व)= वाचाल/अधिक बोलने वाला।

མགོ་ནས་མཇུག་ཚུགས་པ(བར)། (गो ने जुग छुग् प)= सिर से पाँव तक/शुरु से अन्त तक।

ཛམ་ཛམ་ཛིག་ཛིག (डम् डम् ज़िग ज़िग)= बन्दर घुड़की।

ཚང་ནད་ཚང་གིས་གསོ། (छङ् नद् छङ् गी सोय्)= काँटे से काँटा निकालना।

སྐུད་པ་བཅད་པ། (कुद्-प चद् प)= तलाक/सम्बन्ध विच्छेद।

ཛོམས་ཤེས་མེད་མཁན། (डोम् शे मेद् खन)= तृप्त न होना।

མཚན་ཉིན་མ་ལྷས་ནས་ལས་ཀ་བྱེད་པ། (छ़न-ञिन म तइ ने ले क जेद् प)= कठोर परिश्रम करना।

ཁྱི་ཅིག་མི་ཅིག་མི་མཐོང་ས། (ख्यी चिग् मी चिग् मि थोङ् स)= सुनसान जगह।

ཁུ་རྒྱུ་མེད་ལ་ཨ་ཡོ་ཆེན་པོ། (खुर् ग्यु मेद् ल अ-यो छेन पो)= दिखावा करना।

ཆུ་མིག་རྡོལ་བ། (छु मिग् दोल व)= पेशाब छूट जाना।

ཉི་མ་ལ་གཉིད་ཟླ་དཀར་ལ་ཞིག (ञि-म ल ञिद् द-गर ल शिग)= बे मौका काम करना।

ས་གཅིག་གནམ་གཅིག (स चिग् नम् चिग्)= एक मात्र सहारा।

སྙིང་ནོར། (ञिङ् नोर्)= अत्यन्त प्रिय।

ཐོད་པ་སྟོང་པ། (थोद् प तोङ् प)= अभागा।

དཔྲལ་བ་ལ་མེད། (ट्र व ल मेद)= भाग्य में न होना।

ཙོ(ཇོ་བོ)ལ་མ་ཐུག་རལ་ལ་ཐུག (जो ल म थुग् रल ल थुग्)= खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे।

ཐོག་ལ་མིག་འཁུར་མཁན། (थोग् ल मिग् खुर् खन)= असावधान।

ཀུན་མའི་མིག་ཐོག་ལ། (कुन मयी मिग् थोग् ल)= चोर का लक्षण।

ཕར་ལོག་ཚུར་ལོག (फर लोग् छुर लोग्)= आर-पार/अपनी बात पर अडिग न रहना।

བྱེ་མ་བཙིར་ན་སྣུམ་མི་ཐོན། (ब्ये म चि़र न नुमं मि थोन)= विवेकहीन होकर कार्य करना/व्यर्थ काम करने से कोई लाभ नहीं।

མི་བསམ་དགུ་བསམ། (मि सम गु सम)= उट-पटाँग सोचना/ अनहोनी की आशंका।

མི་དྲན་དགུ་དྲན། (मि ड्रन गु ड्रन)= उल्टा-सीधा याद आना/ अनहोनी की आशंका।

མི་བྱེད་དགུ་བྱེད། (मि जेद् गु जेद्)= उल्टा-सीधा काम करना।

མི་ཤེས་དགུ་ཤེས། (मि शे गु शे)= न जानते हुए भी जानकार बनना।

མིག་ལོག་བལྟས་པ། (मिग लोग् तइ प)= आँखें दिखाना।

ཡོད་དགུ་མེད་དགུ (योद् गु मेद् गु)= माल असवाव/सर्वस्व।

ཚེ་གཅིག་ལུས་གཅིག (छे चिग् लुइ चिग्)= इसी जन्म में।

ལྟོ་ཅེ་འབོད་པ། (व-चे बोद् प)= भूख लगना।

མི་ཐོབ་དེ་མིང་མ་འབྱོར། (मि थोब् ते मिङ् म जोर्)= साधन मिलने पर भी उपयोग नहीं आना।

ཀང་པ་མི་འཚུགས་མཁན། (कङ् प मि छुग खन)= एक जगह स्थिर नहीं रहने वाला।

ལག་པ་མི་འཚུགས་མཁན། (लग प मि छुग खन)= छेड़छाड़ करते रहने वाला।

ཅི་རི་ནང་དར། (चि़रि नङ् दर)= बाल की खाल उतारना।

ཁ་ངན་ཚིག་ངན། (ख ङन छि़ग् ङन)= बुरा-भला/खरी-खोटी सुनाना।

ཁ་ཤོར་བ། (ख शोर व)= वचन देना।

བྲང་བརྡུངས་པ། (ड्रङ् दुङ् व)= छाती पीटना।

ཐལ་བ་བགམ། (थल ब गम)= धूल फाँकना।

མགོ་བརྡུངས་པ། (गो दुङ् प)= सिर पीटना।

ཅོ་ཅོ་ལྟོགས་ན་བྲ་ཕྱེ་འགོམས།(चो चो तोग् न ड्रफे गोम्)= भूख लगने पर रूखा-सूखा भी अच्छा लगना।

ཟླ་མ་སོང་ནས་ཆོས་ཞུ་དྲན།(ला मा सोङ् ने छोए जु ड्रन)= समय बीत जाने पर काम याद आना।

རང་སྐྱོན་རང་གིས་མི་མཐོང་།(रङ् क्योन रङ् गी मि थोङ्)=अपना दोष अपने को दिखाई नहींदेना।

རྣ་མཆོག་ཊོང་ཊོང་། (नम् छोग् टङ् टङ्)= कान खड़े रखना।

མཛུ་གུ་ལྔ་ལ་ཡང་ཆེ་ཆུང་ཡོད་། (जु गु ङल यङ् छे-छुङ् योङ्)= पाँचों अंगुली समान न होना।

ཐད་ན་ལྷ་དང་མ་ཐད་ན་འདྲེ།(थद् न ल्ह म थद् न ड्रे)= खुश होने पर मित्रवत्, न खुश होने पर शत्रुवत्।

སམ་(རྩམ་)པ་འཚལ་ན་ཆུ་འཚོལ། ཆུ་འཚལ་ན་རུམ་ཁང་འཚོལ།

(सम् प छ़ल न छु चो़ल, छु छ़ल न रुम खङ् चो़ल।)

सत्तु अटके तो पानी ढूँढों और पानी अटके तो श्मशान।

མི་བཟང་ལ་མགོ་ཆེན་པོ། མི་ངན་ལ་རྐང་པ་ཆེན་པོ།

(मी जङ् ल गो छेन पो, मी ङन ल कङ् प छेन पो।)

भद्र पुरुष का सिर और दुष्ट का पैर बडा।

སེར་རི་བ་ལ་སེར་ཚང་། གར་རི་བ་ལ་གར་ཚང་།

(सेरी ब ल सेर छङ्, गरी ब ल गर छङ्।)

पंक्ति वालों को पंक्ति का और नाचने वाले को नाचने का मद्य।

མགོ་ལ་བཟུམ་(བཟུང་)ན་སྐྲ་སྤྱ་ར་གང་། མཇུག་ལ་བཟུམ་(བཟུང་)ན་ཕིན་སྤྱ་ར་གང་།

(गो ल ज़ुम न ट्र प र गङ्, ज़ुग ल ज़ुम न फेन प र गङ्।)

सिर से पकडे तो मुट्ठी भर बाल, पूंछ से पकडे तो मुट्ठी भर पाद वायु।

ཁྱི་སྐྱག་བཀོལ་ན་དྲི་ངན་ཆེ། མི་ངན་བཀོལ་ན་གཏམ་ངན་ཆེ།

(ख्यी-क्यग् कोल् न डी ङन् छे, मी-ङन् कोल् न तम-ङन् छे।)

कुत्ते की विष्ठा को छेडे तो दुर्गन्ध ज्यादा, दुष्ट आदमी को छेडे तो बदनामी ज्यादा।

དཀའ་ལས་ཀྱི་ལས་ཀ་ཞིག་མ་བྱས་ན། ཞིམ་པོའི་ཟས་ཤིག་ག་ན་ཐོབ།

(क-ले क्यी ले-क जिग् म चे न, जिम-पो हि ज़े जिग् ग-न थोब्।)

विना परिश्रम स्वादिष्ट भोजन कहाँ से पावे।

བཀོལ་མི་ཤེས་ཡོན་ཏན་ཕན་མེད་ཡིན། བཏབ་མི་ཤེས་ས་ཞིང་སྟོང་པ་ཡིན།

(कोल मि-शे योन-तन फन-मेद् यिन, तब् मि-शे स-जिङ् तोङ्-प यिन्।)

विना प्रयोग किए विद्या निष्फल है, खेत जोतना न आए तो बंजर है।

སྐྱིད་ན་ནམ་མཁའི་བྱ་ཡང་འཁོར། སྡུག་ན་རང་གི་བུ་ཡང་ཤོར།

(क्यिद् न नम् खहि ज यङ् खोर, दुग् न रङ् गी बु यङ् शोर्।)

सुख में आकाश में पंछी भी मंडराए, दुःख में अपना बेटा भी भागे।

ཁ་ནས་ཐོན་པའི་སྐད་ཆ་དེ། ལོག་དེ་བསྡུས་པའི་ཐབས་མེད།

(ख-ने थोन् पहि कद्-छ दे, लोग् ते दुइ पहि थब् मेद्।)

मुँह से निकली बात को पुनः लौटाने का कोई उपाय नहीं।

ཁ་ཡ་རབས། སྤྱོད་པ་མ་རབས།

(ख य रब्, चोद्-प म रब।)

वाणी सज्जनता का और आचरण दुष्टता का।

ལོག་པ་ནས་མེ་འབར་ཡང་། ཁ་ནས་དུ་བ་མི་ཐོན།

(खोग्-प ने मे बर यङ् ख ने दु-अ मि थोन्।)

अन्तःकरण में आग धधकने पर भी मुंह से धुआं भी न निकले।

དགུན་ཀ་བ་གླང་མ་གསོས་ན། དབྱར་ཀ་མར་རྡོག་རྡོག་ག་ན་ཡོང་།

(गुन-क ब-लङ् म-सो न, यर-क मर दोग्-दोग् ग न योङ्।)

सर्दियों में गाय का पालन पोषण नहीं करे तो गर्मियों में खाने को घी का पिण्ड कैसे मिले।

བུང་(བོང་)བུ་རང་གིས་བཞོན་ནས་བུང་(བོང་)བུ་བཙལ་བ།

(बुङ्-बु रङ् ग्यी ज्योन ने, बुङ्-बु चल-ब।)

गधे पर सवार होकर गधे को ढूँढना।

ཡ་རབས་མ་རབས་སྤྱོད་པས་ཤེས།

(य-रब म-रब चोद्-पे शे।)

सज्जनता और दुर्जनता आचरण से पहचाना जाता है।

རྟའི་ཁ་སྲབ་ཀྱིས་སྒྱུར། མིའི་ཁ་གཏམ་གྱིས་སྒྱུར།

(त हि ख स्रब् क्यी ग्युर, मी-हि ख तम् ग्यी ग्युर।)

घोडे का मुख लगाम से और आदमी का बातों से मोडा जाता है।

ཆང་འཐུང་ཤེས་ན་སྨན་ཡིན། འཐུང་མ་ཤེས་ན་དུག་ཡིན།

(छङ् थुङ् शे न मन् यिन्, थुङ् म-शे न दुग् यिन्)

मद्य पीना जाने तो दवा नहीं तो विष।

གཙང་པོ་དཀྲུག་ནས་མར་མི་ཐོན། རྡོའི་གཡམ་པ་བཙིར་ནས་སྣུམ་མི་ཐོན།

(चङ् पो टुग् ने मर मि थोन, दोहि यम प चिर ने नुम मि थोन्।)

नदी को मथने से घी नहीं निकलता है और पत्थर के पट्टी को निचोडने से तेल।

འཇུ་ན་སྨན་དང་། མ་འཇུ་ན་དུག

(जुइ न मन्, म जुइ न दुग्।)

पचे तो दवा नहीं तो विष।

ལུང་པ་རེ་རེ་ལ་སྐད་རེ་རེ། བླ་མ་རེ་རེ་ལ་ཆོས་ལུགས་རེ་རེ།

(लुङ् प रे रे ल कद् रे रे, ला मा रे रे ल छोइ लुग् रे रे।)

एक एक गांव का एक एक बोली और एक एक गुरु का एक एक सम्प्रदाय।

ཟེར་བྱེད་བུ་མོ་ལ་ཟེར། ཕོག་བྱེད་མནའ་མ་ལ་ཕོག

(ज़ेर चे बु मो ल ज़ेर, फोग् चे न-म ल फोग्।)

कहा पुत्री के लिए और चोट लगे बहु को।

ཡོད་རྒྱུ་མེད་མཁན་ལ་གདང་རྒྱུ་མང་པོ།

(योद् ग्यु मेद् खन ल तङ् ग्यु मङ् पो।)

कुछ भी पास नहीं होने पर भी लाख झंझट।

མཛོ་རྒན་ཤུགས་མེད་ཀྱང་ལམ་རྒྱུས་ཤེས།

(ज़ो गन शुग् मेद क्यङ् लम ग्यु शे।)

वृद्ध बैल (ज़ो) निर्बल होने पर भी रास्ते का ज्ञाता होता है।

མི་ཚེ་རི་ལ་བསྐྱལ། རི་དྭགས་ངོ་མི་ཤེས།

(मि छे़ रि ल क्यल्, रि-दग् ङो मि शे।)

जीवन जंगल में व्यतीत किया और जंगली जानवरों से परिचय नहीं।

ཨ་མའི་བུ་ལ་སྙིང་རུས་ཡོད་ན། ལས་ཀ་མི་སྒྲུབ་པའི་ཚེར་ཀ་མེད།

(अ मइ बु ल ञिङ् रु योद् न, ले क मि ड्रुब् पहि छे़र क मेद्।)

मां की बेटे में लग्न हो तो कार्य सिद्धि में कोई चिन्ता नहीं।

*

कारेर सरि बि थुई

–लाल चन्द ढिस्सा

"एक नगरि दुई यार थिउरे कंहि। तेन्दुई साहथे–साहथे–ए बेशते थिउरे कंहि। अपु बिचा नाति बि बोलोंदे थिउरे कंहि। तेना बिचा एकिर नांऊं पंडित गड.नंद त अइकिर नांऊं केबु चिनाल थिऊं कंहि। पंडित गड.नन्द केबु चिनालेस कका बोलता थिया कंहि। एक धियाई नगरिर ग्राख कुलह बणाइबे गे कंहि। कमेर ठार रज्जी दूरि थी कंहिं। बदे मांहुऐं दिहेर एह्राई पोटि छऊरी थी कंहि। पंडित गड.नन्देस कंई एक् कारा थिया कंहि। तेनी सह् कारा बि साहथे निऊरा थिया कंहि। पंडित गंगनन्दओ केबु बि साहथे–साहथे चलोरे थिंए कंहि। बतह् जंई पंडित गड.नन्द केबुसारी बोलतस कंहि–"यार कगा! कार थोदु थाओ।" केबु झत्ता मुई पुछतस कंहि– " छरि–ए–मया, कारेबि छि शुजि तोह्?" पंडित गड.नन्द बोलतस कंहि–"मशुद–ए कगा कार्रो थकह्रि शोदह छुसि तोद्ह।"

यह एक सच्ची कहानी है। जिसमें लाहौल के एक गांव में दो दोस्त पं0 गंगानन्द और केबू चिनाल (दोनों काल्पनिक नाम) रहते थे। जैसे कि लाहौल में आम होता है, कि गांव वाले कुह्ल को ठीक करने जाते हैं और दिन का भोजन अपने साथ ले जाते है। पंडित जी के पास एक गधा था और एक दिन इसी प्रकार काम पर जाते हुए पंडित अपने गधे को भी साथ ले जाता है। रास्ते में वह केबू को कहता है – बड़े भाई गधे को दूना मत। केबू हैरान होकर पूछता है – क्यों भाई गधे को क्या हुआ है? इस पर गंगानन्द जवाब देता है कुछ नहीं बड़े भाई, गधे के पीठ पर मेरे दिन का भोजन बांधा हुआ है। यह लघु कथा गधे से भी घटिया शीर्षक से कई स्थानों से प्रकाशित हो चुकी है।

चिनल भाशा के कुछ शब्द जो अब लगभग प्रयुक्त नहीं होते और हिन्दी अर्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
धजा	ध्वजा	झवांरी	झुककर सलाम
हिऊंवारा	बर्फवारी	नवांहरी	नाश्ता (सुबह)
घाड़ा घोमबा	भारी बर्फ के बीच चलना	झिंटा	ऊन पिंजाई में
पेतेर थिल	थाली का तला (तुलना)		प्रयुक्त डम्बल आकार का
बिलुआ	नीम्बू		लकड़ी का औज़ार
ब्रिम घुटवा	बहुत लोंगों का आना (भीड़)	चऊंई	लकड़ी का बर्तन
ग्रड.स	जमें बर्फ का तोदा		(तरल पदार्थ रखने का)
झारखंडी	मिर्च	अनवांई	लकड़ी का बर्तन
इरा	लकड़ी का जाला जो चुहले		(टब की तरह प्रयुक्त)
	के उपर लटकता था और	धुत्धुकार	बहुत अधिक
	लकड़िया आदि सुखाने के	टड.स	दो खाने की अलमारी
	काम आता था।		(निचले खाने में खाने–पीने
चोई	चाडू (महिला, पुरूष)		की वस्तुएं रखी जाती थी)
थिड.मा	विशेष कढ़ाई कार्य	थलज़	याक परिवार के जानवरों
	जो महिला चोडू पर होता था।		के पूंछ के बालों से बनी घरलोई

घर की तलाशी		रस्सी	
र् वाचा	जानवरों के चमड़े से बनी रस्सी	ञेतरी	मथने के लिए प्रयुक्त रस्सी
दड.ह	रस्सियों के सहारे बना	पनमुख	बड़ी मशाल
	लकड़ी का कपड़े के लिए	मिहज्ड.	कनपटी
हैंगर			
थोबि	याक परिवार के जानवरों	तिपच़ा	सिर का उपर का भाग
	वी ऊन से बना कम्बल	घिड़ड़ि	हलक
हिऊंपंत	बर्फ का देश	खोमोल	सिर का पिछला भाग
उरी गुरी	अत्याधिक बर्फवारी	छराणा	मकान के बाहर का कमरा
बाई	बावड़ी, चांदी का बना		(एक तरफ खुला)
	आभूषण (महिला का)	बरोर	मुख्य शहतीर
रऊं	खाने पीने की वस्तुएं	मोर्	दरवाजा, खिड़की का चौखट
	मापने का लकड़ी का पात्र	फारू	खत्म न होना (अच्छा भाग्य)
फाचे़टु	बकरी या याक आदि की	पपाह्	अमाशय (मांसाहारी)
	ऊन से बना थैला।	पोट	अमाशय (शाकाहारी)
कनपा	कान के नीचे (गले) का दर्द	हंजीरेर हट्‌टा	कन्धे की हड्डी
प्रवाहद	प्रभात के समय की राग	प्रुल	उंगलियों के जोड़
ञऊपे	बाराती (लड़की की तरफ	त्रिग	नितम्ब का जोड़
	के रिश्तेदार	नल्ली	कांसे की कटोरी
शुनोर	बड़ा घड़ा	खुड़कियालु	जोड़दार लकड़ी का बक्सा>

शुद्धियां

कुंज़ोम के प्रथम अंक में कुछ अशुद्धियां रह गईं थीं, कृपया उनका सुधार निम्न प्रकार से पढा जाए।

1. पृष्ठ 36 के अन्त में 'शेष पृष्ठ 38' पर पढा जाए।

2. पृष्ठ 38 पर अन्तिम पैराग्राफ के शीर्षक 'सारांश'' के ऊपर 'शेष पृष्ठ 36 से' पढा जाए ।

3. पृष्ठ 47 के सबसे ऊपर बांईं कोने पर 'स्तोद' पढा जाए।

विषेखि नगरू

—नील चन्द

केमेत छः बि बरि अग्रोंई स्वांगले ठोड. नगरि श्री भणकुरो टिटिर घरां नगरू जाऊरा। सः नगरू पञ्ज भया बिचा बद्दें अरि केन्डा थिऊरा। बद्दे अरि जेठा तुलु,, तेसारि केन्डा तुलसि, तेसारि केन्डा कुतु, तेसारि केन्डा धोनु, बद्दे अंरि केन्डा नगरू थिऊरा।

नगरू जई छई माह पिछोंई तेसेर याह मरि गेउरी। घरां गरीबी थिऊरी । दुध—दोहितुर नोस्तोरू। याह—बाह मरि गेऊरी। पईदी नगरू अंऊ कका तुलसि साथे बेठोरा। चुचु पींदू मठु, तेस खि पता कि या मुइसा— जिन्दि अस। भुखुर अइबे साथे तेनि अंऊ ककेर याका सप्पी किया। तेनि चेतोरू भोलू कि सः ता तेसेर याह भोली। तदीकु रात तेसेर रोल्बे साथे निथोरि। घड़ि कका संगिर चुचु पीबा, घड़ि रोल्बा। रोज सेऐ कम भुईला किया। कका संगिस बि तेस भठूरे तेने घाटे दाअ अई गेई कि तेनि अंऊ चुचु जेखें केखें तेस पिलइबा शुरू करि बिदा। मालिकेर खेल तुलसिर चुचु दुध के—जी करबे ठारोंऊ।

तेनि नगरूस चुचु ढीलाअ किया। लगातार चुचु पीबे साथे तुलसिर चुचु बेस्सि करला किया। थेसुता तेन्दुई भया बिचा तेने घटि दाह—शाह बेस्सि की, चेडछुति न कि ते—द्विई भाई द्वि झंई भोंदि। तेन्दुई याह —कोंए बर्षा गे। नगरूई कका संगिस याह बोलबा शुरू करि बिदा। मरते चेकुर नगरूई कका संगिस याह बोलोस नगरूई त्राई— चौउ बरि कका संगिर दुध पिउरू।

मान्वाई अन्दुर मोढ़े — मोढ़े कम भूरे अस्ति। त्राई बि, चौबि बरिएर जोलांऊ मठे जाऊरे अस्ति। छः बि बरिएर मर्देस् मठे जाऊरे अस्ति। पर मर्देस दुध निस्बा ओ, अंऊ केन्डा भाई संगिस दुध पिलईबा शायद मान्वाई पहला कम भोला। इता थिया नगरूर मठेरेकु गप्पा।

सेम्बा योफि करी पिचोंई नगरू तेने घाटे विद्वान भूरा जेसेर बराबरी अज स्वांगले अन्दुर कईए कीरं नोटति। अज तेसेर उम्र केमेत छः बि बरि भुईनई। तेसेर मौके पढाई- लिखाईर कोई कम नोस्ता । पर अनपढ़ बेशिबि तेनी तेने घाटे भविष्यवाणी किऊरी अस् जैने अज छेच्चें भुइबे लगोरे अस्ति्।

नगरूर भविष्यवाणीः— तेनि केमेत त्राई — चौ बि बरि अग्रोंई बोलोरू अस्।

1. स्वांग्ले अरि लद्दू भाल आलु। मतलब लच्छ भरा बेंदेरे।
2. लच्छा पिंचोई घोआ— कारे माल आलु।
3. घोआ— कारे , खच्चरें पिचोंई गड्डी मोटरे निस्तेरे।
4. किठी बत भोलि किठे मांऊ भोंदरे।
5. स्वांगलेर जन पंजाबा आपरेला, थेसु, स्वांगलेर मांऊ अन्न खईबे ज्योगा भोला।
6. सोनेर भावे थिन्दु हथोलु।
7. रन्नी राज आला।
8. सिंह राज आजा।
9. कालीर बाणां भोला।
10. मांऊ लोहेर कमाई खाला।
11. पुड़ि अन्न बिकणोलु, तां सोचे घोर कलजुग आ।
12. गायेर चरान् नछुटे ब्रह्मणेर, कदुर नुएं तां सोचे घोर कलजुग आ।
13. गाइस ज्योगू धरति द्रुब नुंए, तेसेर साफअ गा मनुकेस् दुध देलि।

बें लिखोरे जेतेक्बि गप्पे अस्ति, अजकूं सरि त्राई– चौ बि बरि अग्रोंइ कु भोंदि। तेस् मौक्के हिन्दुस्तान अन्दर अंग्रेज के रायस्ती थी। खास करि स्वांग्लेर मांऊ खि पता थिया कि हिन्दुस्तान बि कदि आ आज़ाद भोला।

ना सड़के थिए, न गड्डी–मोटरे थिए ना रेडियो थी। अज त्राई –चौऊ बि बीरपि चोंई अपसीं हेरतेसु कि विशेखि नगरूर भविष्यवाणी चोप्पा भुईबे लगोरे अस्ति।

बें लिखोरे गप्पे के मतलब इने भो।

1 स्वांगले अरि लद्दू माल् आलु। मतलब लच्छ भरा बेंदेरे। अथ अग्रोई स्वांग्लेअरि लच्छा माल (राशन) अईदू थिंऊ।

2 लच्छा पिचोंई घोआ– कारे माल (राशन) अंईदू थिंऊ।

3 घोआ, कारे, खच्चरें पिछोंई गड्डी मोटरा (माल) राशन अइबे ठारोंऊ।

4 किठि बत् भोलि, किठे मंऊ भोंदरे।

अर्थः– अज हेरतेसु सड़के तारकोल तड़तेस। तारकोल तड़ते किठे मांऊ भोंदेस्। तेड.गेके एतेक् तारकोल तड़बा कईए नोट्तेस्।

5 स्वागलेर जन पंजाबा आपरेला , तां धले स्वांग्लेर मांऊ अन्न खइबे ज्योगे भोन्दरे।

अर्थः– अंग्रोई स्वांग्ले अन्दर दरगा् गरीबी थीऊरी। जैसे सड़का निथा, गड्डी मोटरे चले। स्वांग्लेर मांऊके भईरेर् मांऊ साथे मेला –मिलाप भुआ, अड्डु– कूंठेर पता लगा। अड्डु –कूंठ बई फसल त्यार की। फसल गड्डी मोटरा छई कुएर बति पंजाबेर इलाके आपरां। स्वांग्लेर मांऊ ढबुए जोरफि करबे ठारोए। हेबे तुप्सीं सोंचि करे कि स्वांगलेर जन पंजाब आपरबे मतलब खि भो?

6 सोनेर भावे थिन्दु हथोलु।

अर्थः– नगरूर मौक्के थिन्दुर मुल खि भोलु, अज हेरे थिन्दुर कीमुत कोठे आपरि गेऊरू अस्।

7 रन्नी राज आला।

अर्थः– तेस् मौक्के केस पता थिया कि हिन्दुस्तान आजाद बि भोला। हिन्दुस्तान आजाद बि भुंआ। तुप्सु बद्दें पता अस् कि हिन्दुस्ताना रन्नी राज बि आ। श्री मति इन्दिरा गांधी राज कमाता।

8 सिंह राज आला।

अर्थः– सिंह राज बि आ। अज् हिन्दुस्तानेर् राज श्री मनमोहन सिंहेर हथा अस्। इसेर इलावा तुप्सीं हेरतेसु हिन्दुस्ताना, खास करि उतुर भारता सिंह (सिक्ख) धर्मेर केतेक परचार भुइबे लगोरा अस्।

9 कालीर बाणा भोला।

अर्थः– माता पार्वती पासे हारोई पिचोंई जैस रूपा मान्वां छैन करबे उपरोइति सः तुप्सु पता अस । अजकूं जोलाऊ मठे तेन्ने घाटे बाणा लइबे लगोरे अस्ति। इ गप्पा तुप्सी शुड.मी करि मुकोरे भोले।

10 मांऊ लोहेर कमाई खाला।

अर्थः– नगरूर मौक्के केसेर लेंटर छावरे घरे थिए, केसेर गड्डी मोटेर थिए? अज तुप्सी हेरतेसु, कोठे लोहेर् कम नूंदस् अरबों खरबों ढबुआं लोहे खर्च भूइबे लगोरा अस्। लक्खों– करोड़ों मांऊ के रोटी–पाणी लोहेर ढलते चलोरि अस्।

11 पुडि अन्न बिकणोलु, तां सोचे घोर कलजुग आ।

अर्थः– अग्रोंई स्वांग्लेर मांऊ बरि दिएर अन्न– फक्का गेशेरि थेदें थिए। जेखें गड्‌डी मोटरे नि थे, स्वांगलेर मांऊ छई माहर रोए अन्न कट्‌ठा करबे ठारोए। खि पता धारा पाए ड्‌वारा निथा ता स्वांगलेर मांऊ अन्नेर भण्डार करबा ब्याड़ा करतेरआ। इसेर इलाबा तुप्सी हेरतेसु कि अज स्वांग्लेसरि भईरे कू– कुड़ोत पुड़ि अन्न लें देस। टी0 वी0 तुप्सीं हेरतेसु। एक–एक टंगेर के तोक सौदा बिकवोईबे पाठि बोलवे लगोरे भोदस्।

12 गाइरे चरान न छुटे , ब्रह्मणेर कदुर नुए। तां सोचे घोर कलजुग आ।

अर्थः– अग्रोई माल मवेशिरे (गा ओ होरके पशुरू) खुल्ला चरान थिया। अज् मांऊ बोंकफि करबे साथे छेत्र – ढांग मुकलागेउरे अस्ति। गाईरे चरान–ए छुटोरा नी। ब्रह्मणेर कदुर नुएं। इसड. मूं शुड.सि अइबे निछे। भई इसेर मतलब खि भो आ?

13 गाइस ज्योगू धरति द्रुव नुएं, तेसेर साफाअ गा मनुकेस दुध देलि।

अर्थः– मनुक बेस्सि् करबे साथे बण– बुट मुकला किए। बण– बुट मुक्बे साथे सनदा पांई बि भुई बे निछे। सनदा – पाई नुअता धाअ– पच्छ कोदोशि भोला? धाअ– पच्छ, नुंआता गा खि खालि? गाई खिंए नखांऊता, दुध केतोक् झंई देलि। बोलबे मतलब गा जेतेक् झंई धाअ खालि तेतेके दुध बि देलि।

इसेर इलावा बि होरके मस्त गप्पे अस्ति। जेने बद्दे गप्पे लिखबा हे बें कट्‌ठण अस्। तां फिरि केखेआं मौक्का हतोअता हंऊ जरूर लिखु। इने बद्दे गप्पे भी मंऊ मोढ़ा बाह श्री भिमुस कईलि शुणोरे भोंदि। केमां बोलुं ता श्री नगरूर पोत्रा

गणोणा। बड़ा दुखेर गप्पा कि एतेक मोढोई गप्पे अज चेकुर कोटठे लिखोरे नींदि। अज एतेक बरि पिंछोई अप्सीं हेरतेसु कि श्री नगरूर बोलीरे गप्पे चोप्पा भुईबे लगोरे अस्ति। तेसेर पाठि होरके गप्पे हे बे अईक फेरे। पढ़बे दिक्कुत आई या कोठेआ गलत लिखोरू अस्ता हंऊ तुप्सु कंई ली माफी मंगतस् । सुखसांत।

विद्वान नागरू

लगभग 120 वर्ष पूर्व ठोलोंग गांव में श्री मणकु और टिटि देवी के घर बालक नागरू का जन्म हुआ था। वह अपने पांच भाइयों में से सबसे छोटा था। सबसे ज्येश्ठ तुलु, उससे कनिष्ठ तुलसी, उससे कनिष्ठ कुतु, उससे कनिश्ठ धोनु और सबसे कनिष्ठ नागरू था।

नागरू के जन्म के छः माह पश्चात उसके मां का देहावसान हो गया। घर में गरीबी थी। दूध–दही का नाम न था। माता – पिता का देहान्त हो चुका था। रात को वह अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री तुलसी के साथ सोये। दूध पीता बच्चा उसे क्या मालूम कि उसकी मां जीवित है या मृत। भूख लगने पर उसने अपने भाई के छाती को स्पर्श किया। उसने यही सोचा होगा कि वह तो उसकी मां होगी। वह रात उसकी रोते – रोते बीती। कभी भाई के स्तनों का पान और कभी रोना। प्रतिदिन यह कम चलता रहा। भाई श्री तुलसी को भी उस बालक पर इतनी ममता उमड़ पड़ी कि जब कभी उसे अपना स्तन पान कराने लगा।

सर्वशक्तिमान प्रभु का खेल (करिष्मा) देखिए कि श्री तुलसी के स्तनों में दूध बनने लगा। वह बालक को दूध पिलाता रहा। लगातार स्तनपान करने से श्री तुलसी के स्तनों में उतरोतर दूध में वृद्धि होने लगी। तब तो उन दोनों भाईयों में इतना प्रेम उमड़ पड़ा कि यह कतई नहीं लगता था कि वे भाई हैं, वे मां –बेटा बन गए। नागरू ने अपने बड़े भाई को मां कहना शुरू कर दिया। श्री तुलसी के देहावसान तक नागरू ने उसे मां कह कर सम्बोधित किया। नागरू ने 3–4 वर्षों तक अपने भाई का स्तन पान किया।

संसार में बड़ी–बड़ी विचित्र घटनाएं घटी हैं। 60– 80 वर्ष के स्त्रियों ने बच्चों को जन्म दिया है। 120 वर्ष तक के पुरूष पिता बने हैं। परन्तु पुरूष को दूध उत्पन्न होना और अपने कनिष्ठ भ्राता को स्तनपान कराना शायद संसार की प्रथम विचित्र घटना है। यह थी नागरू की बाल्यावस्था।

होश संभालने के बाद वे इतने बड़े विद्वान हुए कि जिसकी बराबरी आज लाहौल क्षेत्र मे विरले ही कर सकते हैं। आज उनकी उम्र लगभग 120 वर्ष होनी थी। उनके समय पढ़ाई लिखाई का कोई काम न था। पर अनपढ़ रह कर भी उन्होंने ऐसी भविष्यवाणी की है, जो आज सच प्रतीत होती जान पड़ रही है।

नागरू की भविष्यवाणी :– उन्होंने लगभग 60 – 80 वर्ष पहले कहा था–

1 लाहौल के लिए लद्दू माल आयेगा मतलब भेड़ें राशन (खाद्य सामग्री) ढोएंगी।
2 भेड़ों के बाद घोड़े –गद्हे, खच्चरें राशन ढोएंगें।
3 घोड़े – गद्हे और खच्चरों के बाद गाड़ी –मोटरें निकलेंगी।
4 काला रास्ता होगा, काले लोग होंगें।
5 लाहौल की मिट्टी पंजाब (मैदानी क्षेत्र) पहुंचेगी, तब लाहौल के लोगों की आर्थिकी में सुधार होगा।
6 सोने के समतुल्य घी मिलेगा।
7 विधवा औरत का शासन रहेगा।

8 सिंह शासन भी रहेगा।

9 स्त्रियों के परिधान में व्यापक परिवर्तन होगा।

10 मनुष्य लोहे की कमाई खाएगा।

11 छोट–छोटे पुड़ियों में अन्न बिकेगा, तब समझिए कि घोर कलियुग शुरू हो चुका है।

12 गाय के लिए चरान नहीं रहेगा, ब्राह्मणों का सम्मान नहीं होगा तो समझिए कि घोर कलियुग शुरू हो चुका है।

13 गाय के लिए धरती पर द्रुब (घास) नहीं रहेगा, उसी अनुसार गाय मनुष्य को दूध देगी।

उपर लिखी जितनी भी बातें हैं, लगभग 60–80 वर्ष पहले की हैं। उस समय भारतवर्ष में अंग्रेजों का शासन था। विशेष कर लाहौल के लोगों को क्या पता था कि भारत भी कभी आजाद होगा? न सड़कें थी, न गाड़ियां थी और न ही रेडियो था। आज 60– 80 वर्षो बाद हम देखते हैं कि उनकी कही भविष्यवाणी सही साबित हो रही हैं।

उपरोक्त बातों का भावार्थ इस तरह हैं।

1 लाहौल के लिए लद्‌दू माल आएगाः– सभी प्रबुद्ध लाहौल निवासियों को पता है कि पहले भेड़ों पर (ब्यंगी) खाद्य सामग्री इत्यादि ढोया जाता था।

2 भेड़ों के बाद घोड़े –गद्‌हों और खच्चरों पर (खाद्य सामग्री) आवश्यक वस्तुएं ढोया जाने लगा।

3 घोड़े गद्‌हों और खच्चरों के बाद गाड़ियां –मोटरें निकलेगी– हम सभी को पता है कि 60–70 के दशक से पहले लाहौल के लिए सड़क न थी। किसे पता था कि इस तरह सड़क भी निकलेगी और आज हम देखते है रोहतांग दर्रे से वर्फ हटने के बाद प्रतिदिन हजारों गाड़ियों का आवागमन लगा रहता है।

4 काला रास्ता होगा, काले लोग होगेंः– सड़कें निकलीं पर कच्ची थी। धीरे –धीरे उन पर कोलतार बिछाया जाने लगा जो आज तक भी जारी है। और इस कोलतार को बिछाने में बिहार और झारखंड के लोग सिद्धहस्त हैं। अब तो पाठकगण समझ गए होगें कि काला रास्ता और काले लोगों से उनका क्या आशय था?

5 लाहौल की मिट्‌टी पंजाब पहुंचेगी तो लाहौल के लोगों की आर्थिकी में सुधार होगा– पहले लाहौल क्षेत्र में काफी गरीबी थी। जब सड़कें निकलीं, मोटर गाड़िया चलीं। लाहौल के लागों का बाहर के लोगों से मेल मिलाप हुआ, आलू–कुठ इत्यादि नकदी फसलों का पता लगा। आलू –कूठ बीज कर फसल तैयार की।

फसल गाड़ियों में भर कर कुल्लू के रास्ते होते हुए पंजाब आदि मैदानी क्षेत्रों में पहुंचाई। लाहौल के लोगों को आर्थिक लाभ पहुंचने लगा। अब आप समझ सकते हैं कि लाहौल की मिट्‌टी का पंजाब पहुंचने का क्या तात्पर्य है?

6 सोने के समतुल्य घी मिलेगाः– उनके समय घी की कीमत क्या रही हागी? आज देखिए घी का मूल्य कहां पहुंच गया है।

7 विधवा स्त्री का शासन होगाः– उस समय किसे पता था कि हिन्दुस्तान आजाद भी होगा। भारत आजाद भी हुआ। आप सभी को मालूम है कि स्वर्गीय श्री मति इन्दिरा गांधी ने भारत वर्ष का शासन सम्भाला है।

8 सिंह राज (शासन) होगाः– सिंह शासन भी आया। आज भारतवर्ष का शासन माननीय प्रधानमंत्री

श्री मनमोहन सिंह के हाथों में हैं। इसके अतिरिक्त आप देखते हैं कि भारतवर्ष में, खास कर उतर भारत में सिंह (सिक्ख) धर्म (चाहे वह किसी भी मत के हों) का कितना प्रचार –प्रसार हो रहा है।

9 स्त्रियों के परिधान में व्यापक परिवर्तन होगाः– जिस तरह माता पार्वती (दुर्गा माता) जुए में हार कर जिस रूप में संसार का विध्वंस करने चली थी, वह आप जानते हैं। आज की युवतियों का श्रृंगार या परिधान लगभग वैसे ही बनता जा रहा हैं। मेरे कहने का भाव आप भली –भान्ति समझ गए होंगें।

10 मनुष्य लोहे की कमाई खाएगाः– नागरू के समय कितने घर ऐसे थे? जिनके लैंटर लगे थे। कितनी गाड़ियां चलती थी। आज आप देखते हैं कि लोहे का प्रयोग कहां नहीं हो रहा है। अरबों खरबों रूपये लोहे पर खर्च हो रहा हैं। लाखों– करोड़ों लागों की रोज़ी रोटी लोहे की बदौलत चल रही है।

11 छोटे– छोटे पुड़ियों में अन्न बिकेगा , तब समझिए कि घोर कलियुग शुरू हो चुका हैः– पहले –पहले लाहौल निवासी वर्ष भर के लिए खाद्य सामग्री एकत्रित कर लेते थे। जब गाड़ियां चली, लाहौल निवासियों ने छः महीने के लिए खाद्य सामग्री एकत्रित करना शुरू किया। क्या पता निकट भविष्य में रोहतांग सुरंग निकल गया तो लाहौल निवासी राशन एकत्रित करना बन्द कर दें। इसके अतिरिक्त आप देखते हैं कि लाहौल के अतिरिक्त बाहर कुल्लु या दूसरी जगहों पर छोटे– छोटे लिफाफों में राशन खरीदते हैं। टी0 वी0 आप देखते हैं। एक–एक रूपये के पोच में कितनी वस्तुओं को खरीदने के विज्ञापन दिए जाते हैं।

12 गाय के लिए चरान नहीं रहेगा, ब्रह्मणों का सम्मान नहीं होगा तो समझिए कि घोर कलियुग शुरू हो चुका हैः– पहले माल –मवेशियों (गाय आदि पशु) के लिए खुली चरागाहें थी। आज जनसंख्या बृद्धि से खेत– खलियानों की कमी हो गई है। गाय के लिए चरागाह खत्म से हो गये हैं। ब्रह्मण का सम्मान नहीं होगा।

13 गाय के लिए धरती पर द्रुव (घास) नही रहेगी, उसी के अनुसार गाय मनुष्य को दूध देगी। जनसंख्या वृद्धि से जंगल –वनस्पति खत्म होते गए। वनस्पति के अभाव के कारण समय पर वर्षा नहीं हो रही है। वर्षा नहीं हुई तो वनस्पति कहां से उत्पन्न होगी। घास उत्पन्न नहीं होगी तो गाय क्या खाएगी। गाय खाएगी नहीं तो कितना दूध देगी कहने का भाव कि जितना गाय खाएगी उतना ही वह दूध भी देगी।

इसके अतिरिक्त भी और बहुत सारी बातें हैं जिन सबको लिपिबद्ध करना अभी मुश्किल है। फिर कभी अवसर मिला तो अवश्य लिखूंगा। ये सब बातें मैंनें अपने बड़े पिताजी श्री भीमू से सुने हैं। क्योंकि वे श्री नागरू के पोता लगते हैं। बड़े खेद का विषय है कि इतनी उच्च कोटि की बातें आज तक कहीं भी लिपिवद्ध नही किए गए। आज इतने वर्षों के बाद हम देखते हैं कि श्री नागरू की कही गई बातें अक्षरशः सही प्रतीत हो रही हैं। उनके बारे में और बातें फिर कभी। पढ़ने में कहीं समस्या आएगी या कहीं गलत लिखा हो तो मैं पाठक गण से क्षमा चाहुंगा।

मृत्यु संस्कार के गीत व संगीत

—शेरू बाबा

मानव जीवन का कोई भी कार्य व भाव व्यापार लोक—संस्कृति से अलग नहीं है। जीवन की सम्पूर्ण झांकी लोक—संस्कृति में प्रतिबिम्बित है। सभी प्रकार के संस्कार तीज त्योहार, पर्व उत्सव, मेले, खेत, खलियान – ऋतुएं प्रकृति एवं सुक्ष्म भावनाएं इनका वर्ण विषय हैं।

मानव जीवन का अन्तिम संस्कार मृत्यु—संस्कार है। संसार के सभी देशों के लोग चाहे वह सभ्य हो चाहे असभ्य हों, सभी के मृत्यु संस्कार अपनी अपनी विधि से होते हैं। ऐसे ही लाहौल —स्पिति में भी मृत्यु संस्कार की अपनी विधि है।

प्राचीन काल से मृत्यु संस्कार लाहौल में अन्य संस्कारों से अधिक महत्व रखता है। सच भी है। मृत्यु उत्सव एक सत्य है। जिसका कभी न कभी सामना सभी जगत के प्राणियों को करना पड़ता है। लाहौल स्पिति में मृत्यु पर विभिन्न— विभिन्न राग और ताल बजाए जाते हैं। जन्म से लेकर मरण तक जो भी मनुष्य (व्यक्ति) करता है उसका सभी प्रकार का लेखा—जोखा गायन और संगीत के माध्यम से गाया जाता एवं बजाया जाता है। अर्थी बनाने से लेकर जलाने तक के अनेकों राग एवं ताल बजाए जाते हैं।जब शव को नहलाया जाता है तो निशां नगाड़ा पर डाडी राग बजाया जाता है। विश्राम अर्थी उठाने के राग और वही दुघधार राग माता पिता के मरने के उपरान्त कर्ज चुकाने के लिए बजाया जाता है। वहि अन्य महत्वपूर्ण राग ताल मंशा (मुर्दाघर) पर बजाए जाते हैं। इस तरह से मृत्यु संस्कार के कई ताल हैं जो संख्या में असंख्य हैं जो वर्तमान में लुप्त हो चुके हैं।

सुगली मृत्यु संस्कार के गीत —मृत्यु संस्कार में लाहौल स्पिति में सुग्ली गीत की प्रथा आज से कुछ दशक पूर्व तक थी। आज भी इन गीतों को गाने वाला यदा कदा बुजुर्ग महिलाएं मिल जाती है। केवल महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले गीत, पुरूष वर्ग के लिए बर्जित थे। मृत्यु संस्कार गीत इस प्रकार से हैं:—

1 बणा बुटेरि जोवणा गिरि फिरी सु ओ ओ ——— आईला ओ———
मानू वो केरलां जोवणा ओ —————
हां ओ फिरि वो फिरूणा नैई ओ ओ ———

अर्थात वन के पेड़ की जवानी पतझड़ ऋतु में गिर जाते है, ढल जाते है, बसन्त ऋतु के आने पर फिर से पेड़ पौधों पर यौवन लौट कर आता है। परन्तु मनुष्य का यौवन एक बार ढल जाता है तो जवानी पुनः लौट कर नहीं आती।

2 फाला त्रुटि कुदाला ओ, ओ गाला ओ।
छुटी वो माणू रा देयी ओ
हां ओ दुए कठोड़ा गाला ओ ओ ओ

अर्थात हल का फाला और कुदाल टूटते हैं तो लोहे का एक टुकड़ा उसी आकृति में गर्म करके जोड़ दिया जाता है। (उसे गाला कहते हैं) परन्तु मनुष्य के देह धारण करने वाली नश्वर शरीर को छोड़ देती है। उस समय शरीर के साथ दो लकड़िया शमशान तक गाला के समान जुड़ जाती है और कुछ नहीं।

3 उनाड़ी खोली बुरी (बतुरा) ओ ओ लाई ओ
बाहरे ता लाणी डाडी ओ
हां ओ दीती जीऊदाणी ओ ओ ओ

मृतक के शरीर से ऊनी वस्त्र खोलकर उतार दिये जाते हैं। स्नान कराकर बधूरी (सूती कपड़े यानी कफ़न) पहना दिया जाता है। बाहर आंगन में डाडी राग बज रहा है। अब जीवन का दान करना है।

4 बावूना शादी हथा पत्र्जा पा ओ ओ किये ओ।
नीती वो सब्ताली बाहरे ओ।
हां वो दीती गौदाणी ओ ओ ओ।

यहां का जीऊदाणी शब्द के स्थान गौदाणी प्रयुक्त कर पूर्वोक्त पद्य की आवृति हुई है। अर्थ स्पष्ट किया गया है कि जीवित व्कति का दान गोदान है। लोगों की धारणा है कि वैतरणी नामक एक नदी है। मरने के बाद मृतक को उस नदी को पार करना पड़ता है। गोदान संस्कार करने पर गौ वैतरणी नदी से जीवात्मा को पार ले जाती है।

5 भाई मुईये पुतुरा ओ ओ – रोलूगा ओ–
साचा ओ बोले गुणिया ओ–
हां ओ दुध वो धारा सु ओ ओ ओ

मां मर गई है। इकलौता पुत्र रोने लगा। उसने सच्चे दिल से गुणिया (वांसुरी बजाने वाला) व्यक्ति से कहा मै पुत्र हुं और वह मेरी मां है। हमारा ममतामय सम्बन्ध दूध की धार से लेकर है। इसलिए इस समय उसी स्थिति को याद करने के लिए दूधधार नामक राग बजाए। मेरे जीवन भर के लिए यह मेरा अन्तिम भाव है।

इस तरह से उनको गीत सुगली गाए जाते है जो शुरू से अन्त तक के भाव को दर्शाते है। और देह को जीवन से मुक्त किया जाता है।

तुड़ो हो योरा हो

—डा0 रणधीर मनेपा

तुड़ो हो योरा हो। स्रुमु फेरा कुकि जमासांग सद केनाग अनचुति, केन्तींग (आदर) यक्षा तोतो, केन्तींग अन्ची पडीगपा। स्रुमु फेरा तुड़ो हो योरा कुके इचि मिज़ी तुम्पोगसी वालोग तोन्ची, इचि मिज़ी सादेतू त्रीजी व्राच सोटिगती, ञीमी मिज़ी सादेतू मुर तोन्ची। सद तोंगकी थलांग इताग स्रुमु फेरा इन्जू थानांग जी थालांकन ट्रो किरची, दू थलांग आसकी युतन् थानांग चची। सदेतू इन्जतू डोम्वा शुपि। इच डोम्बी दमाम कुरवी, इची लिमू कुल्ट्री। ईचि पेतल् कुल्ट्री।

मुन्डू इताग सद ज़वचीतर नागरू वादवे हाट्टी क्यांगती या नागरू चौ, दोई इताग सद ज़वचीतर गुद थोगची। दू थलांग नागरू बातेची क्यांगती ट्रो मिरेची सद ज़ावची। इच जाड़ा पुरा सद ज़ापचरिंग दयाड़ा दोगपी। ज़ावकी थलांग इन्ज़तू थानंग व्राचा रांग ञम्पो सद खड लककी किट्री। दू योरज्ञाग वातेची गुन्चलिंग शिलची तरिंग अक्तुवर सतारारिंग, 2005, छेपा ञीशीखंगी ओन्तरो छेपा स्रांग तोरि।

इताग मुन्डू छेपागं ज़ापचीतरे, केवाग ची इन्जू आमा जंगडोलमा हन्तीरे, हन्की थलांग कालछोर होन्तीरें। दराग जंगडोलमा छेपागंरांग चापतीरे। दू थलांग शेरू रूप चोकना डोगं तिघुलू गुर गाईसी, दू छेपागं जू खोंगजांग पिकना चरतीरे। घेपांग तैयार शुकि रोपसांग मेलांगघरतांग मेड़ा रणी। मेड़ा रंगी थलांग नागरू दोची कालछोर होन्तीरै। ञीमीला सद दोंगज़ी गुन्चलिंग वोम्पी। इताग शुलिंग पीडिकू। दोंग ञीमिल सदतू रंग वाते हसकातू (आदर) यक्षा लीरे।

घेपांग रंग, मेलंगरतू हासके शुई, गुर शुई, लवदाग शुई, वाच्शुई फा शुई। इताग दोरे वाते इन्ज़तू विचांग ज़ापसी तोरे वातेतींग खताग रन्टुरे। खोरारिंगं वाला कीकि रन्टुरें। वातेतींग खयांग यक्ष छुगीत दोंग इताग सतेतींग यन्दर रन्टुरे। वातेतींग खताग कोलतुरे। शुलिंग पिकियो ख्यांग यक्ष छुगती दोंगी दोची वातेतिंग आदर लज़ी। इताग सद वाते सावारिंग चतुरे। दोरांग कालछोर होन्तुरें। कालछोर छोगकी थलांग हरूकरें शुई, गुर शुई, लवदाग शुई, वाटा शुई, फा शुई, वातेतिंग कालछोर मयांगची रन्टुरे। वाला शुई, खतांग शुई, वातेतिंग चागकी रन्टी । शुलिंग इताग शुलिंग सद मोगर तांग मेड़ा शुपि। मेड़ा शुगकी थलांग ञम्पो– ञम्पो घेपांग रांग, मेलांगरतांग इवि। शुलिंग सद तुगरिंग क्युलिंग (पीतिरिंगजी) आंसी हिचा। सद दू खेन आंसी वे दोई तुंगरिंग मिऊ वलि थिंगसिचा कुमिचा।

इच जाड़ क्युलिंग दोट्रो गाटे मोगर सदतू तरफे जलांग थुंगलांग दयाड़ा तोकिचा वे तानला दोंगी मिरे थगकी मतोगचोरे ओने दू थलांग पिमी ड.मी कुनमारे अमिनचरे । योंगी कुन्मची ज़मीनते वाते ज़मीनचरे । ज़मीन जई थलांग कुन्मरे वाते अन्चीचरे। अन्चीरांग ञम्पो युलपातिगं कुमिचंरे, तोग केने खेरिंग खुश मातोचे । युलपाची कुमिन्चरे डे॰नू सादेची मिऊ वलि पेट्री तोतो। तोग दिकुतू वारी शुद्ध । कुन्मची कुमिन्चरे डे.ने खन्ट्रेई खेने वलि ज़वा। दोगं पीकि थलांग सादेतींग कुमिन्चेर, दो ग्यु गूद जऊ, दो ग्यु टांगटांग जऊ । मोगर सद वाते युलपाची वेन्टिंग होंगकी चरमीचरे चरचिवे तुगरिंग अतू वारी तोरि दू मेचि कुमिन्चा। इताग गी वेन्टिगं ई मोद ञिगसीतोग, दोरांग अन्तोग दोरांग गी केने ज़ति। बेन्टिग ई थलांग दोई इन्जू दुवगु इच गोन्डरिंग चोगकी के मिचा । दू थलांग दोई गोण्डू वलि

थिंगंछ़ी लमिछ़। क्युलिंग दोछ़ी सद छांगकी छ़रमिछ़रे । दू थलांग सद शुलिंग होचि इमिन्चा! शुलिगंज़ी दोरांग स्रुमु सद शुमिनछ़रे । रालिंग पिकियो ड्रव लहा रांग मेड़ा शुमिन्छ़ा। ड्रव लहा ला खेई सतांग ञम्पो ग्यागतींगज़ी अंकी हिछ़ा । ओनतरो गरजांग दो ट्रो गाट्रे स्रिन्पोरे तोकिछ़रें । घेपांग स्रिन्पोतांग तेंगज़ी छाग की इमिछ़ा । छागकी रांग ञम्पो ड्रव लहा जी कुमिछ़, आचो दा ग्यु वारी शुग। केनाग थलांगकन शुति कुमिछ़ा ।

ड्रव लहा स्रनिपो तांग तेंगजा तेंगजा तोकिछ़ा । तुम्पोरिंग पिकियो इछ़ ड्री फुग अमिन्चा। दू फुग नांग इछ़ हाट्टी लामा तिंगेज़िन तांग (थुन्तींग) जोकि तोकिछ़रें । थुन्तींग जोपिरांग ञम्पो सेम दू दाकी इमिन्छ़ा। दू लामा फिरकन होसामिछ़ा। दोई खमिन्च वे ड्रव लहा स्रीनपो तांग तेंगज़ी छगकी जोछ़। हाट्टी लामी ड्रब लहारिंग कुमिछ़ कनिंग गी तेंगज़ी रिंग ईछ़ा ञीलम रन्टाग। ञीलमा ज़ी कई स्रनिपोरे बाते पोकपि लऊ। वा मिछ़ा ड्रव लहा खेने ञीलमा रांग पोगपी। आसकी हाटी लामी कुमिन्चा ञीलम रांग खितखी मशुपी। आसकी दू हाटी लामा थुन्तींग ई जोसिछ़ा। थुन्तींग जोकि रांग ञम्पो नमरवा गोसकी ञीञी शुकि इमिछ़ा। फेद दिरकन फेद नुरकन, जुंगरिंग तोंगपा शुकि ईमिछ़ा। ख्यांग तोंगपा शुक्याग दोंग जी ईछ़ा ञीलम जू डोगं दगकी अमिन्छ़ा। डोंग दू नमछो फुरबू गाईसी ग्यु समझु लामा दू तान्त्रिक या गुरू रिन्पोछे ट्रो तोरिरे।

शालिंग ज़ी पी सदते शुईरें। दोंगजी वाते सदमारे फा जू दोगं जागले पीड्रिरे। इछ़ फिरू दोगं सदतू थान केट्री। दोगं चछ़ी । योजा –2 सदमारे वाते गुन्चालिंग पीपि।

दयोसी मिलांग तेते ज़ावकी पुरद पीपि। पुरद पिकियो इन्जू कोछ़ा फलग्युम रांग मेड़ा शुपि। दोरांग कोछ़ा मिलांगतेतेरांग चापछ़ी। युलपाछ़ी कालछोर होन्छ़ी। हरूकरे, लवदाग वाते योज़ा – योज़ा गुंचलिंग इवि। खीनांग पिकियो, खीनांग दयोसी इछ़ री शुपि। ट्रिलिंग सदतांग शलभर या गुलरिंग सद, ञीमिल विचांग इताग अंगू सद पीड्री, दू रिरिंग चक्की योगछ़ी। अतू री शुद्ध , दोई तुंगरिगं मन्चछ़े कालछोर होन्छ़ी। तुंगरिंग मिलांगतेते रागं ञम्पो, शलभर सद ला चापछ़ी, ग्युंगरोल सदतांग स्रुमु सद नांगला वर दंग गगं ल वर अई गोम्पतू सद ला चापछ़ी। रतिल सद शुलिंग सद तांग चापछ़ी योज़ा – योज़ा दयोनोसी सद वाते साकर थानांग पीपि। शलभर तागं, मिलांग तेते युरन पिकियो, सद ञीमिल साकर थानांग चक्की केट्रि। हरूकरे, लवदाग अई मिमागं वाते गरपी क्योरवी लज्जी। थोक तन्मो शुपि। वार– वार साकरज़ी योगंकन खम्पा लज्ज़ी कि घेपड. ख्यांग पीडिरें। धेपांग फा जागले दोगं पीपि। दोगं योज़ा–योज़ा वोम्पी थलांग रबलेसद लुंग खोर वाल दोंग पिपि सद वातेतिंग यक्ष शुपि। लुंगखोर वाल आमा भन्दल जू (तीसरा सन्तान) हिछ़। ईछ़ नाग ट्रो हिछ़ा।

ईछ़ जाड़ गरजांग दोट्रो घाटे स्रीनपोरे कट शुगकी इमिनछ़ेर वे सदमारे वातेतिंग ड्रगसी पडीगीती। ड्रुगसी रांग दाणेउ वाहगंरिंग जी आमा श्न्दल ज़ी लुंग खोर वाल, फमवी लककी छ़रमिछ़ा। दोगं सद मरे वाते ड्रुगसी लगीकी तोछ़रें। ड्रुगसीरांग ञमपो लुंगखोर वालतींग वाते हुन शुमिछ़ा । लुंगखोर इछ़ लन्तींग ट्रो ईप इछ़ वुजंग छ़ौकन नाग हिछ़। अतिगं ला हुन मशुपि वे अलिकरन लुंग खोर वाल अन्कयाग अले इवा। इछ़ जाड आसकी वाते ड्रुगसीछ़रें। ड्रुगसीरागं ञम्पो आसकी लुंगखोर वाल ज़ो ज़ो ज़ो ज़ो लगकी अमिन्छ़ा। सदमारेतू जुगंरिगं जोगकी लुंग खोर वाल जी शोव वाते पेसकी छ़रमिछ़ा।

खेई अतिगंला हुने मशुमिछ़ा । इछ़ रांगकोईछ़ीरिंग जेते हुनः शुमिन्छ़ा। रांग कोईछ़ी अई सदतीगं कुमिछ़ा शोम इनाकी फुईयो योज़ा ट्रो छ़रतही। इनाकू शोम वाते फिरिरिंग इवाग। इछ़नाग फंगी ट्रो नमरवांग अम्चा कुमिछ़ा। फनतर – फनतर सद वातेछ़ी छुमगी छ़रमिछ़रे । सद शुना ईनु रूपरींग अन्ता। दोरांग दोरिंग सजा छुगमिछ़ा वे कई डे.नू चोकी दारी लउ। योज़ा–योज़ा वाते सदमारे साकर थानांग

पिमिन्च़रे। पिपीरागं ञम्पो वाते दसते गोगशी इमिनच़रें। इन्जतू विचांग मेड़ा रंगी च़रमिच़रे दोरागं योज़ा – योज़ा वाते गुन्चलिंग पिमिच़रें। पीपिरांग ञम्पो सद मोर वात इन्तजू ग्प्र लुंग जोच़रें।

इताग मुन्डु सद वात ग्प्र लुंग किमिन्चरें। मुन्डुइताग मिलांग तेते दू थलांग शलभर, ग्युगरोल, घेपांग, मेलागंकर, ड्रावलहा, मोगर, दू थलांग लुंगखोर वाल। अफोंरांग मिलांगतेते रांग लुंगखोर वाल चगकी खेई वाते दिरकन ट्रो सद वाते शिवकी किमिन्च़रे। वाते मिमांग पिपीरांग ञम्पो घेपांग जू गुर तांग, मिलांग तेतेउ गुरू इन्जतू विचांग ञम्पो खेल क्योरवी। क्योमेद थिवपन रात शुकि अन्च़ी ईवि। रातरिंग वाते इन्जतू क्युमुरिगं अन्च़ी ईवि। मिलागतेतेउ हारूकरें वाते पुरद इन्जू कोचू दोगं ख्याग सदमाहरेतू वारी शुई, दोगं ईवि, ज़मीन तुगंमिन शुपि। आदर यक्ष लज़ी।

दू योरज्ञांग हारूकरे, वाटरे, लवदाग, फारे अई मिमांग वाते फितोग पांच बजे तक वाते गु इताग साकर पिपी। साकर पिपिरागं ञम्पो, वाट, लवदाग, गुरू मुरतिउ सोती रागं सुज़ी। सुजी थलांग वाते इन्जतू विचांग गोगशी इवि। दू थलांग गुरू रांग, लवदाग तागं वाते, इच़ ञम्पो यांगपेरिंग गुन्च़लिग ज़ारका रांगी यांगपेरिगं इवि। मिमांग गुर बे तुंगरिंग ज़ारका रंगी इलि सेत नोपा होन्ची। यांगपे पीपिरागं ञम्पो अपना–अपना सदतांग वाते पीकि ईवि। ड.ारो इताग ख्याग अई सदते शिवकी किशी तोरिए। दोरे वाते इन्जू ग्रालुंग किट्रि। फा जी मरक्युमच़ा रन्ट्री। आसकी घेपांग गुरूरांग मिलागं तेतेउ गुर अस्त्र शस्त्र रांग क्योरवी। दू थलांग घेपांग गुरू ही मिलांग तेते रांग, शलमर छोडिकी, वाते सदतीगं रूकच़ी । खया कमी तोच़ा, ख्या कमी शुईया ट्रो। ओनतरो घेपांग गुरी वोल रन्ट्री वे सदते ख्यांग तक इलतोरें। वोल रंगी थलांग बाते च़ी अपना–अपना सद तोन्च़ी। मेड़ा रन्ट्री। मेचरे, गेमेच़ेर, पोगपी लजी। मेच़ची पुग तांग रांगी माफी थिंगची। दू थलांग आसकी सदमारे वाते चच़ी। घेपांग गुरी वाते मिरेतु दोगंच़ी वावत शिलची । इताग दू वावत ख्यांग मीरे तींग ञुग अम्पाग, जैसे. टांग टांग री इतांग दोंग दुकच़ी। दुकी थलांग गुरू रींग वावत रन्ट्री। गुरी पिलहा छोगतुंग सद माह कछांग वावत छांगची। छागंकी थलांग सदमाह कचांग वावत छांगच़ी। छ़ांगकी थलांग सदमारे आसमी थान वे योंगकन ट्रो मोद यांगपे रिंग लगकी आसमी चगकी केट्रि। 20 मिनट थलांग तुडो हो योरा कुके आसकी सद वाते तोन्की च़रच़ी। साकर थानांग पिकियो सदबाते आसकी चगकी केट्री आधा घण्टा थलांग सदमा वाते दिरकन नुरकन इन्जतू आमचांग अन्च़ी ईवि। सदवाते तांग इन्जतू विचांग मेड़ा शुपि। घेपांग रांग, मेलागंकर तींग ख्यांग आदर शुई तोग दोगं फितोग जागरा रन्ट्री। मिलांग तेते नारना क्योपतुंग इवि। दोगं ईता सद सावारिंग चतुरे। कालछोर होन्तुरें । हरूकेर वाते नांगरिगं इलतोरें। आरग, अड्डू, लाररे, नुच़ा, मार तांग, छकुचा जागच़ारांग मर रन्ट्ठरे। शिनमक्युओ इताग क्योपोतुगंजी ग्यसकी थलांग पुरद पिट्रोरे। पुरद मेलांगतेते रांग इन्जू कोच़ा शात लज्जी। दू थलांग थिवपन रातरिगं इन्जू थानंग पिपि। या ख्यांग घेपाड. रागं मेलागकरतांग ञम्पु मिलागतेते रिंग आदर तोतो सेता दोगं जागरारिगं ईवि।

दू थलांग घेपाड. रांग ञम्पो मेलागकरतींग 14 कोठी पुरा वुलावा शुपि। नागरूसदते इन्जतू नाकरागं किरवा – किरवा जोपि। तांगती पिपिरंग ञम्पों मखल सद ठारह नागरांग मेड़ा शुपि। दोगं जी ठारह नाग ला ञम्पो– ञम्पो इवि। सांगलपेई ईव़िरांग ञम्पो इताग सड़कू लेच़ी दोगं ईवि। आसकी स्रिस्रिन पी अन्तरो यांगपेच़ी इन्जू युई अमचु दोगं जी इवि।

याम्वे पिपिरागं ञम्पो हडिम्बारांग मेड़ा शुपि। मेड़ा शुकि थलांग इच़ फिरो सादू इन्जू कुम्मंग चच़ी। हडिम्बा तुगरिंग दाणे च़ी अण्की हिच़। स्रुड. दी शुदः कुल्लू जू राज़ा इनजतुविचांग जमीनू जीजी

दुमवु शुमिचा इचा राज़रिंग नगरू फोडंग छुगमिच। इचरिंग सारांग। नागरू राज़रिंग ट्र मी योरे शुमिचा। बड़ा भारी तरक्की शुमिचा। नगरू राज़रिंग ख्गी थलांग, सारू राजारिंग थोक जेगदंग शुमिचा। अई शर्त केमिचा वे कई इचा फिरोए रथु पीला खोरलो तैयार लगकी सारांग हन्तना। मातिन सेतावे कनिंग गी तेंगज़ी अन्तोग नगरू राज़रिंग, कुल्लू राजू दू शोभ सेम रींग देकि इलि। राज़ा ज़ी इन्जु मागपोन तांग ञमपो कुरचि ट्रमी योरे (जंगलांग) शिगनाग तांग चगकी चरति। राज़ा इन्जीरिंग हुन लमिचा का गैरागं ञमपो तेगंज़ी तैयार शुगकी जोउ।

ड.ारो कुल्लू जू राज़ा मागपोन ञमपो नगरू राज़ा दोगं पीड़ी पिकि थलांग नगरू राज़ा सगकी चरमिचा । सगकी थलांग दोरे वाते जंगलांग पिमिचरे। दोगं ला नगर रजू ड.मीयोरे वाते सगकी चरमिचरे। अईच योचा ट्रेमन व्यागकी शाड.ण नागरांग इचा गेमेचारंग ञम्पु जोमिन्च । दू गेमेनचरांग इचा योचा शुमिन्च। राज़ा ज़ी कुमिन्च कई अतिगंला थकडु वे दी योचा ग्यु शुगका कुकः। सारू राज़ारिंग हुन शुमिचा वे नगरू राज़ा जू छटवा योचा शाडण्ण नागरांग इचा गेमेचारांग व्यागकी तोचा। दू छटवा योचाला सगकी चरमिचरे । इच जाड़ राज़ाजू दू मेचा किनजिमचा । योचा शुमिन्चा। इच जाड़ दू मेचा थिलांग कुरचि रिरिंग इमिन्चा । मैचा दू कामरिंग छागकी जोमिन्चा। थिलाग शिवकी किमिन्चा शिवकी थलांग थिलाग अन्चिमज़ा। कापकी जोमिचा कापी रांग ञम्पों इच तागमो (शेरनी) इन्जे होसमिन्चा अई गर गर कुप्पा दू थिलाग तांग खम्बा जोमिचा।

गर गर ट्रो शोम थसकी थलांग दू मेचा रिगं हुन शुमिन्ना दू मेचि नागरू दोतिंग हुन लमिन्चा। कुमिन्चा वे तागमो ज़ी ग्यु योचा जरि। दू मेचा कचांग पीड़िसेत योची तागमो जू चुचु चुगपा तोच। योच दू ट्रेमन वापा जोमिन्चा। मेचा दोरिंग खंगी थलांग हैरान शुकि जोमिचा। दू मेची दिए शोम नागरू दोतिंग कुमिन्चा। नागरू दोची कुमिन्चा कनु योची तागमो जू पालमो तुगज़ा। कद फिपा, डोम्वा ट्रो शुईना। योचा इन्जू योज़ा–योज़ा योस्पा लज़ीचा।

मिचि दोकितिंग डोम्वा कुडिरे। योचरिंग मिचे ही नाजवाज ट्रो कुडिरे योचि इन्जु आमारिंग तंग लगकी चरमिचा वे ग्यु आवा अरे शुदा। मेचे ही कुमिचा कनुआवा नगरू राजा तोरि। दोट्रो छोरपोरांग ञींशि तोरि। कुल्लू की राज़ा ज़ी सगकी चरती। आसकी सारू राज़रिंग हुन शुमिन्चा वे नगर राज़ाजु कोचा शाड.गं नागरांग तोचा।

इच जाड़ आमरिंग मिलम अमिन्चा। मिलम रींग इच तागमो (शेरनी) दोमसिचा। दू तागमो ज़ी कुमिन्च कई ईनु योचा दाणे डुंगरी मन्दिरांग शी क्यु। गी कनु योचा खम्बा लताग। दू योरङ्गाग आमी इन्जू योचा दाणे डुंगरी मन्दिरांग शी कीमिन्चा योचा शी थलांग दोरिंग ट्रापन हिडिम्बा जू झलखा छुगति। झलखा छुगकी ञमपो हिडिम्बा जी कुमिच कई ग्यू ट्रोए इच बनातु। कुन्डा कई कुरचे जौं । ख्याग गी मास्तो ट्रो ली शुईगा। दोड. कई इच मन्दिर वनातू। आमचा – आमचा दू यम्वे पीकि इमिन्चा। दोगं पीपिरांग ञम्पो ली डातना शुकि इमिन्चा। दोई इन्ज़ दोंड मन्दिर वनाती। तोग इनाकी खण्ट्री तोई वे डुंगरी मन्दिर कुन्ड्रा रांग यम्वे मन्दिर कुन्डा ट्रोशिग शुपि।

दू थलांग घेपांग शुई, मे लांगकर शुई, ठाराह नाग शुई, हिडिम्बा शुई दोरे वाते यम्वेची ञम्पो – ञम्पो ईलिरे। जगह–जगह जागरा, जगह– जगह जग जवा दोरे छेखडो दयाड़ा रिंग मरगुल पिपि। इच जाड़ सद वाते मरगुल मृकुला मन्दिरांग दोसपी लगकी किट्रि। दू योरङ्गाग वड़ा तदमो शुपि। सद इन्जू कुम्भांग चगकी, गुरी वोल रन्ट्री। वोलरिंग दी कुट्री वे मरगुल तुम्पोरिगं इविचा मेवी कुकि, जमासांग

ख्यांग तगकी इवि दु योरझाग सदवाते राकसीणी दांग दोमज़ी ईविं दू थलांग आसकी दिरकन ट्रो अम्पी।

विलिंग पीकिपो सदवाते इन्जतु आचो ग्यालपो तागंजर, ड्रावलहा रांग, मेड़ा शुपि। इच़ जाड़ दोगं कुम्वांग सदवाते चगकी कीट्रि। दू योरझाग आसकी मेड़ा शुपि। डावलहा खेई सदतिंग इवि रणे मरन्ट्री। थागसी जोपी। सदवाते सड़कू लेच़ी ख्यांग रीए रीए शुपि दोंगजी ईवि।

सदमाहवाते विलिंगजी शाते शुपि। घेपांगरांग मेलांगकर अन्ची इवि। तांगजर सदतांग ड्रवलहा दोरे यांगपे इन्जू थानग इवि । योजा – योजा घेपांगरांग मेलांगकर खयांग पीड़ी ओने – ओने खेई सदतु मांग तिगपा लजी। स्रासिन पिकियो दनशेल योंगरिंग ताकसी च़रच़ी। योंग योंगजी ट्रो कोकसरतींग इवि। सोती दारां कचांग पिकियो, सदच़ी इन्ज़ी इच़ खताग या यन्दर छागंकी च़रच़ी। दू यन्दर पलदन लामोरिंग हिच। कोकसर पीकियो सारांगजी जम्वलु राजा दोमज़ी अम्पी। दु थलांग यांगपेच़ीए जागरा जना–जना इन्जु थानांग यांग लिगं पिपि। दोगंजी इन्जू आमा जांगडोल शाते लज्जी दोगंजी सद वाते तू मांग तिगच़ी ।

अनुवाद :

तुड़ो हो योरा हो, क्रमशः तीन बार यह शब्द बोलके, एंव देवते को दोनो हाथ जोड़कर माफी मांगकर उठाते हैं और आदर भाव से कहते हैं, महाशय जी, उठिए, अब चलने का समय हो गया है। इतने में एक आदमी देवता को आगे से यानि सिर द्वारा उठाते है, एक आदमी ब्राच यानि लकड़ी से बनी दो डण्डे जिसे देवता टिका कर रखते हैं दो आदमी पीछे से शहतीर का पिछला हिस्सा यानि गुर को उठाते हैं । देवते का उठाके पहले पीछे की तरफ तीन बार परिक्रमा कराते हैं और फिर से अपनी जगह थोड़ी देर के लिए विश्राम कराते हैं देवते का अपना नगाड़ा बजाने वाला होता है। वांसुरी बजाने वाला होता है। एक आदमी थाली को बजाकर चलता है।

सर्वप्रथम देवते को सजाने के लिए विभिन्न कपड़े नीले, पीले, हरे तरह –तरह के रंगों के कपड़े द्वारा सजाया जाता है। गांव वाले पहले केतलीयों में छांग व आरग पेय लाते हैं और कालछोर करते हैं। देवते को सजाने के लिए पहले गांव के बुजुर्ग या ठाकुर द्वारा सजाया जाता हैं और उसके बाद गांव के सभी सदस्य द्वारा देवते को सजाते हैं। सजावट के लिए एक दिन पुरा समय लगता है। सजाने के बाद देवते का (ब्राच) दोनों डण्डे द्वारा खड़े करके रखते है। अगले दिन गुन्चालिंग में प्रस्थान करना पड़ता हैं।

इस साल 17 अक्तुवर 2005 को अमावस के दिन था। सभी देवते एक साथ समयानुसार सजाया जाता है। राजा धेपन को सजाने के लिए सर्वप्रथम ठाकुर द्वारा सजाया जाता है। सजाने के बाद केवाग नामक गांव से जांग डोलमा (राजा घेपन की माता) को लाकर राजा ध्येपन के साथ शहतीर द्वारा वांध लेते हैं। उसके साथ ही तिघुल गुरू जो राजा ध्येपन के वज़ीर है एवं स्थानीय लोगों का कुलद देवता है उसे भी शहतीर के साथ बांध लेते हैं। राजा जी को तैयार कराके रोपसांग की ओर चल पड़ते हैं। रोपसांग बोटी (मेलांगकर) पहले ही सज धजी होता है आपस मे मेड़ा यानि मिलन होता है। दोनो बड़ी अरसे के बाद मिलते हैं। गांव वाले कालछोर निकालते हैं।

दोनों देवता एवं देवी तैयार होकर गुन्चलिंग प्रस्थान करते हैं। हरूका एंव गुरू, लवदाग, वाट एवं फा एंव गांव वाले सज धज के साथ सभी शुलिंग तक पहुंचाने जाते हैं। शुलिंग मे गांव वाले बड़े आदर से देवते एवं सभी को घर बुलाते हैं। शुलिंग वाला देवता मोगर पहले ही सजधजी होती है। कहते हैं

कि शुलिंग वाली देवी क्युलिंग स्पीति से आई हुई है। देवी पहले नरवलि लेती थी। एक दिन गावं क्युलिंग में खाने पीने का खूब आयोजन था। तरह– तरह के पकवान होते थे। फिर भी गांव वाले खुश नहीं थे। अचानक कहीं से चोरो की टोली भी वहां आ पहुंची। कई दिनों से भूखे थे। खूब खान–पान किया, खाने पीने के बाद गांव वालों को कहने लगे कि आप लोग खाना क्यों नही खा रहे हैं। गांव वाले कहने लगे कि हम लोग खुश नहीं हैं क्यों कि हमारा ग्रम देवी नर वलि लेती है। और आज इस नवदम्पति की बारी है। चोरों की टोली मे से एक ने कहा कि आओ हम देखते हैं कि आपका ग्रम देवी कैसे खाती है। सभी ने कहा कि लो मेरी टांग खा लो, कई कहने लगे कि मेरा सिर खा लो। इतने में क्युलिंग वासियों ने धकेल कर दरिया की तरफ फैंक दिया। फैंकने से पहले उस नवदम्पति की जोड़ी ने कहा कि पहले मैं दरिया से नहाकर आउंगी फिर मुझे खा लेना। दरिया जाने के बाद उस औरत ने अपनी चौउरी गाय के पीठ के उपर रख दिया। बाद मे स्वीकार कर लिया कि मैं नरवलि की बजाय पशु की वलि लूंगी। गांव वालों ने क्युलिंग से धक्का मार कर शुलिंग भेज दिया और आज मोंगर जो गांव शुलिंग की देवी है। गांव शुलिंग से चलते –चलते तीन देवी देवता हो गए। शलिंग पहुंचने के बाद ड्रवलहा के साथ मेड़ा हुआ। ड्रवलाह भी अन्य देवते राजा घेपन के साथ ग्यागर (भारतवर्ष) से आएं। इस दोहरान लाहोल में राक्षस राक्षणी की टोली होती थी। राजा घेपन उन राक्षसों से बार करके थका हुआ होता है। आखिरकार थक कर ड्रवलहा भी वहां उस राक्षसों की टोली में पहुंच जाता है। खूब वार करता है और चलते– चलते एक गुफा के समीप पहुंच जाता है। उस गुफा में एक लामा जी समाधि मे लीन थे अचानक उनका मन भ्रष्ट हुआ और बाहर की तरफ आने लगे। देखा कि ड्रवलहा भी बार कर करके थका हुआ था। और समीप बुलाया और लामा जी कहने लगे आपको मैं एक लोहा का टुकड़ा देता हूं। ड्रवलहा हंस पड़े और कहने लगे कि में इस लोहे के टुकड़े से क्या करूं। लामा जी फिर गुफा में समाधि के लिए बैठ गए। बैठने के बाद आसमान का दो टुकड़ा हो गया और आधा इधर को , और आधा उधर को बीच में खालीपन हो गया। जहां आसमान खाली था उधर से एक लोहे का टुकड़ा उधर आ गिरा। वह नमछोग फुरवू था। उसी नमछोग फुरवू से तो सारे राक्षस एक राक्षसणी सभी को भगाया एवं मार डाला। मेरे ख्याल से लामा जी एक तान्त्रिक एवं गुरू रिन्चोछें थे।

गांव शालिंग से चार देवते गांव जागला फा के पास गए। उधर थान में एक रात बैठ कर अगले दिन गुंचालिंग में प्रस्थान हो गए।

इधर मिलांग तेते भी खूब सजाकर गांव पूरद पहुंचते हैं। पहुंच कर अपने पोत्रा फाल्युम के साथ मेड़ा होता है। उसके बाद पौत्रा को अपने साथ (शहतीर) द्वारा मिलाया जाता है। गांव वाले कालछोर निकालते हैं। फिर धीरे–धीरे हरूका (सभी सदस्य) लवदाग धीरे–धीरे गुन्चालिंग की ओर प्रस्थान करते हैं। गांव खीनंग पहुंचने के बाद दाये की तरफ एक बड़ा खेत होता है। उस खेत में पहले ट्रिलिंग की देवी (शलभर) मिलांग तेते, जो पहले पहुंच जाता है। उनको व्राच द्वारा खड़े करके विश्राम के लिए रखते हैं जिसका खेत है वो मालिक पहले से चली आ रही परम्परा का न तोड़ते हुए कालछोर लाते हैं। गांव एंव वाहर के सभी युवकों एवं लोगों को कालछोर पेय पिलाते हैं। शशलभर देवी को पहले मिलांगतेते के साथ मिलाकर एवं एक होकर चलते हैं। उसी तरह गांव साकर का देवता (ग्युडण्रोल) नाग देवता के साथ तीन अन्य देवता आपस मे एक शहतीर के साथ मिलाते हैं। नंग–ला–वर–दड. और गड.–ल–बर–दड. और एक गोम्पतु देवता इन तीनों को एक देवता के साथ मिलाकर अभी भी चलते हैं। इसी तरह गांव रतिल का देवता, शुलिंग देवी के साथ मिलाकर चलते हैं। धीरे –धीरे इधर–उधर से सभी देवी देवता पहुंच गावं साकर में (थानंग) विश्राम के लिए रख देते हैं। राजा घेपन का

चढ़ाव थोड़ा लम्बा है क्योंकि जगह–जगह पर देवताओं के साथ [illegible]ना पड़ता है एवं मेड़ा देना पड़ता है।

राजा द्येपन एंव अन्य देवी देवता धीरे– धीरे गांव जागला से गांव नुकर नाग देवी के उधर पहुंचते हैं। गांव वाले कालछोर देते हैं। लुंख खोर वाल भी कांहब [illegible]ी से आई हुई एक त्रिमूर्ति एवं नाग देवी हैं। गांव खले कैसे पहुंची कहानी इस प्रकार से बनाया गया है लुखंखोर वाल यानि हवा द्वारा चलाने वाली तेज़ सफेद वाल जैसे नाग देवी। लुगंखोर वाला माता बन्दल के तीसरी सन्तान है। एक बार गुन्चालिंग में एक बहुत बड़ा सभा वुलाया गया जिसमें ज्यादा तादाद में पल रहे राक्षस एवं राक्षणी को खत्म करना उस सभा में माता बन्दल ने अपनी तीसरी संतान को भी कुछ गुहा (गुप्त) वातें सुनाने के लिए भेज दिया।

सभी देवताओं का आपसी विचार विमर्शं चलता रहा। इधर लुगंखोर वाल भी चुपके –चुपके बातें सुनता रहा। लुगंखोर वाल जब उड़ती है तो किसी को दिखाई नहीं पड़ता सिवाय एक जानवर के वह एक (रांगकोईच) नेवला को।

नेवले ने अन्य देवताओं को कहा कि हमें बात धीरे से कर लेना चाहिए क्योंकि कोई हमारी बात को सुन रहा है। एक नाग पिछले कईं दिनों से आसमान पर उड़ रही है। उड़ते– उड़ते सभी देवते उनको पकड़ लेते है। पकड़ने के बाद उन्हें सजा मिलता है चौकीदारी यानि सभी देवी देवताओं की चौकीदारी करेगी।

धीरे–धीरे सभी देवी एवं देवते साकर पहंच जाते हैं। और अपने अपने देवताओं को उठा लेते हैं। आपस में मेल–मिलाप होता है और मेड़ा भी होता है । धीरे धीरे सभी गुंचलिंग पहुंच जाते हैं समय करीब रात के दस बज चुका होता है। पहुंच कर सभी देवते अपने –अपने स्थान कमशः इस प्रकार बिठाते हैं। सर्वप्रथम दाये से वायें की ओर मिलांगतेते, उसके बाद शलमर, ग्युंगरोल (नागराजा) द्येपन राजा, बोटी, ड्रवलहा, मोगर, एवं लुगंखोर वाल कुछ समय के बाद मिलांगतेते व लुगंखोर वाल को छोड़कर बाकि सभी देवी एवं देवता को सुला देते है। उसके बाद गुरु अपनी खेल खेलता है। धीरे –धीरे सभी अपनी घरों की ओर लौटते हैं। मिलांगतेते को हरूका (सदस्य) पुरद अपनी पौत्र फल्खुम के घर पहुंचते हैं। उधर गांव वाले खूब सेवा करते हैं और मांस भी खिलाते हैं।

उसके अगले दिन करीब शाम के पांच बजे तक गांव साकर में पहुंचना पड़ता है। साकर पहुंचने के बाद पहले गुर, लवदाग, शट, व फा चश्मे के पानी के साथ नहाते है। आपस में गले मिलाते है। उसके वाद गुर लवदाग, एवं वाहर से आए हुए दर्शक गण सभी एक साथ गांव साकर से गुंचालिगं की ओर दौड़ लगाकर चलना पड़ता है। दर्शक गण अगर गुर बगैरों से पहले पहुंचते तो कुछ दोश भी निकालता हैं। इसलिए सभी को एक साथ चलना पड़ता है। गुन्चालिंग पहुंचने के बाद पहले जो देवते सुलाह लेते थे सुबह अपनी–अपनी जगह पर रख देते हैं। फिर फा [illegible]क्युमचा देता है। शाम को एक साथ चलकर सारे अपनी देवता के पास पहुंच जाते है। पहुंचने के बाद छेपांग गुर और मिलांगतेते का गुर आपस में अस्त्र शस्त्र का खेल खेलते है। उसके बाद द्येपन [illegible] गुर मिलांगतेते व शलभर को छोड़कर (क्योंकि मिलांगतेते और शलभर का अपना गुर है।) बाकि सभी देवताओं द्वारा पूछता है कि कोई तकलीफ तो नहीं। या कुछ और प्रश्न राजा द्येपन का गुर ([illegible]ल) शायद आज्ञा देगा कि हमें कहां तक जाना हैं। इत्यादि।

उसके बाद सभी अपने – अपने देवताओं को उठाते हैं । [illegible] में मेड़ा देते हैं देवी जो औरतों के वीच घूमती रहती है, यानि औरतों को छेड़ना। गांव के औरतें ([illegible]ग) दाणा द्वारा भगाते हैं। यानि दाणे जेब में रखकर देवता की तरफ फैंकते हैं। उसके बाद थोड़ी [illegible] की ओर यानि गांव साकर की

तरफ आकर सबको विठाते हैं। और सिर उपर की ओर करके विठाते हैं। राजा द्येपन के गुर सभी लोगों से (वावत) यानि रोटी का टुकड़ा या चिल्लड़ का टुकड़ा या आटे का गुदा हुआ रोटी बगैरे। वावत इसलिए देते हैं कि ताकि रोग दूर हो जाएं। कहने का तात्पर्य यह है कि उसे टुकड़े रोटी को हम अपनी शरीर जहां हमे दर्द होता है उधर छुआ कर दे देते हैं। गुर अपनी सबसे वावत लेकर मनोकामनाएं चारों दिशाओं में करते हैं कि दुनियां में कोई रोग न हो।

वावत देते वक्त सभी देवताओं को उठना पड़ता है। उसके वाद करीव बीस मिनट बाद नीचे जाकर गांव की तरफ सभी देवताओं को सिर उपर की ओर रखकर नीचे विश्राम के लिए छोड़ देते हैं।

15 – 20 मिनट के बाद फिर सारे देवताओं को उठा लेते हैं। तुड़ो हो योरा हो यह शब्द फिर से प्रयोग में लाते हैं। दोवारा उठाकर क्रमशः साकर थान में फिर से बिठाते हैं। करीब आधा पोणे घण्टा विश्राम के लिए रखते हैं गुर अपना काम करते रहता है। खेल खेलता रहता है। पोणे घण्टा के बाद सारे देवताओं को उठाते हैं और आपस में मेल मिलाते हैं। और मेड़ा देते हैं। यह उनका अन्तिम मिलन होता है। राजा जी और भोटी जी की पुरे चौदह कोठी भ्रमण के लिए बुलाते हैं। उधर से उनका भ्रमण शुरू हो जाता है। सभी देवता अपने –अपने घरों की तरफ लौटते हैं। गांव में परिक्रमा करते रहते हैं।

मिलांग तेते सीधा गुचलिंग से आकर केवांग जाता है। पहले देवता को आंगन में विठाते है। हरूकरे (सदस्य) सभी अन्दर जाते है। पहले कालछोर देगे। शराब, लुगड़ी, आलू, चिल्लड़, दही, घी, नमकीन चाय जागचारांग मार यानि सतू से बनी हुए एक खाद्य पदार्थ खूब सेवा करते है। उसके बाद गांव पुरद पहुंच कर पौत्रा फल्युम को अपने से अलग कराते है। उसके बाद अन्धेरी रात का अपनी थान मिलपागटुंग पहुंचते है या राजा द्येपन व वोटी के साथ–साथ वुलावा है तो उधर जागरा में पहुंचते है। तान्दी आज से उनका चौदह कोठी के लिए परिक्रमा के लिए पहुंचते हैं। पहुंचकर गांव मखल का देवता ठाराह नाग भी राजा जी के साथ शमिल हो जाता है। धीरे – धीरे कुछ दिनों में यम्बे यानि जहालमा पहुंच जाते हैं। हडिम्बा माता जी के साथ मेड़ा होता है। सभी देवताओं को एक रात कुम्भ में बिठाते हैं। हडिम्बा माता जाहलमें में कैसे पहुंचे कहानी इस प्रकार से है।

कुल्लू के राजा के बेटों का आपसी बंटबारा हुआ। दो जगह हुआ। एक राजा को नगर किला का रियास्त मिला एक राजा को कुल्लू रियासत मिला। नगर राजा के छः पुत्र हुए और रियासत का काफी तरक्की हुआ। इसे देखकर कुल्लू के राजा कुछ कर नहीं पाया और जलने लगी। उन्होंने शर्त रखी कि कुल्लू दशहरे के लिए तुम्हें एक ही रात में रथ के चारों पहियों को तैयार करके लाना पड़ेगा। अन्यथा मैं तुम पर चढ़ाई करूंगा। नगर राजा को कुल्लू राजा की मंशा समझ मे आ गई और उसने छः पुत्रों को कुछ कारीगर व सेना के साथ जंगल में भेज दिया और उनको खवर कर दिया कि युद्ध के लिए हर वक्त तैयार रहे। सुबह कुल्लू का राजा भारी सेना को लेकर नगर पहुंचा और कुल्लू राजा के आते ही महल में घुस कर राजा नें नगर को घेर लिया तथा उसको मार डाला और जंगल की ओर चल पड़ा जहां लड़ाई के दौरान नगर राजा के पांच सुपुत्र मारे गए। राजा के छटबा पुत्र भाग कर गांव श्शड.ाग में किसी अकेली औरत के घर में छुप गया। उस औरत ने नौजवान के वस्त्र व हथियार देखकर जान लिया कि वह किसी राजघराने से है, उसने स्वागत किया और बिठाया, नौजवान ने अपनी व्यथा सुनाई और उस औरत से शरण मांगी। औरत ने शरण दी और कहा कि यह वात कही न बताने की कसम दी।

लेकिन होने को कौन टाल सकता है। कुछ दिन बाद कुल्लू राजा के गुप्तचरों का मालुम हुआ कि नगर राजा का छटंवा पुत्र गांव शड.ाग में छुपा हुआ है। कुल्लू राजा के अनुसार उन्हें मौत का घाट

उतार दिया है, लेकिन कुदरत का कुछ और ही मंजूर था। उस राजा का अंश उस अवला नारी के कोख में पल रहा था। कुछ महीने के बाद उस नारी ने एक पुत्र को जम्म दिया। राजा के निर्देश अनुसार उस नारी ने अपने पुत्र की रक्षा अपनी जान पर खेल कर भी करनी है। नारी हमेशा अपने पुत्र की हिफाजत में लीन रहती थी। एक दिन वह अपनी सीढ़ीनुमा खेत में अत्यन्त व्यस्त थी कि बच्चा नींद से जाग उठा और जोर –जोर से चिल्लाने लगी। बच्चे की चिल्लाने की आवाज सुनकर एक सिंहनी कुदरत से प्रकट हो गई और दहाड़ने लगी। दहाड़ने की आवाज सुनकर वह नारी चिल्लाई और जोर –जोर से गांव वालों का आवाज पुकारने लगी कि सिंहनी ने मेरे बच्चों को मार दिया है। जब आगे आकर देखा कि शेरनी बच्चे को अपना दूध पिला रही थी। नारी जब बच्चे के समीप पहुंची तो बच्चे के मुंह से सफेद झाग निकल रही थी और बच्चा शान्त मुस्करा रहा था। यह देखकर औरत हैरान रह गई और बच्चा सही सलामत है औरत ने यह वृतांत गांव वालों को सुनाया और गांव वाले भड़क उठे और उस नारी को कहा कि तुम्हारे बच्चे ने सिंहनी का दूध पिया है। अब तुम दोनों नीच जाति में गिने जाओगे। बढ़ई जाति में शामिल होना पड़ेगां। बच्चे अपनी मति से फलता फूलता रहा और उस बच्चे का नाजायज औलाद का ताने मिलता रहा। बच्चे ने अपनी मां से पूछा तो मां को मजवुरन वताना पड़ा। कि तुम नगर राजो के औलाद हो। कुल्लू के राजा के गुप्तचरों को मालुम पड़ा कि नगर राजा का एक अंश शड.ाग गांव में जीवित है।

उस औरत को एक दिन सपना हुआ कि गांव में अचानक एक सिंहनी प्रकट हुई और औरत ने कहा कि तुम इस बच्चे को ढुंगरी मन्दिर में भेज दो मेरी शरण में इस बच्चे की रक्षा मैं स्वयं करूंगी। मां ने बच्चे को तुरन्त ढुंगरी मन्दिर में भेज दिया। बच्चा जब वहां गया तो हडिम्बा माता साक्षात प्रकट हुई और कहा कि तुम्हें इस मूर्ति की नकल कर ऐसी ही मूर्ति बना और उस मूर्ति का उठा कर चल, जहां पर मैं भारी पडूंगी वहीं पर मेरे मन्दिर की स्थापना कर। बच्चे ने मां हडिम्बा के अनुसार बैसे ही काम किया। आगे चलकर गांव जहालमा गांव में आकर मारी हुई और वही पर मन्दिर की स्थापना की। आज हम जो देखते हैं कि डुंगरी मन्दिर व जहालमा की जो मूर्ति है वह एक जैसी है।

जहालमा से आगे की ओर राजा घेपन, बोटी देवी, ठराह नाग सारे एक साथ चल पड़े। हर गांव –गांव जाकर हर कमी को पूरा करके कुछ दिन बाद उदयपुर पहुंचते है। उदयपुर पहुंचकर एक रात सभी देवताओं को म्रिकुला मन्दिर में रखकर सुलहा देते हैं। अगले दिन करीब दस बजे तक सभी देवताओं को मन्दिर से निकाल देते हैं और थोड़ी देर नीचे आकर राजा का अपना थान या कुम्भ (जगह) होता है उधर खड़े कर लेते हैं। आदमियों की भीड़ लगातार बढ़ती रहती है।

गुर के अलावा, भाट, फा, लवदाग एवं हरूका (सदस्य) सभी देवताओं के साथ–साथ गोलदायरें में बैठ जाते हैं। ताकि गुर अपनी खेल, खेल सके। इतने में गुर अपनी खेल शस्त्र अस्त्र द्वारा खेलता है और (बोल) भी देता है। वोल में यह कहेगा कि हमने मरगुल से आगे जाना कि नहीं हैं। अगर जाना है तो कहां तक। इतने में गुर कहता है कि हमने राक्षसणी के धर तक जाना है। शाम को उधर चल पड़ते हैं। अगले दिन सारे देवी देवता अपने – अपने घरों की तरफ प्रस्थान करते हैं। अगले कुछ दिन बाद गांव विलिंग में पहुंच जाते हैं। विलिंग गांव में राजा तांगजर, ड्रवलहा इन दोनों देवताओं से मिलन होता है। एक रात कुम्भ में ठहराते हैं। अगले दिन विदाई देने का समय आता है। सारे आपस में भेड़ा देते हैं। मगर ड्रवलहा अन्य देवताओं को रोक कर रखता है ताकि कही इधर उधर जाने न पाएं। कुछ समय बाद देवी देवता सारे आपस में बिछुड़ जाते हैं। जहां –जहां राजा देवता पहुंचते है अगले दिन गांव के देवता को अपनी थान में बन्द कर लेते हैं। शासिन पहुंचने के बाद राजा घेपन एवं भोटी दोनों सिस्सू न जाकर दंशलिंग गांव के नीचे की तरफ कोकसर की ओर जाते हैं। पवित्र धारा के नजदीक

जब ध्येपन राजा एंव बोटी पहुंचते हैं तो एक कपड़ा खताग या यन्दर जमीन पर खुद राजा ध्येपन छोड़ देते हैं।

यह यन्दर एवं खताग पलदन लामों के लिए होता है। श्शाम तक खोकसर पहुंचते हैं। खोकसर पहुंचकर मलाणा से राजा जम्बलु मिलने के लिए आते हैं। अन्तिम सिस्सू की ओर आते बार गांव –गांव होकर उपरी रास्ते से आते हैं और सीधा यांगलिंग राजा ध्येपन कि थान मे पहुंच जाते हैं। अगले दिन सिस्सू में जागरा होता है। कुछ दिन बाद जंगडोलमा को भी अपने से अलग करते हैं। राजा ध्येपन को भी (मांग तिगच़ी) अन्दर कर लेते हैं। इस तरह से 14 कोठी का सफर खत्म हो जाता है।

धन्यवाद !

Hari Singh Thakur

&

Company

Potato Seed Growers, Suppliers & Commission Agent

Manali-175131, Distt. Kullu Himachal Pradesh (India)

Ph. : 01902-236335, 98160-22347
Off. : (PP) 252478, Resi. : 252347

तड.–जर सद

–छेरिंग दोरजे गुस्क्यारपा

ऐ.–रड. छि. तेन – चि चु सद प्यु–कर सद, ल्हई ग्यापो तड.–जर प्युकर लेग्स तोग खनग लेब–शि हेन । दड. –पोई शचुम होग तेनजि थ्यग व्रीचेग।

हेनग लोशुम तड.जर सद दुरेग–2 तोद क्युड. स्रड.बर लेग्स कि योचि मिपुशा लोचुम चु सकयद तोग निनजि। दगसम असतोग थजुड. शुर बुटा नड. क्युमचि़ खड.–छग तिकिई शुल नि। बर–बर गुड. लेग्स चि थ – जुड. एलजि ब्रन ग्यस दछग।

सड. शुरे लिग – छग। तोद क्युड. थे सदमि ज़ईपा हेन लोशक। चुनिस बिड. गि खोचि थे सदतांग वरना द चुम चुगतोग मिरे देचिहेन छोग लोशग। खोरेग खोरेग मिई वरना दचुम क्यस तड. तोदपा ञमा छ़िजि एलछी युगचुम गि डोस लिंगतद । नोवग डोस लिगजिरे छड. चा बोनठग सुरे दु–रेग म.ग्वड. छोग।

सदचि दोष वन व्यता तेदचि। अइना लो एलजि खोचि मेमे तिकि लेब तद। तोदपा ञमा छि़ थजु मेमे रोग तड. जर गि लोग्युस शद तद। थजु मेमे ज़ि लोदतद गिज़ि हनजि सद सोतिड. छड.चा ठुबकता । नुनड. तलदोग चोल जि तोदपा ञमा छि़ सद ग्रोगपोड. छड. चा ददद । थजु मेमें जि सद स्रड. बर लेग्स कि थिल दोग ग्रोग पोड. छड. थिदग। सदकि बेरका रसका ब्रकशि तेड. रिग कि थिल दोग ग्रोग पोड़ ब ञिस किड. गि बरलगतोग खचि एलजि। सद खद चक़ुड. ग्रांग पोड. सेति मतन क्या मुनडग क्या जि जोदचि । तेड.रिग नड. थनथोन चि मिञमा खा क्याह हेनजि लोश्प फया छोग। ग्प्रेगपोड. नि सोति मसतन क्या मुनडगति धुमशिनि लोशोग। कनचा एख्येग लोशा । खचिग ति तेनरिंग कि थिलदोग, गोगपोंड. ऐलछोग। मुन डग क्यई चु कचड. लेबजि मि तिकि रोग सद चंग शि बोल दचा। जुगचि व लोददद गि मिपुशड. चुसद तड. ज़र हेन ग्या। गि सोतिड. चि फिरेग वन ग्युनि। नुड. ग्वाई चु मिञमा छि़ लोद तद दिड़ छि़ वनचा वन ग्यथेग। इने मिज़इपा हेन जि हिड. मि दछा मठुबखेग। सदचि़ म्योनब्रा रोग फयारे ददद। हन छि़ गि सोतिड. छि फिरेन बन नड.नी गि दा मिइ वरना मथिन ग्यता, गिरोग ला लमा नड. ब्रनग्यस दनड. डिग। नुनड. नुड. ग्वईछ, मि ञमाछि डोस लिग जि सद सोतिड. चि फिरेग वनजि तेनरिग लेग्स तोग रिंगतद। थोस तेड.रिगपा रोग लवदग गि लेन तदजि लो नोति तेंगरिग लेग्स तोग तड.– जर सद बुशि हेन जि। नुड.चि पुननपा छड. छि़ तेड.रिग तोग चि बिलिंग अस्तोग सद तेन चिपा क्या जी सदकि थोबतड. दा तेन ग्या सुम बिड. गि खोचि लेग्स तोग कोरा रो सदनमपा ञमा छि़हेलचि हेन छोग।

लो खचिग खोरेग पुननपा ञमा लोशोगे तेड. रिग च़गशि थरमड.– थेरमड. अमचिपा नोइ क्याखग। सद पोग्शारे, प्युकर लेग्स तोग अमचिपा मई हेनजि नुड. हेलचा खोइदे। नोवग डिग्स लिगजि तड.–जर प्युकर लेग्स तो हेलाशि हेनजि लोशुम। प्युकर इनज़ी जि सद तिकि दुरेगचि

निहेनजी थजुइ मन स्प्रेग लो चुम ने। थे त्रमागिज़ि दड. पोई फयस शगंटे रांगज़ि जोग चिहेन शिहेन। थजु थ्यग ब्रिचेग ने।

तड. जर सदकि छोदपा हेनग हेन।
उमा –उमा ।............
छोः छोः लइ ग्यापो कुला रग्पा।
तड. जर तेते ख्येन – नो, ख्येन –नो।
ज़तड. ररे ग्युद, तुड. तड. ररे ग्युद।
दुस ग़ुनदोग लो एपो ररे ग्युद।
ग्युस कसतोग छर छु ररे ग्युद।
मिनड. दुन डो छ्ड. ड़ी ठरोग ना जोददे ग्युद।
ठा रोगरे नद छड• ररे थादे।
ञिस तोग चि बेस तोग चि ठरोग न जोददे ग्युद।
हनदोग सड. सड. करकर नड. तेन ग्या थेम।

अनुवाद :

तड.जर देवता

हम लोगों के पूज्य देवता तड.–जर, जो प्यूकर गांव में प्रतिष्ठित हैं, किस प्रकार वहां पहुंचाया गया। इसका विवरण दिया जा रहा है जिसे मैनें क्षेत्र के बुजुर्ग जनों से सुना।

इस प्रकार कहा जाता है कि बहुत पहले तड.–जर देवता तोद क्षेत्र के स्प्रड.–बर गग्रम की उपरली ढलान में मिपुशा के स्थान में प्रतिष्ठित था। अभी तक उस स्थान पर देवीदार वृक्ष और एक खण्डहर दिखता है। समय समय पर अभी वहां के निवासी उस स्थान पर टौटू बलि चढ़ाते हैं। सुगन्धित धूप आदि भी जलाते हैं। तोद क्षेत्र में इस देवता को बारह वर्ष के अन्तराल में नरबलि दिया जाता था। नर बलि प्रथा होने के कारण पीछे तोद क्षेत्र के लोग देवता से तंग आ चुके थे और किसी प्रकार इसको दूर करने की तरकीब सोचने लगे। परन्तु देव दोष कारण नुकसान पहुंचाने से सब डर रहे थे। एक बार एक लामा तोद क्षेत्र में पहुंच गया। उसने लोगों द्वारा देवता को नरबलि चढ़ाने का किस्सा सुना। उसने वहां के निवासियों को नरबलि लेने बाले तड. जर देवता से मुक्ति दिलाने की बात की। लोगों द्वारा लामा को ऐसा करने की इजाज़त दे दी। लामा ने इस देवता को क्षणभर ग्राम के नीचे भागा नदी में फेंक दिया। देव चिन्ह (लाहुल का) लकड़ी के डंडें पर रंग विरंगे सूती कपडों के टुकड़े आदि बांधे होते हैं। जो नदी में बहता हुआ पुनन क्षेत्र स्तिगंरी गग्रम के नीचे भागा नदी में दो पत्थरों मे फंस गया। और नदी को एक अजीब धुंध ने घेर रखा था। जिसकी बजह से अन्धेरा छाई हुई थीं। सतींगरी और आस पास के गग्रम वासी जब नदी के किनारे उस धुंध को देख रहे थे। एक पुरूष पर देवता चढ़कर कांपते हुए बोलने लगा, मैं देवता तड. जर हूं। मुझे नदी से बाहर निकाल दो। लोगों ने तड.जर और उसके नरबलि की दास्तान सुन रखा था। डर के मारे देवता से पूछा। यदि नरबलि नहीं

लेगें तो आपको बाहिर निकाल देंगें। फिर देवता चढ़ा हुआ मनुष्य ने कहा मुझे टोटूबलि और भेड़ –बकरी की बलि ही दिया जाए। लोगों ने देवता को बाहिर निकाल कर सतिगीरि ग्राम में स्थापित किया। इसकी पूजा– अर्चना का ज़िम्मा थोस तेगरिगया के खानदान को सोंपा गया। इस प्रकार कई वर्षों तक तड. जर को सतिगंरी में स्थापित कर पूरे पुनन धाटी का शीर्ष देव मान लिया। लोगो द्वारा देवता पूजा और अन्य धार्मिक कृत्य समय समय पर किया जाता रहा। देवता भी प्रति तीन वर्ष के अन्तराल में समूचे पुनन क्षेत्र सतींगीरी से बिलिंग तक का चक्कर लगाता।

फिर कुछ वर्षों पश्चात लोगों ने कहा कि संगीतरी में लाहुल आने जाने वालों के मार्ग पर पड़ता है जिसकी कारण तड.जर देवता का अशुद्धि हो जाता है। इस तरह प्यूकर ग्राम में ले जाना उचित होगा। इस तरह तड. जर देवता प्यूकर में स्थापित हुआ। वहां पहले भी एक अन्य देवता स्रोवग नाम का स्थापित था। तड. जर देवता का संक्षिप्त स्तुति।

उमा, उमा (ओ देव, ओ देव।)
अर्पण –अर्पण देवराज कुल रक्षक तड. जर।
तड.जर दादा तेरी स्तुति तेरी स्तुति।
सर्वदा (तेरी कृपा द्वारा) वर्ष फल ठीक रहे।
खान – पान में बृद्दि हो (ठीक प्रकार)
समय समय पर वर्फ और वर्षा हो।
सर्व जन बीमारी और कष्टों से रहित हों।
घर में और बाहर रहने वाले सब निरोग रहें।
आपको शुद्ध सामग्री से पूजेंगे।

टोटू बलि – सतु का पिंड जिसे मक्खन की लाइनिंग देकर देवता को चढ़ाया जाता है।

गीत

–सतीश कुमार लोप्पा

देवर – दिग्साग् ईनो छुनमा तीकी रीते,
हां इनि ली जी थिर।

भाभी– क्यूमा जोइस नड. घी ख्याग,
हीती हनदोग् खा– रोग ग्यूशि ता।

देवर – लेन्दे ईनो यतो तीकी रीते,
बामा घी रोग रीचे दू थिर।

भाभी – हेन्जी फ्यस थे छिग्पा घीरोग रारे,
पोउला यम्पों पुशा हाई फीज़ी दात।

देवर – मालः ताई ईनी मेची झोते,
लेन्दे ताल ईनी दूची झोते।

भाभी – फ्यस नड. हईं खमलोग्स घीरोग रार,
र– नड.–का हन जिस्पी फीजी तुबगत्।

देवर – ज़माना छाईं लेग्शी एल्ज़ा कन्नी,
दिग्साग् एरी दड. लेग्शम मई।

भाभी – पोक्शी बुछा लब्ज़ा घीरोग माद्
क्युग्स हन्ज़ी पुशा घीज़ी फग्यत्।

देवर – दिग्साग् ईनी खातिग लिग नड. लीजी थिर,
घी रोग छुन्दे द ईनी माठ्ठब।

देवर – दिगसाग ईनी खातिग् लिगनड. लीजी थिर,
हिन जोग ननचा दा ईनी माठ्ठब।

अनुवादः

देवर – भाभी तुम को जलवाहिका मैं लाना चाहूं,
हामी ज़रा तुम अपनी भर दो ना।

भाभी – मेरे होते हुए घर में यहां,
तुम को और कोई क्यों चाहिए।

देवर – काम करने तुमको एक साथी मैं लाना चाहूं,
मुझे दुल्हन तुम अपनी लाने दो ना।

भाभी – सुन तेरी यह बात गुस्सा मुझ को आता है,
यह जूती तेरे सर दे मारूंगीं।

देवर – स्थान उसका तुमसे सदा नीचे होगा,
काज में पहले तुम से सदा जाएगी।

भाभी – तेरी इन बातों से उबकइयां मुझे आती हैं,
गर आओ तो मुंडन कर दूं तुम दोनों के।

देवर – ज़माना बदल गया है देखों तो सारा,
भाभी हमारी बदलने की नहीं अब भी।

भाभी – दुष्ट लड़के सीख तुम्हारी मै न चाहुं ,
तुम्हारे सर देखना राख की बरसात करूंगी।

देवर – भाभी तुम को जो करना है सो कर लो,
मुझ को अब तुम न यूं बांध सकोगी।

देवर – भाभी तुम को जो करना है सो कर लो,
हम को अब तुम न यूं दबा सकोगी।

मिक्चुमचू

—उरज्ञान छैरिंग मैलगपा

मिक्चुमचू शब्द मिक्स से बना है जिसका पुनन/ गाहरी बोली में मतलब गिनती होता है। इसी बोली में मिक्स का एक और मतलब कहानी भी होता है। हमारा यहां मिक्स का सम्बन्ध गिनती से है। अतः मेरे हिसाब से गाहर बोली के मिक्चुमचू शब्द को इस तरह से समझा जा सकता है:— पहला मिक्स जिसका अर्थ गिनती है। दूसरा अर्थ गिनती करना है' तथा तीसरा मिक्चुमचू जिसका अर्थ किसी खास समय और अवधि के लिए गिनती करना है। गाहर घाटी भागा नदी के नीचे के भाग में दायें और बायें तरफ बसे तीन कोठियों बरवोग, कारदंग, और गुमरंग (करिंग गांव को छोड़कर) बना है। इस घाटी में प्रतिवर्ष निश्चित तिथि 13 मार्च से 13 अप्रेल तक के अवधि को यहां की बोली में मिक्चुमचू कहते हैं। इस मिक्चुमचू को मुख्य रूप से छः (6) भागों में बांटा जा सकता है जिन का नाम निम्नलिखित हैं:—

1 चटोली।
2 गपपो लोम्पो नंग (व) गरा शिप्पी।
3 शंगटे शंगजी।
4 शर्बा नचूंगमा।
5 लेन।
6 नौ बृक्षु।

जो उक्त क्र0 सं0 5 में लेन है उसको आगे और सात भागों में बांटा जाता है जो इस तरह है:—
लेन:— 1. लंगकेस 2. म्योस 3. ससुर 4. नुसूर 5. त्वस 6. खुइस 7. गुन्दीगस।

उक्त मुख्य छः (6) और लेन जिसका आगे और सात (7) भाग हैं इनको 13 मार्च से लेकर 13 अप्रेल तक ठीक एक महीने बनते हैं, के साथ समायोजित किया गया है।या यों कह सकते हैं इनकों 13 मार्च से 13 अप्रेल के अवधी में बांटा गया है जिसे मिक्चुमचू कहते हैं। इन सब का विस्तार से वर्णन नीचे किया जा रहा है:—

1. **चटोली:—** यह हर व्रर्ष 13 मार्च को ही आता है।

2. **गपपो लोम्पो और गरा शिप्पी:—** यह चटोली के अगले दिन सिर्फ एक दिन 14 मार्च को होता है। यहां की बोली में गपपो लोम्पो का अर्थ राजा रंक और गरा शिप्पी का अर्थ लुहार व उससे भी नीच जाति के लोग है। 14 मार्च का आधा दिन यानी दिन के 12 बजे तक गपपो लोम्पो के लिए होता है और आधा दिन यानी 12 बजे के बाद गरा शिप्पी के लिए होता है। ऐसी मान्यता है कि यदि इस दिन 14 मार्च के दिन भर वर्षा हुई तो गपपो लोम्पो और गरा शिप्पी दोनों के लिए जो साल चल रहा हो वह कष्टदायक रहेगा। यदि वर्षा न हो और मौसम साफ रहे तो इन लोगों के लिए पूरा साल शुभ रहेगा। इसी तरह से जैसे इस दिन को दो भागों में (दिन के 12 बजे से पहले और बाद) में बांटा गया है। यदि 12 बजे से पहले वर्षा हो तो केवल

गपपो लोम्पों के लिए अशुभ माना जाता है और यदि 12 बजे से पहले मौसम साफ रहा तो उनके लिए शुभ माना जाता है। इसी तरह से 12 बजे के बाद गरा शिप्पी के लिए किया जाता है। यहा मैं गाहर बोली में शुभ और अशुभ के लिए विशेष तौर से दो शब्दों 'लाक्शी' और ' नोङशी' का प्रयोग किया जाता है। लक्शी का मतलब शुभ और नोङशी का मतलब अशुभ होता है। अतः वर्षा होने या मौसम साफ रहने पर लाक्शी व नोङशी कहते हैं।

3. **शांगटे शांगजी** :– यह गपपो लोम्पो व गरा शिप्पी के अगले दिन 15 मार्च से 21 मार्च तक एक सप्ताह का होता है इसमें भी सप्ताह के दौरान यदि वारिश हो तो शांगटे शांगणी जिसका यहां की बोली में अर्थ बुजुर्ग मर्द व औरते हैं। नोङशी यानि अशुभ कहते हैं। और यदि मौसम साफ रहे तो वर्षा उन बुजुर्गों के लिए लाक्शी यानि शुभ रहेगा।

4 **शर्वा नचूंगमा**:– यह भी शांगटे शांगजी के बाद 22 मार्च से 28 मार्च तक एक सप्ताह का होता है। श्शर्वा नचुंगमा का गाहरी बोली में मतलब नौजवान लड़के व लड़कियां होता है। इसमें भी वैसे ही यदि उक्त सप्ताह के दौरान वर्षा होती है तो नौजवान लड़के लड़कियों के लिए वर्षा के दौरान अशुभ व यदि मौसम साफ रहा तो उनके लिए शुभ रहेगा।

5 **लेन** :– यह शर्वा नचूंगमा के बाद 29 मार्च से 4 अप्रेल तक का होता है। गाहर में लेन का मतलब काम होता है। लाहुल में हर वर्ष सर्दियां समाप्त होने व वर्फ पिघलने के बाद खेती बाड़ी का जो काम निकलता है (तरतीव से) और सारा काम समेटने के बाद फिर से सर्दी का आना और वर्फ गिरने तक सारे काम को मोटे तौर पर उक्त लेन जो एक सप्ताह (29 मार्च से 4 अप्रैल) का होता है, एक एक काम को सात दिन में बांटा गया है। जो निम्न हैः–

5.1 **लंगकेस**:– यह लेन (काम) का पहला दिन 29 मार्च होता है। लंगकेस का गाहर में मतलब जब सर्दियों में गाय, भेड, बकरियां आदि के मल–मूत्र व घास फूस आदि सब मिला कर सड़ने के लिए ढेर लगा कर रखा जाता है जिसे वर्फ पिघलते ही खेतों में पहुंचाया जाता है जिससे खेतो को हल चलाने व विजाई के लिए तैयार किया जा सके। इस सड़े हुए गोबर (देशी खाद) को घरों में पड़े ढेर को ढो कर खेत में लगाने को लंगकेस कहते है। इस दिन पानी 29 मार्च को वर्षा हुई और देशी खाद डालने व ढोने के काम में विघन डाले तो अशुभ माना जाता है। कहने का तात्पर्य यह होगा कि यह खाद फसल के लिए ठीक नही रहेगा। और यदि मौसम साफ रहे तो शुभ व खाद फसल के लिए उपयुक्त रहेगा। और फसल भी भरपूर आएगा। वर्ष के दौरान असली जब गोबर ढोना हो उस दिन वारिश हो सकती है ऐसा माना जाता है।

5.2 **म्योस**:– लंगकेस के अगले दिन 30 मार्च का दिन म्योस का होता है जिसका मतलब हल चलाना होता है। इस दिन यदि वर्षा हुई तो असली म्योस (हल चलाने) वाले दिनो में भी वर्षा हो सकती है। इसलिए म्योस वाले दिन वर्षा होने पर अशुभ माना जाता है। यदि इस दिन मौसम साफ रहे तो असली म्योस (हल चलाने) वाले दिनों में हल चलाने का काम ठीक से चलेगा।

5.3 ससुरः– म्योस के अगले दिन 31 मार्च ससुर का होता है ससुर का मतलब बिजाई करने के बाद खेतों मे जब नया नया फसल उगा होता है तो उसके साथ फालतू घास उग आते हैं उन्हे छोटी किलनी जिसे यहां की बोली में सुरमों कहते हैं, के साथ निकाल लेते है। इस दिन यदि वर्षा हुई तो बाद में असली ससुर के समय भी वर्षा होगा। जो फसल के लिए शुभ माना जाएगा। क्योंकि इस समय पौधों को पानी की आवश्यकता होती है । ससुर के दिन वर्षा नहीं हुई तो अशुभ माना जाता है। क्योंकि ऐसा माना जाता है बाद में असली ससुर के समय सूखा पडेगा।

5.4 नुसूरः–
छोटी किलनी (सुरमों) का सहारा नही लिया जाता है। इस प्रकिया को नुसुर कहा जाता है इस समय तक फसल का पौधा काफी लम्बा हो चुका होता है। इसीलिए वर्षा की आवश्यकता ज्यादा नही होती है। अतः यदि नुसूर (1 अप्रैल) के दिन वर्षा हुई तो बाद में असली नुसूर के दौरान वर्षा होकर नुसूर के काम में बाधा डाल सकता है। और ज्यादा वर्षा होने पर जो फसल लम्बा हुआ होता है सुला/लेटा भी जा सकता है। यदि वर्षा नहीं हुई तो षुभ माना जाता है।

5.5 त्वसः– नुसूर के अगले दिन दो अप्रैल का दिन त्वस का माना जाता है त्वस का गाहर में मतलब घास कटाई का काम होता है । घास कटाई का असली काम 10 से 15 अगस्त से शुरू होकर अगस्त अन्त या 5 से 10 सितम्बर तक प्रतिवर्ष चलता है। त्वस यानि दो अप्रैल वर्षा रहे तो बाद मे असली त्वस (घास कटाई) के दौरान भी वर्षा होकर घास खराब हो सकता है। इसलिए इस दिन वारिश होना व नहीं होना अशुभ व शुभ माना जाता है।

5.6 खुईसः– त्वस के अगले दिन 3 अप्रैल खुईस का होता है खुईस का मतलब जौ , गेहुं के फसल को थ्रैसिंग करने को कहते हैं। पुराने समय में जौ काफी मात्रा में बीजते थे। थ्रैसिंग (खुईस) आजकल की तरह मशीन से न होकर गाय, चुरू, घोड़े आदि पालतू जानवरों के साथ होता था जो कई कई दिनों तक चलता था। खुईस यानि 3 अप्रैल का वारिश हो तो ऐसा माना जाता है कि बाद में भी असली खुईस के दौरान भी वर्षा होगी। और यदि मौसम साफ रहा तो असली खुईस के दौरान वारिश न होकर सारा काम बिना रूकावट के ठीक चलेगा।

5.7 गुन्दीगसः–
माना जाता है यदि गुन्दीगस (4 अप्रैल) वाले दिन वारिश होतो बाद में उसी वर्ष जल्दी वर्फ गिरकर (खुईस के बाद) रोहतांग दर्रा बन्द हो जाएगा। यदि इस दिन वारिश न होकर मौसम साफ रहे तो जो साल चल रहा है खुईस के बाद भी काफी देर तक रोहतांग दर्रा खुला रह सकता है। और वर्फवारी जल्दी नहीं पड़ेगी। इसीलिए गुन्दीगस (4 अप्रैल) को वर्षा होने या न होने का अशुभ (नोञशी) व शुभ (लगशी) कहते हैं।

6 नौ ब्रिशुः– गुन्दीगस के बाद 5 अप्रैल से 13 अप्रैल तक जो नौ दिन रहते है उसे नौ ब्रिशु कहते हैं। ब्रिशु यानि 13 अप्रैल के दिन लोग सुबह सवेरे ब्रिशु लांग (देशी गोबर का खाद) का

एक किल्टा घरों से भर कर खेत में डाल आते हैं। उसे ब्रिशुलांग डालना कहते हैं। यदि खेतों में बर्फ इस दिन नहीं भी निकला हो तो भी बर्फ के ऊपर डाल कर आते हैं। गहर में भागा नदी के दायें तरफ वाले वृशु के बाद हल चलाना शुरू कर देते हैं, यदि खेतों में से बर्फ निकल गया हो। पर यह जरूरी नहीं कि हर वर्ष वृशु के अगले दिन से ही खेतों में हल चलाना शुरू कर देते हों। यह सारा वर्फ पर निर्भर करता है कि सर्दियों में कितना वर्फ पड़ा है। लाहौल में कहावत यह भी है कि कभी–कभी वृशु (13 अप्रेल) के बाद भी 9 फुट वर्फ पड़ने का रिकार्ड भी है। ऐसे में उस दौरान हल चलाना वृशु से काफी बाद हो पाता है। यदि सर्दियों में वर्फ लाहौल में ज्यादा पड़ा हो तो पुनन में भागा नदी के बायें तरफ वालों का हल चलाना दायें तरफ वालों से 15 –25 दिन बाद ही हो पाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि भागा नदी के बायें तरफ वाला भाग में सूर्य की किरणें सीधी नहीं पड़ती हैं इस कारण खेतों में से वर्फ काफी दिनों के बाद ही पिघल पाता है।

SUSHEEL
&
COMPANY

Potato Seed Growers, Suppliers
& Commission Agents

Manali-175131, Distt. Kullu (H.P.)

Ph. : 01902-252478 (PP)

" फुन फोन्ड़ारे"

बः बि बोस कुट्रातोर,
यः बि यंगज़ कुट्रातोर,
रूह बि बः कुट्रातोर,
युग बि यः कुट्रातोर,
उई देशो सी मिउ खमज़े रूठे चेच़तोर,
चूड़ि पौको खम जप्पि चेच़तोर,
ब्याह शुचि धैणीतिंग तिर पिछ्री खरे चेच़तोर,
छोलो ए तास योज़िरिंग ज़ीर पूर बंगज़तोर,
मेंचिमिरे मंडल मीटिंग रिंग युवातोर,
गंगमिरे जिकि ठोपो लातोर,
फरजू कच्चांग खिगोप ततोर,
आउ कच्चंग ती ए चङः ततोर,
इच़ इच़ कटुरे मोड़े लातोर,
तां लः मुन्जे छाछे श्श्वातोर,
ब्याह रोहरिंग ब्याउ ढोल बेन्ज मिन्ज़तोर,
जिस्पे आंगमो– छैय – छैय रिंग– कोन्ज़ा खड़े लतोर,
कटु पटुतिंग हेन्दु गप्पा फासा मकन्ड्रतोर,
तरछे मरचेल अंग्रेजी प्रौवतोर,
न दीचि हेन्दु बोली ज़ेच़तोर,
न हेन्दु रीति रिवाज़,
दिरे मनविचं शुचि तोतोर,
नः स्वागलो तोतीर न दखतेऊ- शुतोर,
ब्याह रोह रिंग खम–मेश्र ज़ोंग भी ऋणशशु क्वातोर,
शगोग, शागुन, झोलन्– फोलनू– उइए चेच़तोर,
चि शुदा चि मशुदा शुन्गज़ि अपीमि मः,
शु मशु दिरे फुन फोन्डा शुरे,

फुन फोन्डारे :	ऐसे बच्चे/ नौजवान जो आम तौर पर घर के, गांव के रीति रिवाज़ से मतलब नहीं रखते।
मन बिचंग :	न इधर का न उधर का।

क्रमशः पेज नं0 59 पर

गीत

–सतीश कुमार लोप्पा

दी ची ल्हेइना, ग्यु सेम लेन्ज़ा,
चुड.का अच़्चा ईलीना।

क रड़. दोइ कूट्रा, चूडी कामा,
छड़.ज़ा अच़्चा अतीगा।

करड़. दोइ कूट्रा, कानू अमरिड.,
रहुम्ज़ा र्हुम्ज़ा छादीगा।

दी ची ल्हेइना––––––
गे: रड़. ब्योल्ज़ा, दी घाड़िड़.ज़े,
दु घाड़िंड़. अच्चा ईलीना।

गे: शेके तोऊ, सेमु निशाणी,
अउं केई लेन्ज़ा शीलीना।

दी ची ल्हेइना–––––––––
इमिरिड़. इल्दा, ग्यू सूराता,
टिरो तुई अच्चा आपोतो।

मड़.ड्ढुड़. अन्जे, ग्यु इम किन्ड्रा,
र्हिब्सा अच़्चा ईलीना।

दी ची ल्हेइना–––––––––––––।।

अनुवाद:

यह क्या किया , मेरा दिल लेके,
घर को चल दी तू।

तुझ से मिलने, मैं घर के काज,
तज कर आया हूं।

तुझ से मिलने, तेरी राह मैं,
तक तक हारा हूं।
यह क्या किया————————।
मुझसे भागी, इस गली से,
चली उस गली तू।

संजो के रखना, दिल की निशानी,
जो लेके चल दी तू।

यह क्या किया————————।
गर सोने जाओ, सूरत मेरी,

सपनों मे आके, मेरी नींद उड़ाके,
हो ली तू।
यह क्या किया'————————।

शेष पृष्ठ 57 से :-

शा खोग : पुराने ज़माने मे लड़के वाले शादी वाले दिन एक अच्छा भेड़ बकरे को मार कर उसके शव को काट कर बरात के साथ ले जाते थे और उसको लड़की के घर रीति रिवाज के मुताबिक काट कर लड़की के रिश्तेदारों में बांटते हैं। अब लड्डू का ज़माना है।

झोलूनु – फोलुनुः सुखा गेंदें के फूल का बनाया हुआ फूल जो शादी – ब्याह में पहनते हैं पर अत्यंत Artistic होता है।

झिकि – ठोपो चुल्हा चौकी व बरतन मांजना।

खिगोप– टोलैट

यह कविता आज के लाहुली नौजवानों की लाहुल की तेज़ी से बदलती मानसिकता, सामाजिक रीति रिवाज़ों के प्रति उदासीनता और बदलते मूल्यों को उजागर करने की प्रयास करती है।

– प्रेम

दु हज़यार रात

—बलदेव रापा

इता घुप्पन हज़यार रात, दोरिड. शिड.चिमि ट्रो मुग बजेकि। रातो अट्ठ – नौ आर शुचि शोतो। अचड. – कचड.कि मिन्हा मीरे धुईघा मुग बजेकिउ बिचड. दुड.गेरारे चोकसा रिचाडू, टोकठे अन्जे हग लातेर । ए चां रे................

ए ल्वाहर रे .... । ए छना लन अपि हकसु ?

तां ध्वांह्रे इ मेचिमि बमजितु घड़े शुचे बुप्सा - छड़.सा मुगए मुग शुचे हकेक्सातु हकां अति। ए अतिना ? उइरे आंऊ ? रूकचातोर। रड.गे चि शपोतो। एनो सोठए म। मीतू कचड. अपे फोआ य्हाउ अति। कपा कपा कू – टबरा रे भत्ते रागसे शिलि । गे छना अतिगा पताए म।

सन् 1948 ईसवीउ ढड.ला इलदा– इलदा ड.रग त्रुग्रग बे लगातार झड़ा तोई। य्हड.लो साजामेतिड. (चेत्र संकान्ति) रातरिड. योबरड. सामें फांडीउ नाढ़ड. तोरिड. शियारिड.जिबे इच्वा मुदे रिड्रिके अति। रात शुबे अच्चिला री अपि मतड.रीरे। धोंण मह्स री अपेला अन्जिए म। योबरड. लिड. भत्ते कप्ट्रा री बेन्डिड. पिचे इलि। रीउ इ मुकह् योबरड. नगरो हकां अति। दोइ इटु चांहतु जीहटु ल्वाहरतु चुड. तेपचे केरि।

चांहतु इच्वा योह् एनो सातिउ दगिउ कचड. कथा रेड्री इलजि तोई। दु षिडि. केशिरि। चुड. दोउ याह्– बाकू मेचिमि कटुतड. साते तोईरे, भत्ते तेबसा सिए इलिरे।

रीए रिसगतु चाला , रीज़ि धरति तुरपि चेके इ ल्वाहरतु इ गड.मि छना – छना पोगज़िआ बुगीतु लड.दिड. हुचा बचेकति। दोउ ककाए छमो कटु बू गूड़िड. लम्प कुरचा पोग्शातोकू। रेइ अमरिड.ए षुमला रीज़ी तेबचे केत्तो।

चुड. य्हड.दे इच्वा केषा इल्जह्। दु घरबा दचे सी इल्जह्। य्हड.देउ म्यों कका –छमो थले पोगशा। दोउ षिड.मि केषि, आउं पूरिरिड. दुपिचते, दु पूरि म दचा। दु पूरिउ इ भीति दचे फुग्चा हुचा इल्जह्। दु मेचिमि दु फुग्चा अच्वे हुचा हकेक्सा मीतु कचड. पिचा। दोई चेकतो, रागस अन्जे गिउ कका–छमो दोकुतु कटु, बाड़े कका भत्ते लेन्ज़ा शिल्दो।

अइसड. ल्वाहरतु चुड. इच्वा पूरि रड.गि शुबे रीज़ी थदु मा, तेप्चे केत्तो। रपे, रषेलकि मीचि साति ले जीरग–षुमरग थल दु लवाहरतु टबरारे षिडि. हुन्दोर।

गोरोमकि यम्बेउ, षड.मेउ मीचि साति ले तेराकिया थल तेबसा सी मीरे हुन्दोर। हत्र्यार रातो दि रीज़ी सेइमि मी सचे केरि।

प्राचीन लाहौल के संस्कृति के कुछ भूले बिसरे अंश

—शंति कुमार पुजारी

घूरे

1 बोला गूंशेना लगी हो जोगणी रे जातरे,
गूरे री गेई त्रोडे।

2 बोला जोड़ी न माणू वारि जोगु गये,
टाशी पड़ाशी रे पूछे।

3 बोला टाशी पड़ाशी बोला बोलांदे,
नंदि पुत्रु तेणि प्यारे।

4 बोला आगे चलूंदे द्रगे आ निशाणे,
पीछे चलूंदे नंदि गुरे।

5 बोला दाहिने न हाथे गूगले री धूपे,
बामें न हाथे अरूगा।

6 बोला चांननि लगोरी रिमाआं न भूमिआं,
सुरुगा भरौरि तारे।

7 बोला भलि करि नाच हो गूंशेरि धरनि,
मूंगा मोती करि हारे।

8 बोला भलि करि नाच हो, गूंशेरि गबरू,
पटुका प्यारि तैणि डौले।

9 बोला भलि करि नाच हो गूंशेरि याणि,
हिनाणि—मुनाणि तेणि बासे।

10 बोला साबे नाचुंदे रूकणु न देवणू,
डेरा नचुंदे नंदि गुरे।

1940 से पहले का लाहौलः—

जो देवी देवताओं का युग था गुर भट्ट का ज़माना था और तंत्र—मंत्र का समय था। उस समय देवी देंवताओं का जिस विधि से पूजा—अर्चना की जाती थी, वह लाहौल के सबसे बड़े गांव गौशाल जो चंद्रभागा के संगम में स्थित है। गांव गौशाल में सर्वप्रथम जो पुरातन डेहरा या जहां पर देवी की पूजा होती थी, वह '' तिलो माता'' थी। प्रति वर्ष ''तिलो माता' की पूजा अर्चना, मेला तथा योर आदि का आयोजन काफी अधिक होता था। गर्मियों में सबसे प्रथम मेला बैसाख के साजा यानि (शेकचुम) के दिन तिलो माता की जातरा हुआ करती थी। क्योंकि उन दिनों गौशाल के और लाहौल के चारों तरफ की धरती हरियाली से परिपूर्ण होती थी, और चारों तरफ क्वांटि, शेबला, लेबला, पोरलो के सुन्दर फूल खिले होते थे, जिसने लाहौल की धरती को स्वर्ग के समान बना दिया था। उस समय तीन प्रसिद्ध गूर हुआ करते थे, जिसमें एक यं—तोजिंग एक शांशा तथा एक वारि गांव से सम्बंध रखते थे। लेकिन 1920 के पश्चात् एक ही गांव यं— तोज़िंग से गूर आने लगा। यह गौशाल का पहला गर्मियों का जातरा होता

था जिसे शेकचुम जातरा या फूल जातरा कहते थे। उस मेले के लिए सालों से पहले तैयारियां की जाती थी। यह तैयारियां लोंगों के खाने पीने तथा रहने और उनके स्वागत समारोह आदि से जुड़ी होती थी। क्योंकि उस मेले में लाहौल के सभी गांवों से लोग आते थे। उस मेले में गौशाल गांव की लड़कियां जिनकी शादी गांव से बाहर हुई होती थी, वह तिलो माता की सेवा में भेंट लाया करती थी जो लाल, पीले वस्त्र, धूप–दीप, सोने चांदी के टीके आदि होते थे। तत्पश्चात मेले के आरंभ में पुजारी के घर के छत में एक भण्डार हुआ करता था, जिस में देवी की मूर्ती और जेवरात और वस्त्र आदि तथा गाजे–बाजे, नरसिंगा, नफरी होते थे। उन जेवरात तथा वस्त्रों को पुजारी एक टोकरी में डालकर भंडार से अपने सिर पर उठाकर आगे आगे गांव वाले खूब गाजे बाजे के साथ और गांव के हरिजन लोग जो बड़े निपुण और गुणी संगीतज्ञ होते थे जो बांसुरी वादक और नगारची तथा ढोल के साथ सब गांव के लोग सज धज कर मस्ती में झूमते हुए भंडार से डेहरा के प्रांगण में पहुंचते और वहां पहुंचते ही देवी का स्वागत–सत्कार हुआ करता था। दूसरे दिन देवी के रथ को फूलों से और सोने चांदी के मूरत और जेवर से सजाया करते थे। सजाने वाले गौशाल गांव के राणा खानदान से हुआ करते थे। गांव में से सभी महिलाओं को नहा–धोकर तथा सज धज कर डेहरा के सामने हरी भरी जमीन " चिरि दंजा " में फूलों के बीच बिठाया जाता था। ऐसी कहावत है कि महिलाओं के बीच में जोगणी देवी परियां बैठती थी। तब डेहरा के सामने सभी गांव वाले बैठते तथा गाजे बाजे वाले खूब बट–बाण बजाते और माता का जयकारा करते थे। इसी बीच गुरू चेला को देवी आती थी और खूब खेलते, जिसे दैवीय भाषा में बोल कहते थे। जिसमें आने वाले साल के अन्न–धन, वर्षा, बिमारी आदि के विषय में भविष्यवाणी करते थे। उसके बाद सखा आरंभ होता था जो निरंतर चलने वाला नृत्य व संगीत होता था। उसके बाद लोग डेहरा से झूमते नाचते गांव के बीच दवे पार्क, कुंभ या जिसे सवा कहते हैं, वहीं पर सरबा आरंभ होता है, जिसमें दो दो जोड़ी नकारची और एक पौन और दो–दो गुणिया यानि बांसुरी वादक इस लय में नाच शुरू करते जिसे सखा का नाम दिया जाता था। उस समय में दो प्रसिद्ध बंसी वादक थे जिनका नाम राम और भागू था। जब वह सखा शुरू करते थे तो ऐसा प्रतीत होता था कि वृंदावन में कृष्ण भगवान का रास लीला आंरभ हो गया हो और मानो धरती आकाश की ओर मिलने जा रही हो। जिसमें गांव के युवक तथा वृद्ध एक ही स्वर तथा लय में नाचते थे। वे एक बड़े गोल दायरे में मस्त होकर नाचते और पुरूषों के दायरे के बाहर महिलाएं खूब सज धज कर नृत्य करती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि गृह लक्षमियां धरती पर उतर आई हों। वे एक दूसरे के हाथ में हाथ डालकर नाचती थी जिसे "शाहणी" कहते थे। बहुत सी महिलाएं अपने हाथों में शुरू के धूप और फूल और वर्तनों में भरे हुए पेय को लेकर तथा वर्तनों में माखन लगाया होता था जिसे (छुंमर) कहते थे। गुरू तथा पुजारी गांव के सब युवकों तथा महिलाओं को घी का टीका लगाते हैं, जिसे अच्छा शगुन मानते है। इस मेले यानि जातरा को मनाते हुए कब दिन हुआ कब रात हुई पता ही नहीं चलता और तीसरे दिन यह मेला सम्पन्न होता है।

वेशभूषा

1 पुरूष वर्ग उस समय अधिकतर सफेद चोलू ही पहनते थे, जो पट्टी में बुर निकाला हो , जिसे (फुकते) पट्टी कहते थे। इसके किनारे पर एक काला कपड़ा लगा होता था जो 2–3 इंच का होता था जिसे (संजाप) कहते थे। इसके साथ स्लेटी या सफेद रंग के बास्कट और सफेद या स्लेटी रंग का पजामा पहनते थे। चोलू को "भूरा" या पटुका से बांधते थे। सिर में ऊनी "छिंका" रंग के लाहौली टोपी और उसमें पीले रंग के गेंदे के फूल जिसे (झोलणू) कहते हैं और सफेद टर टर के फूल कलगी नुमा बनाकर पहनते थे। यह लाहौल के नौजवानों का प्रमुख वेशभूषा था।

2 महिलाऐं आम तौर पर छिंका रंग के चोलू और उसी रंग के बास्कट या हरे रंग के बास्कट पहनते थे। चोलू में ज़री तथा संजाप लगा होता था। साथ ही वे काले या छिंका रंग के पजामें पहनते थे। वे शादी तथा देव पूजा अर्चना के समय तथा घर में किसी शगुन या प्रतिष्ठा के समय पुराना तथा प्राचीनतम जेवर पहनते थे। जिस तरह पुराने समय में दुल्हन को सजाया जाता था। सिर के बालों को इस तरह गूंथा जाता था जिसको बनाना एक मंझे हुए कलाकार को ही आता था। सिर के पिछले हिस्से पर चांदी के कटोरे नुमा सोने से मढ़ा हुआ एक आभूषण लगाया जाता था जिसे (मुलन) कहते थे। सिर के अगल बगल में चांदी के एक इंच चौड़ी तथा पांच इंच लम्बी जंजीर नुमा आभूषण सजाया जाता था जिसे (चिरका) कहते हैं। बाल की आखिरी चोटी (डन्नी) होती है उसमें तीन–चौथाई फीट तीन चार लम्बी जंजीरे होती है जो एक चांदी का पत्र एक वर्ग फुट का होता है। जिसे (दुंखेरचा) कहते हैं। चांदी की जंजीर को (छब) कहते हैं। इन्हे जोड़कर सजाया जाता है। माथे के दोनो तरफ फूल या लट्टू के समान आभूषण पहनते थे। जिनका रंग संतरे के समान होता था, जिसे (कपूर या पोशल) कहते है और कानों में सोने की बाली जिसे (तड़का) कहते हैं पहने जाते थे गले में सोने के ' गौ" पहने जाते थे जिसमें मोती भी लगा होता था। साथ ही वे मणि या टुक का हार पहनते थे जिसे (कंठी) कहते है। सिर पर घूघंटनुमा सफेद भूरा या सफेद ताणी का चादर पहना जाता था। यह लाहौल की प्राचीन परिधान में सजी तथा लक्ष्मी रूपा गृहणी की एक झलक है। एक हाथ में " छपकयन" मक्खन के " छंमर" से सजाया हुआ तथा पेय से भरा हुआ तथा एक हाथ में फूल "झोलणू" जो अपने भाईयों के चरणों में चढ़ा रही हो। यह है लाहुल की जतरों का सुन्दर दृश्य और सुन्दर यादें।

झड़ते हैं फूल फागुन के महीने में
हम तुमसे विदा लेते हैं सीने में एक दर्द लिए।

कमशः

......

शंति कुमार पुजारी "भाई साहिब केलांग सेला" के रचयिता है।

PANGI VALLEY – A BRIEF NOTE ON ARCHAEOLOGICAL EXPLORATION

- C. Dorje

Pangi, a tribal belt, unique in its grandeur and beauty is located in mid-Himalayas and constitutes one sub-division of Chamba District. The Valley lies between north latitude 32 33' and 33 19' and east longitude 76 15' and 77 02' and is bounded by Jammu and Kashmir in the north and the northwest, by Lahaul and Spiti district in the east, and Churah and Brahmour tehsils of the Chamba district in the south. Kilar is the headquarters of the Pangi Sub-division. The entire administration is being looked after by Resident Commissioner. This Valley is well connected through a motorable road all along the Chandrabhaga river. The approach to the Valley is also through two passes, Sach and Cheni. Sach pass (4416m) is the most commonly used by the pedestrians whereas the Cheni pass is mainly used by shepherds. This beautiful Valley has not been surveyed in terms of antiquity. Therefore an attempt has been made in this direction to locate and document the antiquarian remains for further studies/researches. The entire area right from Luj valley in the north upto Shaur, the southern most boundary of Pangi tehsil including almost all the valleys underlying and connecting the Chandrabhaga or Chenab river including forty three villages have been covered and twenty four villages have preserved the remains of archaeological interest.

In the Luj Valley about 15 km west of Kilar, a typical hill style temple dedicated to Seetala Mata was located at village Udani. The temple rectangular on plan and facing east and oriented east-west, has a garbhagriha, a porch with enclosed pradakshinapatha. It is raised on a high platform. The main deity is a mask of Seetala Mata and bronze figure of Durga. A miniature shrine is also attached to the outer wall towards south in the field. Towards right of the entrance of Seetala Mata temple are two carved pieces of stones in geometrical fashion and at the bottom is a cave with numerous tridents/Trishula. It is said to be the original place of deity. The temple can be ascribed to sixteenth-seventeenth century AD.

About half a kilometer west of Udani at Bishto, a typical hill style temple dedicated to Siva has been found. Facing south and rectangular in plan, it consists of a garbhagriha on a low raised platform. It hosts stone images of standing Siva, a Sivalinga and a small miniature wooden temple. Nandi, pada, trident, linga, etc. have also been found. There are two other temples, one dedicated to Sinhasani Devi and the other Seetala mata. Simhasani Devi temple is in typical hill style and facing east. It is in rectangular on plan and consists of a garbhagriha having trident and small bronze figures of Simhasani Devi and Siva-Parvati and a closed pradakshina. Both the temples are assignable to sixteenth-seventeenth century AD. Another finding is a fountain stone slab with an inscription in Sarada characters mentioning its erection in the year 81.

In the Sural Valley, at Kanwas about 24km west of Kilar, a temple dedicated to Seetala Mata and two fountain slabs were found. The temple is in typical hill style and facing southwest. Squarish on plan on a raised platform, it has a sanctum with a closed pradakshinapatha and a small store. It is ascribed to seventeenth-eighteenth century AD. Of the two fountain slabs, one having lotus medallions within square frame of interwined snakes is located about 30 m west of Seetala Mata. Temple while the other slab engraved with the figures of Siva, Ganesa, Hamsa, lotus, horse, fighter and intertwined snakes is located at a little distance from the earlier one.

At Sural Tai in the same Sural valley, another hill style temple dedicated to Nag Devta and cluster of memorial stones have been found. The temple, facing southeast and squarish on plan, has a garbhagriha with closed pradakshina and a small store. The wooden door frame of the sanctum is beautifully carved and assignable to eighth-ninth century AD. In front, there are numerous memorial stones in the form of stone slabs with rounded/pointed corners placed vertically. At Sural Bhatori, about 29 km from Kilar towards north east just above the village on hill side a Buddhist monastery locally known as Tashi Choling has been located. It has a prayer hall and a porch raised over a huge platform. Three stucco figures viz. Bodhisattva, Padmasambhava and Maitreya are in the sanctum besides wooden chorten, bronze images of three Dhyani-Buddhas, ferocious deities, Avalokitesvara, mandala, bowls, and

lama masks, lamp, drum, vajra, bells and other religious items. Walls and ceiling of the monastery have mural paintings depicting deities of Buddhist pantheon. It can be ascribed to fifteenth-sixteenth century ADAt Ganghit about 4 km west of the Kilar town of opposite the local bus stand a baoli with fountain stone slabs and few memorial stones were located. It has three fixed fountain slabs and two engraved stones. These fountain slabs are decorated with lotus medallions and human figures while the stone slabs are engraved with horsemen and standing human figures. Another fountain slab with carvings like lotus medallions, wavy lines and peacocks drinking water was found. About five and half kilometer west of Kilar town in village Tattan, an engraved memorial stone standing vertical with a capstone and a typical hill style temple, Walin Mata Ka Temple, have been found. The temple is facing east and oriented east west. It is rectangular on plan and consists of a sanctum with closed pradakshina. In the complex, there is another miniature temple dedicated to Ganesa in typical hill style. Facing east and oriented east-west it has a simple chamber with tapering superstructure. It hosts a figure of elephant and few pebble stones. On stylistic grounds, these temples are ascribable to sixteenth-seventeenth century AD.

At Kilar, number of archaeological remains in the form of fountain slabs, temples and Buddhist chortens were found. Of the fountain slabs - one each has been found within the premises of P.W.D. rest house, and near bus stand. These slabs are engraved with floral motifs, human figures and peacocks drinking water, etc. Another fountain slab showing lotus medallions and floral motifs has been found below Government staff quarters. Buddhist Chorten is located near Government Hospital. It is found enclosed within wooden structure. Of the temples, one is dedicated to Dehant Nag and the other to the Siva. Dehant Nag temple is in typical hill style and facing south. It is oriented north south and squarish on plan and has a garbhagriha and an open pradakshina on a low raised platform. The wooden doorframe of garbhagriha is equisitely carved ascribable tc fifteenth-sixteenth century AD. About half a km northeast of Kilar at Kufa typical hill style dedicated to Sihnasani Mata Temple is found. Facing northeast it is rectangular on plan and consists of a garbhagriha with enclosed pradakshina. It can bc datable to seventeenth-eighteenth century AD. Besides, three fountain stone slabs with bas -relief, two memorial stones and one each of memorial structure and carved stones have also been located at the village. Memorial structure, built of stone with various mouldings in form of miniature stone structure with a male and female figure on top is located within the field. Of the memorial stones, one still carrying a capstone is found near mela ground.

In Hundan valley, number of loose and fix fountain stone slabs, baolis, memorial stones and structures, wooden temples, Buddhist monasteries, stupas and manewalls have been found. At Khwas/Kawas about 11 km, east of Kilar, a covered baoli was found and the fountain slabs are inscribed in Sharda Character. Three fountain slabs were found in Nagin locality. At Basar, a baoli with six fountain slabs showing lotus medallions, geometrical designs, floral motifs and birds and a memorial structure, built of moulded stone depicting a standing male figure on tope in namaskara mudra and part of a broken fountain slab depicting standing male figure on top with other figure were found. One baoli and cluster of stone slabs with capstones were found at Seri Bartwas.

In the upper Parmar locality, two pieces of carved stone in bas relief with one showing a standing male and female figures with a Siva-linga on top while the other shows a standing male and female figures in traditional dresses; and two fountain stone slabs showing lotus medallions and geometrical designs, birds and inter-twined snakes were found. At Ghatwas about 14 km east of Kilar, near modern water baoli, three fountain slabs showing floral motifs, lotus medallions, human and serpentine figurines were located.

A temple dedicated to Siva was found at Tundru about 17 km east of Kilar. The temple is about 2 km west of village Udan Bhatori on the way towards Ghatawas. Facing south and oriented east west, with rectangular temple comprises of a garbhagriha with Siva-linga and an open pradakshina. The temple appeared to be restored in recent years by using earlier temple stones. At Bhatwas, abouty 18 km east Kilar fountain slab depicting lotus medallions, a Siva-linga and male and female figures etc. were found. On the way between Bhatwas and Tundro, few Buddhist chortens, inscribed mane walls and inscribed stones were also found. Buddhist Monastery, locally known as Phunchok-Chholing is at Udan Bhatori. Facing south-southeast, it has double storeyed chamber with numerous out-houses. The monastery appears to have been renovated recently.

Antro is the last village in the valley and is about 19 km east of Kilar where south facing temple dedicated to Siva was found. It is squarish on plan and comprises of a garbhagriha and an open pradakshina. It can be dated to sixteenth-seventeenth century AD. Buddhist chorten was also found in between Udan Bhato[illegible] and [illegible]ro.
About 8 km from Kilar at Sidh ka Dera on Kilar-Udaipur road, a temple dedicated to Siva was located. It is in typical hill style and facing north and has a sanctum enclosed with covered verandah. Siva linga is enshrined in the sanctum. This temple appears to be built by using materials of earlier temple. In one of the window openings there are two wooden slabs carved with dwarapala figures, one carrying an inscription and a human figure. There is another miniature shrine, facing north and oriented north-south with the image of Ganesa. At Sach, about 13 km from Kilar, a double storeyed dharamshala of wood was found. Within the complex is another wooden structure now used as a workshop by blacksmith. Outside the complex, there is a temple dedicated to Siva. Two Siva-lingas are enshrined in the sanctum and in front are few stone sculptures including figure of nandi.

The temple dedicated to Mindhal Mata is located on the left bank of Chenab river at Mindhal village about 16 km from Kilar. It is in typical hill style, facing east and oriented east west. Squarish on plan it has a garbhagriha with double pradakshina on a raised platform. It hosts figures of Chamunda Devi, Siva and Seetala mata in stone, a tiger each in silver and wood, bells and swords. The temple is dated to fifteenth-sixteenth century AD. There are two other shrines dedicated to Siva. Both of them are also typical hill style temples and facing north south and squarish on plan, hosting a Siva-linga. In front is a figure of a tiger in bronze, a stone Siva-linga, Nandi, Ganesa and an elephant.

At Purthi on Kilar-Udaipur road is a temple dedicated to Balasani Devi is located. It is in typical hill style and facing south and oriented north south. Squarish in plan it has a garbhagriha, with enclosed covered pradakshina and a mandapa a later addition. The doorframe of garbhagriha is elaborately carved and the figure of Ganesa is in the centre of lalatabimba. It is datable to fifteenth-sixteenth century AD. Outside the complex near entrance, there is an inscribed stone in Takri with date Samvat 6313. On the top is a standing male figure of Mangtu - the first priest of the temple. Other two inscriptions in Takri script are seen over wooden members some distance away from the temple.

At Suglawas, about 30 km from Kilar on Kilar-Udaipur road a typical hill style temple locally known as Bamuva Nag Temple was found. It is facing east and oriented east west and has a garbhagriha with closed pradakshina with wooden figure of tigers placed all along. A miniature Naga temple, facing south and oriented north south was also found. It is squarish on plan with small sanctum. Besides, there are two other temples dedicated to Seetala Mata and Bharadi Mata. These temples were built in between sixteenth-eighteen century AD on stylistic ground.

The survey of the Pangi Valley revealed rich cultural heritage which have been preserved by the inhabitants of the region for the posterity.

- C. Dorje

The Manner I Explan Certain Things:

Dictionary : A place where divorce comes before marriage.
Smile : A curve that can set a lot of things straight.
Father : A banker provided by nature.
Doctor : A person who kills your ills by pills and kills you with his bills.
Boss : Someone who is early when you are late and late when you are early.
Philosopher : A fool who torments himself during life, to be spoken of when dead.

Navneet

Navneet : A new member to Kunzom. Kunzom heartily welcomes and solicits self-composed material from Navneets (Ed.).

शाशुर गोन्पा का संक्षिप्त इतिहास

–ड.वंग नोरबु

शशुर गोन्पा लाहौल में प्राचीनतम गोनपाओं में से एक है। इस गोन्पा की स्थापना 16वीं शताब्दी के मध्य में हुआ था । इस गोन्पा का मुख्य संस्थापक डुबछेन देवा ज्ञाछों थे। इस गोनपा का नाम देवा ग्याछों आने से पूर्व शशुर गोंनपा ही था। बाद में देवा ग्याछों ने गोनपा का नाम बदल कर टशीश्शुगलिंग रख दिया। अभी गोनपा का नाम पत्र व्यवहारों में टशीश्शुगलिंग लिखा जाता है। शाशुर या शुगलिंग का नाम इस लिए पड़ा क्योंकि गोनपा के चारों ओर देवी–दियार वृक्ष के घने जंगल होने से पड़ा है, क्योंकि स्थानीय बोली में देवी दियार को शुर तथा भोटी भाषा में शुगपा कहते हैं।

यह गोनपा समुद्र तल से 12000 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। सर्दियों में यहां पर वर्फ भी अधिक पड़ती है। अधिक ऊंचाइ के कारण ठण्ड भी होती है। गोनपा की भूमि अथवा क्षेत्र ब्रजयोगिनी के काय के आकार में हैं। इस का सिर गोनपा के ऊपर की चोटी '' मछुथो'' नामक स्थान पर है। पद केलंग में पड़ता है। वास्तव में यदि हम नदी के उस पार से देखें तो भूमि का आकार ब्रजयोगिनी की मुद्रा में ही दिखता है। इसके अतिरिक्त इस गोनपा के बायें ओर एक चोटी है। जिस को स्थानीय लोग क्यर– क्योगस कहते हैं। इस चोटी को साक्षात चक्रसम्भार मानते हैं। देखने पर चक्रसम्भार बज्रयोगिनि के साथ आलिंगन के मुद्रा में देखने को मिलता है। गोनपा के पार सामने प्रसिद्ध तीर्थ डिलबुरी का पवित्र पहाड़ पड़ता है। बताया जाता है कि उक्त क्यर– क्योगस तथा डिलबुरी के बीच सोने का पुल लगाकर देवता आते जाते हुए कई सिद्ध पुरूषों ने देखा है।

डुबछेन देवा ग्याछो ने शाशुर गोनपा की ही स्थापना नहीं की बल्कि उन्होनें लाहौल में लोडुग निकाय का प्रचार –प्रसार कर घार क्षेत्र तथा तिनन क्षेत्र में भी लोडुग सम्प्रदाय की नींव रखी। डुबछेन देवा ग्याछो जंस्कर के पदुम राजा के पुत्र थे। उन को बचपन से ही लामा बनाने के लिए राजा ने बरदन गोनपा में भेज दिया था। उन्होंने इस गोनपा में बचपन से लेकर गोनपा के नियमानुसार सारा अध्ययन पूरा किया। वे बाद में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए अथवा लोडुग निकाय की सम्पूर्ण शिक्षा ग्रहण करने के लिए भूटान चले गये थे। वहां पर उनका तत्कालीन अवतारी लामा अथवा राजा का पदाधिकारी '' ड.वंग दुहजोम दोरजे '' से भेंट हुआ। उनसे पूर्ण शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात वे जंस्कर लौट आये। यहां पर वे जप –तप , सिद्धी , समाधि में कई वर्षों तक व्यस्त रहे। वे कई वर्षों तक बरदन गोनपा का प्रधान लामा रहे। वे तत्कालीन लदाख के लामा तगछ़ंग रसपा तथा राजा सेड.गे नमज्ञाल के समकालीन थे। वे प्रधान लामा पद से मुक्त होकर धर्म प्रचार के लिए जुट गये। उन्हों ने जंस्कर के अतिरिक्त लाहौल की ओर भी प्रस्थान किया। सर्व प्रथम वे शाशुर गोनपा में आये थे। यह गोनपा उनको तीर्थ स्थल व अन्य सुविधाएं उपलब्ध होने से उनको यह स्थान अच्छा लगा। देवा ग्याछो़ धर्म के सर्व गुणों से सम्पन्नता होने पर यहां के लोग बहुत प्रभावित हुए। यहां के लामा भी इनसे शिक्षा ग्रहण करने के लिए इनके पास आने लगे। उन्होंने यहां पर एक गोनपा का निर्माण करने के लिए अपनी इच्छा व्यक्त की और लामा तथा गांव के लोग भी इनसे सहमत हुए। काफी बड़ा गोनपा का निर्माण हुआ जिस में भगवान बुद्ध तथा गुरू पदमासम्भव की बड़ी –बड़ी मूर्तियां स्थापित की गई है। यहां के लामाओं ने मेहनत करके रहला नामक स्थान से कागज़ बनाने के लिए वृक्ष के छालें लाकर

कागज़ बनाये और अपने हाथों से प्रज्ञा पारमिता के 12 पोथियां, विनय के 13 पोथियां तथा एक पोथी सुवर्ण अक्षरों में '' स्वर्ण कल्प'' नामक पोथी भी लिख दिया है। ये पोथियां अभी भी गोनपा में सुरक्षित हैं। देवा ज्ञछो ने अपनी पूरा जीवन शाशुर गोनपा में ही बीताए और उनका देहान्त के बाद उनके शिष्यों ने उनकी स्मृति में एक मूर्ति उनके समरूप बनवाया और यह मूर्ति अभी भी गोनपा के मुख्य देवालय में दर्शन के लिए उपलब्ध है। जिनकी इच्छा अवश्य पूरी होती है। इस मूर्ति के अतिरिक्त मुख्य देवालय में उनके एक चैत्य (छोतेन) भी बनवाया है। जिसमें उनके पवित्र अस्थियां रखी हुई हैं।

देवा ग्याछो के समय में शाशुर गोनपा में कुल सौ के करीब लामा हुआ करते थे। गोनपा तैयार होने के बाद बरदन गोनपा के आधार पर शाशुर गोनपा का नियम बनाया गया। वार्षिक पूजा पाठ छ़ेशु का 'छम' भी आरम्भ किया गाया। इसके अतिरिक्त लामाओं का पदवी का क्रम कनिष्ठ से लेकर वरिष्ठ तक का क्रम जो एक लामा को प्रधान लामा के पद तक पहुंचने के लिए कुल 18 वर्ष लगते हैं। यह परम्परा अभी तक चली हुई है।

इस गोनपा में परम्परागत छम का भी आयोजन किया जाता हैं जिसको ' छ़ेचु' के नाम से जाना जाता है। 'छ़ेचु' यानि भोटी पंचांग के अनुसार पांचवां महिने के दशमी को गुरू पदमासम्भव की जयन्ति के रूप में मनाया जाता है। कहा जाता है कि यह 'छम' पहले नहीं हुआ करता था, यह केवल एक पूजा 'छ़ेचू' के नाम से किया करते थे जो डुबछेन देवा ग्याछो आने से पहले यह गोनपा एक छोटा सा ञिड.मा निकाय का हुआ करता था। छ़ेचु ञिड्.मा सम्प्रदाय के काल से चला आ रहा था। बाद में देवा ग्याछो ने इस दिन यहां पर हिमिस की तरह छम का शुरूआत कर दिया। तबसे लेकर छम का परम्परा अभी तक चला आ रहा है। छ़ेचु की पुरानी परम्परा भी अभी तक चला है जिसके लिये गांव केलंग वालों की ओर से अलग से पूजा के लिए सामान व खाने पीने की व्यवस्था किया जाता है।

यह छम महाकाल मण्डल का छम है। इस छम के लिए तीन दिन तक छम का अभ्यास किया जाता है। छ़ेचु से एक दिन पूर्व बिना मुखौटा के व लिवास में 'छम' किया जाता है जिसको 'डिग' कहते हैं। यह छ़ेचु वाले दिन की तरह ही पाठ के साथ– साथ सम्पन्न करना होता है। इस तांत्रिक अनुष्ठान में महाकाल के चित वाक तथा काय के तीनों मण्डलों की पूजा होती है जिसको –– थुग – सुड़.– कुई किलखोरगी छोगा '' कहा जाता है। अन्त में काय मण्डल द्वारा चित व वाक मण्डल को गुह्म नृत्य प्रस्तुत किया जाता है जो तांन्त्रिक विधि विधान के अनुरूप होता है। इस छम को ' बगछम' यानि मुखौटा छम कहा जाता है। इसके पश्चात 'ज़ोर छम' जो काली टोपी पहन कर छम किया जाता है। यह एक तांन्त्रिक विधि द्वारा महाकाल मण्डलों से अनुमति लेकर धर्म का संहार करने वाले प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से बिघ्न डालने वाले शत्रुओं का वद्ध कर इसकी मृत शरीर का अमृत मे परिवर्तित कर महाकाल व उनके समस्त परिमण्डलों को भेंट कर दिया जाता है। तीसरे छम को ' ड.छम' कहा जाता है। इस छम में पूर्व ज़ोर छम के ही लिवास में प्रत्येक के हाथ में ' ड.' यानि विशेष ढोल का ' छम ' होता है। इस नृत्य के साथ किये जाने वाले पाठ को ' कुल' कहा जाता है। कुल का अर्थ है उक्त मण्डलों के प्रेरित कर धर्म में विघ्न डालने वाले शत्रुओं को उस क्षेत्र से दूर भगाना अथवा उनका वध किया जाना हैं। बौद्ध धर्म के अनुसार प्रत्यक्ष रूप से शत्रु का वध नहीं किया जाता परन्तु उनसे पैदा होने वाला विघ्न का वध किया जाना होता है। इस विधि को ही शत्रु वध कहा जाता है। वास्तव में प्रत्यक्ष रूप से किसी का वध या हत्या नहीं की जाती है।

क्रमशः पेज नं0 73 पर

खंगसर राजघराने का " छोदपा " प्राचीन मुखौटा नृत्योत्सव

–ठिन्ले नमज्ञाल शास्त्री

हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों की भान्ति लाहौल – स्पिति क्षेत्र में जहां सर्दियों से प्राचीन आदिम संस्कृति विभिन्न काल – कमों में पल्लवित, पुष्पित एवं विकसित होती रही। उस बौद्ध पूर्व आदिम संस्कृति का अपना इतिहास सम्भवतः पौराणिक जनश्रुतियों एवं किंवदन्तियों पर आधारित है। जो अब तक निर्वाध रूप से चली है। सम्पूर्ण लाहुल में बौद्ध धर्म के प्रादुर्भाव के पश्चात संस्कृति की दो धाराओं, आदिम संस्कृति –बौद्ध संस्कृति का विकास हुआ। परन्तु कालान्तर में हिमाचल के अन्योन्य जिलों से हिन्दु संस्कृति के प्रभाव पर निःसन्देह एक अर्वाचीन संस्कृति का पुनः आविर्भवि हुआ। अतः अन्त में एक मिश्रित संस्कृति का उदय हुआ जिसमें सभी धार्मिक , दैविक और साम्प्रदायिक मान्यताओं को एकीकृत कर श्रद्धा और आस्था के साथ पूजन विधि की परम्परा विकसित हुई।

इस मिश्रित संस्कृति में प्राचीन आदिम संस्कृति एवं भोट बौद्ध संस्कृति पर आधारित तोद खंगसर राजघराने में " छोदपा " स्थानीय नाम – पूजा–पाठ मुखौटा नृत्योत्सव ग्रीष्म और शरद काल मे दो बार होता है। यद्यपि इस मुखौटा नृत्योत्सव का अपना लिखित एवं प्रामाणिक इतिहास नहीं है। पौराणिक दन्त कथाओं और जनश्रुतियों पर आधारित इस नृत्योत्सब के शुभारम्भ के सम्बन्ध में अनेक मत हैं, परन्तु यह जनश्रुतियां कितनी सही एवं वास्तविक है कहना कठिन है। आमतौर पर दो जनश्रुतियां आज भी प्रचलित है।

पहली जनश्रुति के अनुसार चूंकि यह सुखौटा नृत्योत्सव बौद्ध पूर्व आदिम संस्कृति का एक अंश माना जाता है। सम्पूर्ण लाहौल में जिस प्रकार विशेषतः प्यूकर, कारदंग, जोबरंग , मडग्रां , त्रिलोकनाथ, उडगोस् आदि गांवों में ' योर ' नामक प्राचीन नृत्य कला का मंचन होता है। जो कि प्राचीन समय में नाग जाति के लोगों द्वारा जो लिंग पूजक थें, सभ्भवतः प्रजनन एवं उर्वरक सम्प्रदाय के समुदाय से सम्बद्ध थे। इस नृत्योत्सव में प्रजनन काल से मरणासन तक कई बार बीज की बुआई से लेकर फसल काटने तक की सभी प्रक्रिया को बखूवी अभिनीत किया जाता है। प्रायः इस नृत्यकला का मंचन साधारण लोगों के द्वारा होता है। खंगसर राजघराने का " छोदपा " "नृत्योत्सव "योर नृत्य से अति परिष्कृत एवं आधुनिक रूप लिये हुए हैं। जो पौराणिक दंतकथाओं और भोट प्रागेतिहास में वर्णित भोट देश में मनुष्य के उदभव काल के सम्बन्ध पर आधारित है। इस मुखौटा नृत्य का मंचन सम्भवतः चौदहवी शताब्दी से पूर्व ग्राम जिस्पा के नजदीक " थोतंग" नामक स्थान पर " योर " नृत्य के रूप में होता था। परन्तु कालान्तर में भारी बाढ़ के कारण पूरा क्षेत्र जल में प्रवाहित हो गया। ऐसी मान्यता है कि तत्कालीन राजघराने के लोग वहां नृत्योत्सव के अवलोकनार्थ सजधज कर घोड़े पर सवार होकर जाते थे। बाढ़ के कारण पश्चात में ग्राम गैमूर से एक कि0 मी0 दूर "ते थब " नामक स्थान पर इस नृत्य का मंचन शुरू हुआ। यदि यह श्रुति पूर्णतया सही है तो निश्चित रूप से कहना होगा कि यह नृत्य " योर " का ही एक रूप था। ठाकुरों ने पुनः अपने प्रभुत्व एवं आधिपत्य को जमाने हेतू उसे वहां से स्थानान्तरित कर खंगसर राजमहल में ले आया। सम्भवतः उस समय तक वर्तमान में मौजूद भव्यमहल का निर्माण हो चुका था।

दूसरी जनश्रुति के अनुसार जब से तथाकथित ठाकुर अर्थात् राजघराने के लोग यहां लाहुल में आये, तब से इस नृत्योत्सव का शुभारम्भ हुआ। ऐसी मान्यता है । सम्भबतः अपनी शूरवीरता एवं पराक्रमी प्रवृति के कारण इन्होंने अपना प्रभुत्व जमाना शुरू किया। तदनन्तर वे यहां के शासक बन गये। उन्होंनें अपनी प्रभुता, बर्चस्व एवं सामान्य जनता के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने के लिए यहां बौद्ध धर्म को अपना लिया। फलस्वरूप अपनी पुरातन संस्कृति एवं धार्मिक परम्परा को यथावत् बनाये रखने और स्थानीय लोगों के साथ धार्मिक एवं शासकीय सम्बन्ध बनाये रखने के लिए " यर छोद" ग्रीष्मकालीन नृत्योत्सव एवं " गुन छोद "शारदकालीन नृत्योत्सव के नाम से अभिहित बौद्ध तान्त्रिक विधि विधान के द्वारा पूजा – पाठ करते हुये प्राचीन पौराणिक दंतकथाओं पर अधारित नृत्यकला का प्रदर्शन करना शुरू किया। राजघराने के लोगों द्वारा बौद्ध धर्म के आत्मसात कर लेने के पश्चात वे स्थानीय देवी –देवताओं को भी उतनी श्रद्धा के साथ पूजने लगे। इसलिए राजघराने के कुल देवताओं में आदिम संस्कृति पर आधारित "फेला " (फसल का देवता) फला वीर – पितृ देवता दरदंगची कुंन्दूरू, गेपाड., ताड.जर, युलला सोनमपा और फेला लराड. प्रमुख है। पश्चात में बौद्ध धर्म से प्रभावित होने पर प्रमुखतः ईष्ट देवी दीर्घायुष्मति की प्रतिमा बुद्ध शासन की अभिवृद्धि एवं राजमहल की परिरक्षा के लिए गृहतल में सम्पूर्णतया अंधेरे कक्ष में स्थापित की गई है। उसकी पूजा अर्चना भोट पंचाग के अनुसार सातवें मास की पूर्णिमा के दिन ग्रीष्मकालीन " छोदपा " और भोट पंचाग दूसरे मास की पूर्णिमा के दिन शरद कालीन " छोदपा " नृत्योत्सव के रूप में की जाती है। सम्भवतः इसी कारण इस नृत्योत्सव का नामकरण पश्चात में " छोदपा " रख दिया है।

" यरछोद " ग्रीष्मकालीन नृत्योत्सव

सदियों से चली आ रही परम्परानुसार " छोदपा " के दिन प्रातः साराड. ग्राम के सारंग योगमा परिवार के ज्योतिष ओनपो – स्थानीय नाम परम्परागत जयोतिष एवं तान्त्रिक विद्या में प्रवीण के आगमन पर ही ईष्ट देवी दीर्घायुष्मति के द्वार को खोला जाता है। परन्तु कालान्तर में उपरोक्त वंश से ज्योतिषी परम्परा के अनुगामी न निकलने के कारण गैमुर गोन्पा के प्रधान लामा द्वारा मुख्य द्वार को खोलने की परम्परा चली। प्रधान लामा के साथ आए अन्य लामा गण मुख्य द्वार और किवाड को खोलकर वहां दीर्घायुष्मति देवी को बौद्ध तांत्रिक अनुष्ठान की विधि से पूजा अर्चना करते हैं। इसके पश्चात प्रधान लामा नृत्य के लिए तैयार लोगों को मुखौटे आदि पहन कर नृत्यशाला मे जाने का आदेश करता है। नृत्य करने वाले पुरूष केवल ग्राम खंगसर, सारंग, और कोलंग के निवासी होते हैं। बाहर के लोग इस नृत्य करने पर ईष्ट देवी –देवताओ का प्रकोप बढ़ जाता है। और व्यक्ति विशेष पर दैविक दोष लगता है।

" फू –छोदपा " बन्दर और राक्षसनी का नृत्य

इस नृत्योत्सव में सर्व प्रथम बन्दर और राक्षसनी का नृत्य होता है। जैसा कि भोट शास्त्र मणिकबुम, ज़ोददून आदि धर्म ग्रन्थों में और भोट इतिहासकारों ने भोट देश में प्रथम मानव प्रदेश काल में पिता बोधिसत्व कपि हलुमहुर और माता राक्षसनी के जोमो डोलमा संसर्ग से मानव जाति का उदभव हुआ। ऐतिहासिक परम्परा एवं किंवदन्ती को सांकेतिक एवं प्रतीकात्मक रूप देते हुए इस नृत्य का मंचन किया जाता है। दोनों हीं मुखौटे काष्ठ निर्मित है। कलात्मक दृष्टि से दोनों ही मुखौटे सुन्दर और

आकर्षक हैं। आज जो सबसे पुराना बन्दर का मुखौटा है सम्भवतः पन्द्रहवीं शताब्दी में निर्मित हैं और खण्डित अवस्था में हैं। परन्तु वर्तमान में उपयुक्त बन्दर के मुखौटे को देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि इसका निर्माण काल तीन सौ वर्ष्र से अधिक नहीं है। इस सम्बन्ध में कहा जाता है कि इन मुखौटों का तत्कालीन काष्ठ कला में प्रवीण " मेमे कसे " आठहरवीं शताब्दी ने बनाया था जबकि अब भी एक काष्ठ निर्मित बन्दर का मुखौटा अर्धनिर्मित अवस्था में विद्यमान है।

फू – छोदपा नृत्य में सर्वप्रथम ढोल – नगाड़ों के विशेष राग पर दोनों नर्तक पिता कपि और माता राक्षसनी जोमो डोलमा के मुखौटे को पहन कर नृत्यशाला छोमखाड. में प्रणाम करते हुए आते हैं। दोनों ही अपने हाथ में डण्डा लिये ढोल नगाड़ों के लयबद्ध संगीत के साथ नृत्य का प्रदर्शन करते है। जहां पर वे कुल बारह बार छोमखाड. की परिक्रमा करते हैं। जिसमें पहले तीन चक्कर के बाद " तोड. राग" या " ताड. राग" ल्हब्दग – देव पुजारी के साथ कुछ गीतकारों द्वारा श्रृंखला बद्ध होकर धीरे–धीरे लोकगीत के साथ (नृत्य करना) का नृत्य होता है। दूसरे तीन चक्कर में हाथ में लिये डंडे को नृत्य की विशेष कला के साथ नृत्यशाला के चारों ओर लगे स्तम्भ पर मारकर तोड़ा जाता है। इसके बाद " डच़ग " स्थानीय अनाज कुठ्ठ से निर्मित मादक पेय को " दोन " पानी के बीच उगने वाला पौधा नामक पौधे के डन्ठल जो कि अन्दर से खोखला होता है, के द्वारा पिया जाता है। अन्तिम तीन चक्कर में बहुत ही आकर्षक नृत्य शैली के साथ अखरोट को तोड़ा जाता है। जिसके बारे में यह कहा जाता है। कि क्षेत्र में स्थित भूत –प्रेत , राक्षस आदि को पैरों तले रोंद दिया जाता है।

हिम सिंह और बन्दर का नृत्य

हिम सिंह काल्पनिक सिंह जो यति के समान सर्वदा बर्फ में वास करता है के नृत्य पर ऐसी जनश्रुति है कि सदियों पहले राजघराने के किसी व्यक्ति ने आखेट करते समय खंगसर राजमहल के विपरीत दिशा में स्थित पहाड़ जिसका नाम " लराड. " है, वहां एक हिम सिंह को नृत्य करते देखा था। कालान्तर में उसी से प्रभावित होकर यहां के ठाकुरों ने उसी नृत्य का यहां प्रदर्शन करने की ठानी। उपरोक्त " लराड. " नामक पहाड़ का आज राजघराने के लोग कुल देवता या देवी मानकर पूजते है। जिस पहाड़ के टूटने पर राजमहल में पूजा अर्चना करने की परम्परा आज भी प्रचलित है। हिम सिंह और कपि अपनी चपलता का प्रदर्शन करते हुए सिंह के केसरों को पकड़ने का प्रयत्न करता है। जो कि अतिदर्शनीय होता है। नृत्यशाला में तीन चक्कर लगाने के पश्चात " डच़ग " पीते समय उसके उधर उछल कूद करने का हास्यपद प्रदर्शन होता है। हिम सिंह बारह चक्कर , नगाड़ों का विशेष राग पर नृत्य का प्रदर्शन करते हुए लौट जाता हैं। जबकि बन्दर पुनः डण्डे को तोड़ कर नृत्यशाला से लौट जाता है।

बग चोड. – चोड. (छोमो कून्कू)

जैसा कि धार्मिक एवं सांस्कृतिक सामंजस्यता को स्थापित करने में लगे तत्कालीन राजघराने के लोगों ने इस उत्सव को अत्यधिक रोचक एवं लोकलुभावन बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी हैं। इस नृत्य में छोमों कू– कू की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यद्यपि कुल सात मुखौटे धारी नर्तक अपनी कला का प्रदर्शन ढोल – नगाड़ों के विशेष राग पर करते है। इनमें सबसे पहले बूढ़ा मुखौटा धारी नर्तक जो हाथ

में डण्डा और कांसे की छोटी थाली लिये पूरे टीम का नेतृत्व करता है। उसके बाद एक गद्दी चम्बा प्रान्त के लोग मुखौटाधारी नर्तक जो हाथ में कुल्हाड़ी और एक डण्डी लिये पूरे समय दर्शकों के हास -- परिहास का केन्द्र बिन्दु बना रहता हैं गदि्दयों के परम्परागत वेशभूष के अनुसार नर्तक अपने शरीर के अधीभाग को नग्नावस्था में रखकर नृत्य करता है। बच्चे विच्छु पौधे से नंगी टांग पर मलते रहते हैं जिससे क्षुब्ध एवं विचलित होकर वह नृत्यशाला में बच्चों और नारियों को भगाते हुए अपनी विशिष्ट नृत्य शैली का प्रदर्शन करता है। उन दोनों के पीछे पांच मुखौटे धारी नर्तक पंच पूजनीय देवी ''छोदपे लमोड.'' जो कि क्रमशः, लाल, पीला, नीला, सफेद और अंतिम में हरा मुखौटा पहने नृत्य शाला में आते हैं। सभी नर्तक तीन बार नृत्य शाला की परिक्रमा करते हुए ''तोड. राग'' के बाद '' श्शोनो /शौणी'' तेज गति का नृत्य नामक नृत्य कला का प्रदर्शन करते हैं। पुनः तीन चक्र नृत्य करने के पश्चात विराम लिया जाता है। इस दौरान नतर्क इधर उधर दर्शकों को पकड पकड कर जबरन रूपये वसूलते हैं । सभी नर्तकों द्वारा एकत्रित धन सहित का रात के समय मिल बैठकर मदिरा आदि का सेवन करते हैं। जबकि अंतिम मुखौटाधारी नर्तक '' कोको छोमो'' को संपूर्ण धनराशि मिल जाती है। ऐसा कहा जाता है कि कोको छोमो अपने मुखौटे से बाहर अपनी जीभ निकाल पाने के कारण उसे आम नर्तकों से ज्यादा धन राशि मिलती है। पुनः नृत्य शाला में नृत्य को विशिष्ठ कला का प्रदर्शन कर तीन बार नृत्य शाला की परिक्रमा करते हैं और अंततः स्थानीय परंपरा अनुसार प्रमाण करते हुए लौट जाते है। इसी के साथ नृत्य उत्सव समाप्त हो जाता है परंतु पाठकों की रूचि के लिए इस नृत्य की सबसे जुडी कुछ विशेष उलेखनीय बाते हैं जिनका जिक्र करना अनिवार्य है। नृत्य के बाद हिम सिंह नृत्य में भाग लेने वाले तीन नर्तक और '' फुछोदपा'' नृत्य में भाग लेने वाले दो नर्तकों को राज घराने में ही भोजन मदिरा आदि की व्यवस्था की जाती है।

जैसा कि पूर्व कथानुसार राज घराने के लोगों का प्रभुत्व संपूर्ण तोद घाटी में था सभी इनकी चाकरी करते थे। इस विशेष पर्व के दौरान तिन्नों गांव से लेकर मेह गांव तक सभी खाड.चुंग छोटा घर वाले डच़ग बनाकर लाते और पिलाते है।

ग्रीष्म कालीन नृ़त्य उत्सव में तिन्नो ग्राम वासी सभी दर्शकों को ''छांड.'' स्थानीय मादक पेय बनाकर लाते और पिलाते थे। इस दौरान तिन्नो ग्राम वासी नृत्य उत्सव की समाप्ती के बाद तीन पत्ते के सत्तु से निर्मित चतुष्कोण ''बराड.गेस'' या ''डड.गे'' शिवलिंग के समान सत्तु द्वारा निर्मित फुट भर कर ऊंचा पिंड बनाकर लाते हैं। नृत्य शाला के उपर विशिष्ट मेहमानों को इंगित करते हुए ''ज्ञाल्पो दड.'' ज्ञलमो हुरमो सुम–लामा–पोनबो दाड.
छागठे दोठे थमस्चद ला छोद'' इस प्रकार का विशेष सुर और लय के साथ ''श्शगुन'' के रूप में ''डड. गेस'' के छोटे छोटे टुकडों को आकाश की ओर उत्सर्जित करते हैं। शेष बचे ''बरांड.गेस'' को नृत्योत्सव में ढोल नगाडों को बजाने वाले लौहारों को दे दिया जाता है।

छोदपा नृत्योत्सव के कुछ दिन पश्चात किसी शुभ दिन को ''नमचीन'' उत्सव का आयोजन किया जाता है। पुरानी परंपरा अनुसार ''छोदपा'' और ''नमचीन'' के बाद ही घास और फसल की कटाई की जाती थी। अन्यथा उसे अपशकुन माना जाता था परंतु इधर कई वर्षों से इस नृत्य उत्सव को मनाना बंद कर दिया है। जिसके चलते पुरानी संस्कृति, सांस्कृतिक परंपरा लुप्त होती जा रही है। यहां पर विशेष वस्तु की अधिकता के कारण शरदकालीन नृत्योत्सव के बारे में लिखना उचित नहीं समझता हूं। उपरोक्त विषय पर विस्तार से लिखने का प्रयास अगले अंक में करूंगा।

अंत में युवा पीढी को इस ओर विशेष आग्रह करना चाहता हूं कि आधुनिकता के साथ हमारी प्राचीन संस्कृति जो हमें विरासत में मिली है, के संरक्षण और संवर्धन में अपना योगदान देना चाहिए अन्यथा हम देर सवेर इस प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर को खो देंगे।

....

शेष पृष्ठ 68 से :-

इसके अतिरिक्त इस गोनपा में हर महीने में एक –एक पूजा करने का नियम है। इनमें से मुख्य रूप से काग्युर का पाठ कुरिम, लमा छोदपा, कंगसोल आदि पूजा महत्वपूर्ण है। इन पूजा पाठ में समस्त लामाओं को सम्मिलित होना अनिवार्य हैं।

डुपछेन देवा ग्याछो के पश्चात लाम टशी तम्फेल वर्तमान लामा स्तगनां रिनपोछे का पूर्व अवतार भी लाहौल में आये थे। उन्होंने मुख्यतः गन्धोला गोनपा (गुरू घण्टाल) का जीर्णोधार किया था। और साथ ही साथ शाशुर गोनपा का भी उद्धार किया व देख –भाल भी करता रहा। उन्होंने गन्धोला गोनपा के लिए प्रधान लामा बरदन गोनपा जंस्कर से भेजने का नियम बनाया जो लाहौल के ' लोडुग ' निकाय का प्रधान लामा माना जाता है। उप प्रधान लामा यानि 'उज़द ' का लाहौल से चयन कर शाशुर गोनपा में नियुक्त करने का नियम बनाये गये। यह नियम अभी तक चला हुआ है। लाहौल के लामाओं का सम्बन्ध जंस्कर के बरदन गोनपा तथा जोड.खुल से बना रहा। यहां से कई लामा जंस्कर के तत्कालीन ज़ोड.खुल लामा कुंगा होज़ेर तथा लामा करमा तनज़िन से शिक्षा दीक्षा लेते थे। इनमें से लामा छेवंग केलंग तथा लामा ठिनले बीलिंग के मुख्या थे। इन दोनों लामाओं ने शाशुर गोनपा का नियम का पूरा पालन पूरी ज़िन्दगी की। इनके देहान्त के बाद इस गोनपा में इनकी मूर्तियां भी बनाये गये है। इन लामाओं ने अपने गुरू ज़ोड.खुल लामा कुंगा होज़ेर की एक बड़ी मूर्ति 'शाशुर गोनपा में बनवायें गये । यह मूर्ति अभी भी गोनपा के मुख्य देवालय में स्थापित है। गुरू शिष्य का यह परम्परा कई वर्षो तक चलने के बाद केलंग के लामा " ड.वंग लोडोई " लामा " दोनडुप " तथा लामा " दमछोई रिनछेन " को विचार आया कि लाहौल में प्रचलित लोडुग निकाय भूटान से सम्बन्ध है क्यों न भूटान जाकर इस निकाय का विधि –विधान का सही अध्ययन कर लें। इस उद्देश्य से वे भूटान गये और वहां पर 7– 8 वर्ष तक अध्ययनरत रहें।

वहां पर सम्पूर्ण शिक्षा व पूजा का विधि –विधान का अध्ययन कर वापिस लाहौल आकर नये तरीके से पूजा पाठ चलाये। यह परम्परा अभी तक यहां पर प्रचलित है।

ठाकुर देवी सिंह
एक सरल, सत्य और स्पष्टवादी राष्ट्रसेवक

–तोबदन

मेरा जन्म 15 अप्रैल 1921 को तनज़िन के घर, बर्गुल गांव, लाहुल में हुआ। हमारा घर ठाकुर (शाशनी) नाम से जाना जाता है।

हमारे पूर्वज बहुत समय पहले तांदी' से गुशाल आए। वहां से हमारा परिवार बर्गुल आया। इस घर के पूर्वज पहले गुशाल में रहते थे। घर खुशहाल और सम्पन्न था, नाम था ' टोहुगी'' । तब उस घर में एक सदस्य गूंगा उत्पन्न हुआ जो जायदाद का हकदार था। उन्होंनें गुशाल में और जमीन खरीदी। तब उनको बर्गुल में किसी रिश्तेदार से ज़मीन का हिस्सा मिला। गुशाल में कोई पुरूष हकदार नहीं रहा इसलिए वे वर्गुल़ में ही रहने लगे।

पहली कक्षा मैंनें मूलिंग से पास की। तब यह स्कूल दूसरी श्रेणी तक था। फिर मैं कुल्लू में कटराईं आया। वहां आठवीं का वर्नेकुलर फाइनल 1936 में पास किया। वहां से मैं कुल्लू आया और गवर्नमैंट हाई स्कूल कुल्लू से 1940 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। ठाकुर शिव चन्द मिडल में मेरे साथ थे। तब वे लाहौर गए, पढ़ने के लिए। नाल्डा के रामलोक भी गए।

रामलोक स्वतन्त्र विचार का व्यक्ति था। उन्होंने 1940 में डी0 ए0 वी0 कालेज लाहौर में दाखिला लिया। उन्होंनें मिलिट्री स्कीम (युनिवर्सिटी आफिसर कोर) में प्रवेश लिया और कम्पनी सरजेंट का पद प्राप्त किया। परन्तु उनके पिता ने उन्हें फौज में जाने से मना कर दिया। 1944 में उन्होंने इकोनोमिक्स और पौलिटीकल साईंस के साथ बी0ए0 पास किया। इसके पश्चात उन्होंने लाहुल स्पिति के लिए समाज सेवा का कार्य आरम्भ कर दिया। उन्होनें लाहुल स्पिति ' यंगमेन एसोसिएशन ' बनाया। मैं इसका प्रधान था और रूड़िंग के पं0 बसन्त राम इसके सचिव थे। सामाजिक, राजनैतिक व स्थानीय समस्याओं को इस संस्था ने अपनाया।

1947 में लाहुल – स्पिति से दिल्ली में कन्स्टीच्युयेंट असैम्बली ने प्रतिनिधि बुलाए। हम तीन जने वहां गए। मैं, बसन्त राम और ठाकुर शिव चन्द। सितम्बर में दंगा होने पर हमें वापिस आना पड़ा।

1935 में लाहुल– स्पिति को आंशिक रूप से अलग रखा गया था। 1948 में ड्राफ्ट आउट लाईन के लिए एक डेपूटेशन दिल्ली गया जिसका मैं प्रमुख था। निर्मल चन्द और निहाल चन्द साथ में थे। हम पंडित जवाहर लाल नेहरू और अयंगर जी से मिले जो कंस्टीच्यूएंट असैंबली और कांग्रेस के प्रेज़िडेंट थे। हमने क्षेत्र के लिए मांग रखी कि इसे शेड्यूल्ड स्टेटस मिले, एडवाईजरी कौसिंल बने और उसे पर्याप्त शक्ति प्राप्त हो।

द्वारकानाथ कचरू कश्मीर मामले के पर्सनल सैकरैट्री और डी0 पी0 धर, जो शेख अबदुल्ला के मन्त्रालय में पार्ल्यामैंट्री सैकरीट्री थे, ने हमसे पूछताछ की। उन्होंने हमारे मैं बहुत दिलचस्पी दिखाई। धर तुरन्त फौजी कुमुक भेजने के लिए श्रीनगर से जहाज में आए थे। पाकिस्तान ने 11 मई 1948 का जोज़ीला पर अधिकार कर दिया था। और लद्दाख में दाखिल हो गए थे। हमारी बात 14 मई 1948 को हो रही थी।

लद्दाख में फौज भेजने के लिए भी बात हुई। हमको नई दिल्ली में वेस्टर्न कमांड हैड कर्वाटर में ले जाया गया और जनरल करयाप्पा से मिलाया गया। लम्बी बातचीत के पश्चात जनरल करयाप्पा ने

2/8 गोरखा राइफल को अतिरिक्त फौज और शस्त्र के साथ भेजना स्वीकार किया। तीन चार दिनों के पश्चात यह कालम चल पड़ी। मैंने गाइड का काम संभाल लिया था। हरी चन्द महावीर चक्र से विभूषित थे और होशियारपुर से सम्बन्धित थे। हमको वाहनों का प्रबन्ध करना था।

जून के माह में रोहतांग और वारालाचा जोत पर अभी वर्फ थी। केलांग से आगे सेना का सामान ढोने के लिए हमने स्वयं सेवक ढूंढे। लेह तक प्रति खच्चर पचास रूपये देने का वायदा किया। लोगों की भावना और सहयोग के कारण 600 घोड़े हमने एकत्रित किये। एक माह में एक घोड़ा 150 रूपये कमा लेता था। मौसम भी अच्छा हो गया था। एक सप्ताह के पश्चात लेह से 33 मील पहले पलादून फंस गए। कुछ गोरखा सैनिक मारे गए और यह घेरा तोड़ा गया। इस बजह से लेह खाली किया गया। उनको दो स्टेज पीछे माछीलांग लाया गया। मेजर खुशाल के साथ मैं लाहुल वापिस हुआ।

1959 में जब चीन ने तिब्बत पर कब्जा किया हमारी सीमा के साथ के इलाकों यथा अल्मोड़ा, गड़वाल, किन्नौर और लाहुल स्पिति के ऊन आदि के व्यापारियों के प्रतिनिधियों का एक दल रामनगर, उतर प्रदेश में एकत्रित हुआ। और उन्होंनें सलाह– मशविरा की। उनको इस घटना के कारण काफी आर्थिक हानि हो रही थी। मैं, जाहलमा के टशी राम और शांशा के टशी दवा के साथ, डेलीगेशन का प्रमुख बना। उन तीन दिनों में एक एसोसिएशन बनाया ' द हिमालयन बार्डर पीपल्स एसोसिएशन ' जिसका मैं प्रधान था। परन्तु भौगोलिक और आर्थिक कठिनाइयों के कारण एसोसिएशन प्रगति नहीं कर सकी। तब हर जगह से एक– एक आदमी चुनकर पांच आदमियों का एक डेपूटेशन बनाया गया और हम प्रधानमंत्री से मिले। प्रधानमंत्री ने हमें आश्वासन दिया कि हमारे व्यापारियों की तिब्बत में रक्षा की जाएगी। चीन उस समय हमारा मित्र था।

1952 में देश में प्रथम जनरल इलैक्शन हुआ। वोट दिसम्बर में पड़ने थे। लाहुल के लिए कलाथ और बशिष्ट में दो पोलिंग स्टेशन बनाए गये थे। हमने इस व्यवस्था का विरोध किया और मुख्य चुनाव अधिकारी विष्णु भार्गव, जो उस समय कुल्लू में ही थे, को तथा अन्य अधिकारियों को लिख कर, रास्ता खुल जाने तक पोलिंग स्थगित करने के लिए प्रार्थना की। हमारी मांग को उपेक्षित किया गया। हमने चुनाव का बहिष्कार किया और काले झण्डे से विरोध किया। यह कार्यवाही हमने कुल्लू में सव डिविजन ऑफिस में किया। साथ में हमने मांग की कि लाहुल – स्पिति के लिए अलग से सीट दी जाए। दूसरा यह कि जब मौसम खुल जाए तभी पोलिंग कराया जाए तथा लाहुल – स्पिति को केन्द्र शासित प्रदेश घोषित किया जाए। हमारा संघर्ष जारी रहा। हमें डी0 सी0 कांगड़ा की ओर से धमकी दी गई। हम अपने उद्देश्य में डटे रहे। मैनें और ठाकर शिव चन्द ने जलूस का नेतृत्व किया। लाल चन्द, बसन्त राम, और सोमदेव भी हमारे साथ शामिल हो गए।

सन् 1952 में लाहुल स्पिति के लिए जालन्धर डिविजन के कमिश्नर ए0 एल0 फलेचर ने ट्राईबल एडवाईजरी कौंसिल का प्रस्ताव दिया। हमें यह स्वीकार नहीं था। जबकि हमारे क्षेत्र को आम चुनाव से उपेक्षित रखा जाने लगा और उसके लिए उचित समाधान नहीं ढूंढा जा रहा था। तत्पश्चात कमिश्नर एस0 सी0 व एस0 टी0 , एल0 एम0 श्रीकान्त ने लाहुल का दौरा किया। उन्होंने कुछ मीटिंग की। जिनके पश्चात कुछ लाहुल के विकास की बात की गई। जैसे कि सड़कें बनाना, सिंचाई के काम आदि तथा स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए स्टाइपंड। इनका निर्णय कौसिंल करेगा। लाहुल के जनजातियों का नाम भी बदल कर बौद्ध तथा स्वांगला रखा गया।

ट्राइवल कौंसिल का गठन इस प्रकार हुआ। मुख्यमंत्री इसका चैयरमैन था तथा चीफ सेकरेटरी इसका सचिव था। इसके 2/3 सदस्य चयनित थे तथा एकतिहाई नांमाकित किए गये थे। इसका प्रथम गठन 1952 में हुआ। इसकी पहली मीटिंग 1952 में मनाली में हुई। मुख्यमंत्री भीम सेन और मुख्य

सचिव नबाव सिंह आए। एक प्रस्ताव था कि सभी विकास के कार्य विभाग करे। दूसरी मीटिंग 1953 में केलंग में हुई भीम सेन रोहतांग पार करके आए, घोड़े पर सवार होकर तथा पैदल चल कर । यह मुख्यमंत्री की पहली यात्रा थी। दूसरी मीटिंग में वही प्रस्ताव दोहराये गये। प्रथम कौसिंल के मैम्बर थे :– 1. देवी सिंह 2. शिव चन्द 3. बसन्तराम 4. फुड़ा से लाल चन्द 5. प्रताप चन्द 6. मुन्शी सजा राम 7. गुमरंग से प्रेम चन्द 8. नोनो टशी 9. छेडुब तथा 10. लोबज़ंग अंगरूप।

मुख्यमंत्री ने प्रस्ताव को मान लिया। उन्होंने कहा कि यह शक्तियां एम0 एल0 ए0 तथा एम0 पी0 में निहित नहीं हैं बल्कि केवल ट्राइवल कौसिंल के सदस्यों मे ही नीहित हैं दो वर्ष बाद यह शक्तियां वापिस ले ली गई। 1954 में मैनें वी0 डी0 ओ0 के रूप में सरकारी सेवा मे प्रवेश ले लिया था।

1966 में असैंबली का चुनाव हुआ। मैं स्वतन्त्र उम्मीदवार के तौर पर खड़ा हुआ और कांग्रेस प्रत्याशी निहाल चन्द के विरूद्ध जीत प्राप्त की । लाहुल – स्पिति की सेवा का सुनहरा मौका था। मैं 1972 में स्वतन्त्र रूप से लड़ा। एक सप्ताह राम लाल जी के साथ घूमने के पश्चात मैं लता ठाकुर से हार गया। स्पिति सारा एक तरफ हो गया। जिस बजह से मैं चुनाव मे हार गया। मै स्वतन्त्र प्रत्याशी था।

1977 में मैं जनता पार्टी के टिकट पर लड़ा। जीत कर आया और मुझे केबिनेट में शामिल किया गया। मुझे फोरेस्ट, सहकार, जेल तथा ट्राइवल विकास के विभाग दिये गये। कुछ विशेष कारणों से तथा कुछ पार्टी के स्वार्थी व्यवहार के कारण, अधिक समय तक नहीं रह सका। अप्रेल 1979 में मैनें, विचित्र सिंह और श्यामा शर्मा ने पार्टी से त्याग पत्र दे दिया।

1980 में मैं कुछ अन्यों के साथ ठाकुर राम लाल के अनुरोध पर, जो उस समय मुख्यमंत्री के पद संभाले हुए था, कांग्रेस में शामिल हो गया। 1982 में कांग्रेंस का सदस्य होकर चुनाव जीता। मुझे केबिनेट में शामिल किया गया और वन मंत्री का पद दिया गया। 1983 में जब सत्ता का परिवर्तन राम लाल के हाथ से वीरभद्र के हाथ हस्तान्तंरित हुआ तो मैं अपनी पूर्वावस्था में बना रहा।

उक्त लेख ठाकुर देवी सिंह जी के साथ शिमला में उनके सरकारी निवास स्थान में 19 फरवरी 1985 को हुई एक बातचीत के दौरान प्राप्त जानकारी पर आधारित है। इसमें देश की आजादी के समय तथा तुरन्त बाद के लाहुल के इतिहास के कुछ महत्वपूर्ण तथ्य उदघाटित हुए हैं। ठाकुर देवी सिंह के चरित्र के कुछ पक्ष जिनका लोग प्रायः जिक करते हैं वह हैं उनकी सादगी, सच्चाई, इम्मानदारी, लगनशीलता और कर्मठता तथा अन्य भी बहुत कुछ। ऐसे चरित्र आज के समय में विशेष रूप से जिस क्षेत्र में वे कार्यरत थे मिल पाना बहुत कठिन है।

ठाकुर देवी सिंह विधान सभा सत्र के अन्त मार्च 1985 तक मंत्री पद पर बने रहे। उसी वर्ष असैंबली के चुनाव में वे चुन कर आये और 11 नबम्बर 1989 को कुल्लू में अचानक तबीयत खराब हो जो के पश्चात उनका स्वर्गवास हो गया। इस समय वे एम0 एल0 ए0 थे।

बर्ष 2003 में उनका बेटा ठाकुर रघुबीर सिंह, कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में एम0एल0ए0 चुने गये।

वर्ष 1947 में लाहुल और लद्दाख के वीर सैनिकों का लद्दाख के बचाव के लिए पाकिस्तान से युद्ध

–तनज़िन छकदोर

15 अगस्त, 1947 को भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। परन्तु कारगिल और कश्मीर के अन्दर शेरे कश्मीर शेख मुहम्मद अब्दुल्ला के नेतृत्व में पाकिस्तान के विरूद्ध, जिसके घुसपैठिये सैनिक यहां आ गये थे, कारवाई करने का निर्णय किया गया था।

27 अक्तूबर 1947 को कश्मीर और लद्दाख भारत में सम्मिलित किए गए। यद्यपि 1 नबम्बर, 1947 के दिन गिलगित स्काउट ने भारत के विरूद्ध मुहिम छेड़ दिया था और गिलगित के अन्दर पाकिस्तान का झण्डा फहरा दिया गया। उस समय गिलगित के अन्दर साम्प्रदायिक दंगा होने का समाचार सुन कर लद्दाख में भी जनता में डर उत्पन्न हो गया। इसके अतिरिक्त खपूलू में पाकिस्तान की फौज पहुंच जाने से भय और बढ़ गया था। उस समय पं0 डोलू –जो संभवतः कश्मीर सरकार की ओर से नियुक्त एक अधिकारी था, गिलगित से भागकर लद्दाख पहुंचा। उनकी विद्वता को देख कर भारत सरकार ने उनको लद्दाख के निरीक्षक का पद प्रदान किया । तब उन्होनें पाकिस्तान में से युद्ध का भय खत्म करने के लिए " लददाख यंग मैन बुद्धिस्ट एसोसियेशन" के प्रमुख कालोन (अधिकारी) छेवांग रिंगजिन के नेतृत्व में कारगिल के अधिकारियों तथा भारत सरकार दोनों को प्रार्थना पत्र भेजा। इसके पश्चात वे लद्दाख में जगह जगह घूमें। लोगों में एकता का भाव जगाया। और एकत्रित होकर पाकिस्तानी फौज के साथ मुकाबला करने के लिए उनमें हिम्मत पैदा किया। पंडित डोलू लद्दाख की जनता को शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित तथा परियोजना बनाने में कुशल थे। उनकी तथा लद्दाख की जनता के प्रार्थना पत्र के अनुसार डोगरा रेजिमैंट में सैनिक अधिकारी मेजर पृथी चन्द और अठारह सैनिक शीत ऋतु के मध्य में जोजी दर्रा पैदल पार करके 12 मार्च 1948 को लेह लद्दाख में पहुंचे। वे सब लद्दाख की जनता में जाति, धर्म, संस्कृति की समान भावना के द्वारा उनके भीतर युद्ध का भय कम करने तथा उन्हें सुरक्षा प्रदान करने आये थे। उनके साथ एक लद्दाखी इंजिनियर सोनम नोरबू भी जोजीला दर्रा पार कर पैदल लेह पहुंचे थे।

मेजर पृथी चन्द ने लेह में पहुंचने के बाद जनता के लिए बहुत सारे कार्य किये। सबसे पहले जनता की हिम्मत बढ़ाने के लिए लेह दुर्ग में भारत का झण्डा फहराया। दूसरा कार्य अपने देश की सुरक्षा तथा युद्ध का भय दूर करने के लिए लद्दाख के प्रत्येक गांव, कस्बा तथा इलाके के कोने कोने से हर घर से एक एक व्यक्ति सैनिक प्रशिक्षण लेने के लिए आने का अनुरोध किया।

लद्दाख के देश भक्त बहुत सारे जनता निर्भय होकर सैनिक प्रशिक्षण केन्द्रों में सैनिक प्रशिक्षण लेने आने लगे। तीसरा, तब उन्होनें सैनिक प्रशिक्षण केन्द्रों जैसे खलाचे, सस्पोल, बेमी, लेह, छुशोद, नुबरा इत्यादि के प्रशिक्षण केन्द्रों में जाकर निरीक्षण किया और इनमें प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले सैनिको को एक शीर्ष नैशनल गार्ड का नाम प्रदान किया। प्रशिक्षण लेने वाले युवकों को अनेक प्रकार के हथियारों को चलाने में प्रशिक्षण देकर 15 दिन के अन्दर दुश्मन से लड़ने की उनमें क्षमता उत्पन्न कर ली गई थी।

दूसरी ओर इंजिनियर सोनम नोरबू ने लेह के निकट एक नया हवाई अड्डा तैयार कर दिया था और 26 मई 1948 के दिन एयर कमांडर मेहर सिंह, में जनरल क0 एस0 थमैय्या जीओसी श्रीनगर डिविजन, आदि एक डकोटा जहाज़ में सवार प्रथम उड़ान से लद्दाख के हवाई अड्डे पर उतरे और जनता ने बहुत जोश से उनका स्वागत किया।

उससे दस दिन पहले पाकिस्तान के बहुत सारे सैनिक कारगिल में पहुंच चुके थे। इसलिए अपने देश में विदेशी शत्रु के भय से बचने के लिए लेह– लद्दाख में एक हवाई अड्डा होना अत्यावश्यक अनुभव किया गया। उस समय पाकिस्तान के बहुत से सैनिक कारगिल से लेह की ओर प्रस्थान कर चुके थे। उसी समय भारतीय सेना के मेजर खुशाल चन्द के नेतृत्व में खलाचे पुल पर पहुंची।

20 मार्च 1948 के दिन भारत तथा पाकिस्तान के फौजों के बीच खलाचे पुल पर लड़ाई हुई। पाकिस्तान के फौज की संख्या अधिक होने तथा उनके पास उतम अस्त्र शस्त्र होने के कारण उनसे लडने में भारतीय सेना को काफी कठिनाई हो रही थीं। मेजर खुशाल चन्द ने पाकिस्तान के सैनिकों को चकमा देकर खलाचे पुल को आग लगा कर 2 सुबेदार नष्ट कर दिया। इनके पश्चात भीम चन्द और मेजर खुशाल चन्द ने दुश्मन की फौज का बन्दूक के सहारे उस पुल के पार छः दिन तक रोक कर रखा।

उस समय लद्दाख के नुबरा की ओर बुमदंग के पार वारी तथा चारूक दरिया पर पाकिस्तान के फौजी पहुंचने का समाचार प्राप्त हुआ। नुबरा की तरफ सुरक्षा की ज़िम्मेवारी सुवेदार भीम चन्द को दिया गया। उन्होंने नैशनल गार्ड के सैनिकों को लेकर नुबरा की ओर प्रस्थान किया। वहां पहुंच कर उन्होंने दुश्मन पर हमला बोल दिया। गिलगित स्काउटस के सैनिकों को मार डाला और उनसे चार बन्दूक और अन्य बहुत सारा सामान छीन कर ले आए।

उसके बीच में खलाचे की तरफ पाकिस्तान की फौज का बहुत जोर था और भारत के सैनिकों को पीछे हटाते हुए तरू के निकट पहुंच गये थे। तरू लेह लद्दाख से बहुत निकट है। इस परिस्थिति को देखकर तरू के तरफ लड़ाई रोकने के लिए नुबरा से सुबेदार भीम चन्द को तुरन्त बुलाया गया और वे तरू पहुंच गए। उस समय सुबेदार भीम चन्द न होने से नुबरा की जनता के मन में डर का आभास हुआ। यद्यपि 17 वर्ष के नुबरा के एक युवक छेवांग रिगजिंन ने नुबरा की तरफ पाकिस्तानी फौज के साथ युद्ध लड़ना स्वीकार किया। तत्पश्चात दश्मन के साथ युद्ध करके विजय प्राप्त किया और भारत सरकार ने उन्हें महावीर चक्र से सम्मानित कर एक वीर योद्धा के रूप में उनको पहचान दी। सन् 1948 में छपी मुहम्मद युसुफ आईदी एम0 ए0 द्वारा लिखित बलतिस्तान पर एक नज़र पुस्तक में दर्ज है कि सन् 1948 में भारत तथा पाकिस्तान दोनों के बीच में युद्व होने पर पाकिस्तान पराजित हुआ। जिसका श्रेय पाकिस्तान की गुप्तचर विभाग की रिपोर्ट के मुताबिक 17 वर्ष के एक युवा सैनिक छेवांग रिगजिंन को दिया गया है।

मेजर पृथी चन्द के लेख के अनुसार सन् 1948 की लड़ाई में भीम चन्द को तरन क्षेत्र की जिम्मेबारी सौंपी गई थी। नुबरा क्षेत्र को सेनापति छेवांग रिन्छेन तथा नुबरा के एक वीर योद्धा को सौंपा गया। नुबरा की लड़ाई में वीर सैनिक छेवांग रिन्छेन ने गिलगित स्काउट के सेनापति मोटा हसन तथा अन्य दो सेना अधिकारियों को मार डाला। और उन्होनें भारत के बहुत सारे सैनिक होने का आभास दिलाकर तथा होशियारी से पाकिस्तान के शक्तिशाली सैनिकों के एक बटालियन को दो महीने तक वहां रोके रखने में सफलता हासिल की।

पं0 डोलू ने लद्दाख से दिल्ली जाकर पं0 जवाहरलाल नेहरू से मुलाकात की और लद्दाख में हो रहे लड़ाई की उन्हें लगातार विस्तार से समाचार देते रहे। एक जुलाई 1948 को मेजर हरी चन्द के नेतृत्व में गोरखा बटालियन द्वितीय के 278 सैनिकों का दल मनाली की ओर से होकर लेह पंहुचा। मेजर हरी चन्द के साथ भेजा हुआ सैनिक कुमुक के कारण लद्दाख में लड़ रहे लाहुल – स्पिति के सैनिकों तथा लद्दाख की जनता के मन में विश्वास तथा अपूर्व हिम्मत उत्पन्न हो गया। इसलिए सुबेदार भीम चन्द को तरू से पुनः नुबरा को भेजा गया।

मेजर हरी चन्द एक कुशल और लड़ाई में निपुराताता प्राप्त वीर सैनिक थे। वे वास्गो मैं स्थित पाकिस्तान द्वारा स्थापित तोप को नष्ट करने में सफल हुए। तत्पश्चात मरखा होकर लामायुरू पहुंचे। वहां पहुंच कर दो सौ घोड़ों के बोझ के बराबर पाकिस्तानियों द्वारा रखा हुआ अस्त्र शस्त्र के भण्डार को नष्ट कर दिया।

25 नबम्बर 1948 को कारगिल से भारतीय फौज का एक बटालियन जोजी दर्रा पार कर लद्दाख पहुंचा। नया सैनिक कुमुक पहुंचने से पाकिस्तान के फौजियों की हिम्मत टूट गई। यद्यपि 31 दिसम्बर 1948 के दिन भारत तथा पाकिस्तान दोनों ओर से युद्ध विराम की घोषणा कर दी गई। पाकिस्तान ने नुबरा से अपनी फौज हटा दी और भारत ने भी सुबेदार भीमचन्द तथा जमादार छेंवाग रिन्छेन के नेतृत्व मे चल रहे फौजों को नुबरा से वापिस बुला लिया गया।

सन 1948 मे पाकिस्तान और भारत की लड़ाई में लड़ने वाले बीर सैनिक जिन्होनें युद्ध में असाधारण बीरता का प्रदर्शन किया था, उनको भारत सरकार की ओर से सैनिक तमगे प्रदान करके सम्मनित किया गया। 17 वर्ष के छेवांग रिन्छेन को महावीर चक्र, मेजर खुशाल चन्द को महाबीर चक्र, सुबेदार भीम चन्द को बीरचक मेजर पृथी चन्द को बीर चक्र, और सुबेदार तोपगे राम को बीरचक्र के तमगों से विभूशित किया गया । इनमें से छेवांग रिन्छेन लददाख से तथा शेष सभी लाहुल से सम्बन्धित थे। पृथीचन्द, खुशाल चन्द और भीम चन्द आपस में रिश्तेदार हैं। लद्दाख में लड़ाई के दौरान भीमचन्द की धर्मपत्नी का देहान्त होगया। फिर भी वे देश की रक्षा में सीमा पर लड़ाई पर व्यस्त रहे और घर नहीं आये। लड़ाई समाप्त होने के पश्चात उन्होनें अपनी बेटी का विवाह समजातिय व समान संस्कृति वाले एक होनहार लद्दाखी युवा से करा दिया। इन महावीरों ने देश के इतिहास में दूसरों के लिए एक मिसाल पेश किया है।

लेफ्टीनेंट कर्नल पृथी चन्द, एमवीसी (रि0)
एक बहादुर और देशभक्त योद्धा की कहानी

–ठाकुर पृथी चन्द

मेरा जन्म 1911 में खंगसर गांव स्तोद में हुआ। केलांग मिडिल स्कूल से प्राईमरी की शिक्षा प्राप्त की । सन 1921 में मेरे पिता रायबहादुर ठाकुर –अमर चन्द जो उस समय लाहुल के बजीर थे की मृत्यु हो गई और मेरी माता जी का भी उसी वर्षं स्दर्गवास हो गई। तब मेरे बड़े भाई ठाकुर अभय चन्द ने बजीरी का भार संभाला और वे मेरे संरक्षक भी हो गए। मैनें गर्वनमैंट हाई स्कूल कुल्लू में पांचवी कक्षा में दाखिला लिया और 1929 में दसवीं कक्षा पास की । मैं आगे शिक्षा ग्रहण नहीं कर सका क्योंकि मेरे भाई अभय चन्द को दिमागी बीमारी हो गई थी। तब मेरे बड़े भाई ठाकुर प्रताप चन्द लाहुल के बजीर बने और मैनें घर की देखभाल करनी शुरू कर दी।

मेरे भाई ठाकुर अभय चन्द ने टेरिटोरियल बटालियन 11/17 डोगरा में जालन्धर में प्रवेश किया। वह लैफ्टीनेंट थे। और उन्होंनें केवल लाहुली सिपाहियों की एक राईफल कम्पनी का गठन किया। सभी लाहुली सर्दियों में तीन महीने के लिए सैनिक ट्रेनिंग लेने जाते थे। 1929 में बीमार हो जाने के पश्चात मेरे भाई प्रताप चन्द ने बटालियन में प्रवेश लिया और उन्हें कमीशन प्राप्त हुआ। वे इस बटालियन में बतौर कैप्टन 1942 तक सेवा करते रहे। सन 1935 में ठाकुर प्रताप चन्द, लाहुल के बजीर के समय , वहां के ऊन के व्यापारियों को बड़ी हानि का सामना करना पड़ा । ऊनकी कीमत पन्द्रह रूपये प्रति मन तक गिर गया। व्यापारियों ने मेरे भाई से इस व्यापार को व्यवस्थित करने के लिए प्रार्थना की। उन्होंने मुझे इस समस्या के विषय में जानकारी दे दी थी। मैंने उनको इकट्ठा किया और एक ऊनी व्यापारी संगठन बनवाया। मैंने सरकार से पत्राचार किया । बतौर संगठन के अध्यक्ष के रूप में मैं ऊन की इक्कीस रूपये प्रति मन तक बढ़ाने में सफल हुआ। जो धीरे–धीरे रूपये पैन्तीस प्रति मन तक बढ़ गया। इस प्रकार व्यापारियों की सहायता करके उनको हानि से बचाने में कामयाब रहे।

सन 1936 में बिचौलियों के छेड़छाड़ के कारण कुठ के व्यापार को हानि पहुंची। मैनें फिर एक संगठन बनवाया, " द लाहुल कुठ ग्रोअरज़ कम्पनी लि॰' के नाम से । जिला कांगड़ा के इतिहास में इस प्रकार की संस्था पहली थी। मैं इस कम्पनी का चैयरमैन और डायरैक्टर था । कम्पनी के प्रति मेरा सर्मपण तथा मेरे भाई ठाकुर प्रताप चन्द की सहायता से मैं इन व्यापारियों को कामयाब बनाने में सफल रहा। उस समय कुठ की कीमत रूपये 250/– प्रति किलो थी और हम 1939 तक लाखों रूपये का व्यापार करने में कामयाब हुए।

सन 1934 में मैनें भी 11/17 डोगरा बटालियन में प्रवेश लिया और मुझे जूनियर कमीशन ऑफ़िसर का रैंक दिया गया। ग्रीष्म के समय मैं घर का काम चलाता था, तथा चैयरमैन –डायरैक्टर की डयूटी देता था। सर्दियों में फौजी ट्रेनिंग के लिए जाता था।

सन 1939 में जब महायुद्ध छिड़ गया हमको सक्रिय सेवा के लिए बुलाया गया और पूरे समय में सेवा में रहना पड़ा, अतः मुझे कुठ की कम्पनी के चैयरमैन का पद त्यागना पड़ा। इसके बाद इस कम्पनी को बहुत हानि हुई। 1939 में मुझे 11/17 टी0 ए0 बटालियन में कमीशन मिला, बतौर लेफ्टिनेंट। सन 1942 में यह नया डोगरा रेजिमेंट हो गया और 1946 में इसे सैकिन्ड डोगरा बटालियन में मिला दिया गया।

हमारे लाहुल की कम्पनी का कार्य प्रशंसनीय रहा और उनके काम की बहुत प्रशंसा हुई। सन 1945 में जब युद्ध समाप्त हुआ , बहुत से लाहुलवासी फौज छोड़कर आ गए और सैकिन्ड बटालियन में मात्र 30 आदमी रह गए थें। मैं स्वयं मैजर , कैप्टन खुशाल चन्द, सूबेदार भीम चन्द और लगभग 20 अन्य रैंक के आदमी सेना में थे।

सन 1947 में देश का विभाजन होने पर हमारे बटालियन को नवम्बर माह में कश्मीर भेजा गया और पाकिस्तानी घुसपैठियों से लड़ने के लिए नियुक्त किया। जब हम कश्मीर सीमा पार युद्ध में तैनात थे, हमने अनुभव किया कि लद्दाख , पाकिस्तान के आकमण के खतरे में अधिक उदघाटित हो गया है। परन्तु लद्दाख में दुश्मन का मुकाबला कर सकने वाला कोई बलशाली सैनिक संगठन नहीं है। जोज़ीला सर्दियों में बन्द हो गया था और वर्फ से ढक गया था। इस मौसम में दर्रा पार कर पाना कठिन है।

परन्तु हमें लगातार चिन्ता सता रही थी कि जब हम यहां कश्मीर में लड़ रहें हैं, दुश्मन लद्दाख में प्रवेश कर सकता है, और वहां लूट मार का तांडव रचा जा सकता है। मैंने अपने ले० कर्नल जी० जी० विबूर से मुलाकात की तथा उनको कहा कि यदि आप लाहुली और लद्दाखी सिपाहियों को लद्दाख भेजेंगें तो वहां हम युद्ध के लिए प्रबन्ध करेंगें औंर लद्दाख को बचाएंगे। यह सौभाग्य था कि लद्दाख के युवक बौद्ध संगठन ने राफ्ट्र के प्रिय नेता पंडित जवाहर लाल नेहरू को तार भेजकर प्रार्थना की थी कि उनके प्रशिक्षण तथा सहायता के लिए प्रशिक्षक और शस्त्र भेजे जाएं। ताकि वे लद्दाख की रक्षा कर सकें।

लद्दाख पर खतरा मंडराता देख प्रधानमंत्री ने सेना के मुख्य को लद्दाख की रक्षा के लिए प्रबन्ध करने का आदेश दिया । तब हमारे ब्रिगेड कमांडर एल० पी० सेन को कश्मीर में हुक्म हुआ कि कुछ ट्रक लद्याख भेजे जाएं और उसकी रक्षा की जाए। बिग्रेड में पहले ही कश्मीर के लिए लड़ने वालों की कमी थी। भारी वर्फ के कारण दर्रे बन्द थे। अतः सैनिक भेजना नामुमकिन था। परन्तु जैसे कि घटना घटी कि कम्पनी और ब्रिगेड कमांडर के बीच बातचीत हुई। हमारी कम्पनी ने इच्छा व्यक्त की कि मेजर पृथी चन्द जो सैकिन्ड इन कंमाड थे लगभग 20 लाहुली व लद्दखी सिपाहियों के साथ लद्दाख जाने की इच्छा रखते है। ब्रिगेड कमांडर ने तुरन्त हमको बुलाया और कहा यदि तुम लद्दाख जाना चाहते हैं तो हम तुम्हारी सहायता कर सकते हैं और तुम्हारी यात्रा का प्रबन्ध कर सकते हैं। अतः फरवरी 1948 में मुझे कालम कमांडर बना कर मेरे अधीन मेजर खुशाल चन्द, सुबेदार भीमचन्द और 16 अन्य रैंक जिसमें नौ लाहुली तथा सात लद्दाखी थे, को लद्दाख जाने का हुकम हुआ।

हम दस फरवरी को श्रीनगर से रवाना हुए। गन्दरबल से आगे हमें पैदल बर्फ पर जाना था। गुण्ड में भारी बर्फवारी के कारण हमें वहां आठ दिन तक रूकना पड़ा। तब हम आगे बढ़ पाए। 26 फरवरी को हम ने जोजी ला पार किया। और 9 मार्च को लेह लद्दाख पहुंचे। हम मध्य शीत ऋतु की कड़ी ठण्ड में बर्फ पर 200 मील तक पैदल चलते रहे।

लद्दाख में हमने ट्रेनिंग पार्टी का इन्तजाम किया और स्थानीय वालंटियरों को अलग अलग जगह पर ट्रनिंग देना शुरू कर दिया। तब पाकिस्तानियों ने हमला करके कारगिल पर काबू कर किया। और नुबरा और सिन्ध से होकर लेह की ओर बढ़ने लगे। हमने गौरिला विधि से अगस्त मास तक दुश्मन के फौज को दूर रखा। तब लाहुल से होकर तथा हवाई जहाज से नियमित रक्षा सिपाही सैनिक आए और 18 नवम्बर तक हम ने लद्दाख की रक्षा की। जब भारतीय सेना जोजी ला से होकर पहुंची तो हमने मिलकर दुश्मन को खदेड़ा और उनको भागते हुए पीछा किया और लद्दाख को पाकिस्तानी हमलावरों से बचाया।

गौरिला कारवाई के दौरान हमने दुश्मन की सीमा के भीतर धुस कर दुश्मन के तोपों और असले के भंडार को नष्ट किया। यह सब संभव हुआ लाहुली और लद्दाखी सिपाहियों की इतनी ऊंचाई और कठिनाई भरे दशा में लड़ने की क्षमता के कारण जो प्रायः सत्तु के राशन पर जीती रही। वे सच्चे देश भक्त थे।

अनियमित सैनिक संगठन जिसको हमने प्रशिक्षित किया था और पाकिस्तानी दुश्मन से लड़े थे, को बाद में 7 वीं जे0 एंड के0 मिलिशिया बटालियन का नाम दिया गया। बाद में यह प्रथम लद्दाख स्काउट के नाम से जाना जाने लगा। 1948 के दौरान निम्न जनों ने बहादुरी के खिताब प्राप्त किये।

1	ले0 कर्नल पृथी चन्द	महाबीर चक्र
2	ले0 कर्नल खुशाल चन्द	महाबीर चक्र
3	सुबेदार भीमचन्द	बीर चक्र और बार
4	सुबेदार (बाद में मेजर) छेवांग रिन्छेन	महाबीर चक्र
5	सिपाही तोबागे राम	वीर चक्र

लद्दाख स्काउट की यह बटालियन बाद में 1962 में चीनी आक्रमण कारियों के विरूद्व कार्रवाई के दौरान भी बहादुरी से लड़ी और 35 तगमें अर्जित किये। लद्दाख स्काउट के मेजर छेवांग रिन्छेन ने फिर महावीर चक्र प्राप्त किया और लाहुल से तनज़िन फुन्चोग को मृत्योपरांत महावीर चक्र प्रदान किया गया।

इस प्रकार से यह सिद्ध हो गया है कि प्रथम महायुद्ध से लेकर 1971 की लड़ाई तक लाहुली और लद्दाखी योद्धा उतम श्रेणी के योद्धा हैं और अपने देश को हर समय बचाने में अत्यन्त कुशल है।

ठाकुर अमय चन्द 11/17 डोगरा रैजिमेंट में लेफ्टीनेंट थे। वे 1924 से 1929 तक लाहुल के बज़ीर रहे। उसके बाद मानसिक कष्ट के कारण अपने पद पर कायम नहीं रह सके।

ठाकुर अमय चन्द की बीमारी के पश्चात ठाकुर प्रताप चन्द ने लाहुल के बजीर का कार्यभार संभाला। वे 11/17 डोगरा में कैप्टन थे। वे 1929 से 1939 तक लाहुल के बजीर रहे।

......

उक्त लेख, जिसका मूल अंग्रेजी में है, निम्न हस्ताक्षर कांरी ने लेखक से रांगड़ी गांव मनाली से सितम्बर 1979 में प्राप्त किया था और उसको हिन्दी में अनुदित करके यहां प्रस्तुत किया गया है। अपने रिटायर्ड जीवन के अन्तिम समय बिताने के लिए वे रांगड़ी में बस गए थे। उनका जीवन सुख और शान्ति से व्यतीत हो रहा था। फिर उन्हें अचानक एक दिन कष्ट हुआ और चार दिनों तक कठिनाई में रहने के पश्चात 28 जनवरी 2000 को निर्वाण की अवस्था में प्रवेश कियझं

–तोबदन

एवरेस्ट विजेता प्रेम सिंह

पर्वतारोहण के क्षेत्र में प्रेम सिंह की उपलब्धियां बहुत ही सराहनीय है । उन्होंने कम उम्र में जो कामयाबियां प्राप्त की हैं, उनसे देश, प्रदेश और क्षेत्र का नाम ऊंचा हुआ है ।

प्रेम सिंह का जन्म 1964 में लाहुल स्पिति जिला के करदंग गांव में हुआ । प्रारम्भिक शिक्षा अपने क्षेत्र में प्राप्त करने के पश्चात् वे धर्मशाला, जिला कांगडा, आए जहां से उन्होनें बी0 ए0 की डिग्री प्राप्त की । इसके पश्चात् आई0टी0बी0पी0 में भर्ती हो गए । यहां उन्हें अपनी योग्यता प्रदर्शित करने का भरपूर मौका मिला और उन्होनें मौके का पूरा लाभ उठाया । वास्तव में उनके साहसिक गुण सेवा में प्रवेश होते ही प्रगट होने लगे थे । प्रशिक्षण के समय उत्तम प्रदर्शन तथा सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षणार्थी होने के कारण उन्हें भारत सरकार के गृहमन्त्री के अवार्ड से सम्मानित किया गया ।

दार्जिलिंग में पर्वतारोहण में उच्च प्रशिक्षण लेते हुए तथा गुलमर्ग में पर्वतीय युद्ध कौशल का प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए, वे फिर अपने बैच में सर्वश्रेष्ठ रहे ।

सन् 1992 में आई0टी0बी0पी0 का दल एवरेस्ट की चढ़ाई के लिए नियुक्त हुआ जिसमें प्रेम सिंह को भी सम्मिलित किया गया । 8335 मीटर की उंचाई पर जाकर उनकी ऑक्सीजन की सप्लाई समाप्त हो गई । वाबजूद इसके वे विचलित नहीं हुए और उन्होनें अपना अभियान चालू रखा । परिणामस्वरुप 10 मई 1992 को वे एवरेस्ट के शिखर पर बिना ऑक्सीजन की सहायता से पहुंचने में सफल रहे और वहां भारत का राष्ट्रीय तिरंगा फहराया । सन् 1996 में इस संगठन का एक ओर दल उत्तर दिशा की ओर से चढ़ा जिसमें फिर प्रेम सिंह शामिल थे । 7925 मीटर की ऊंचाई में पहुंचकर उन्हें व्यक्तिगत आकांक्षा का त्याग कर मूल मानवधर्म वरण करना स्वीकार्य हुआ । उन्होनें अपने दल के दो सदस्यों को मौत के मुंह से बचाया । इसके साथ ही उनका 6401 मीटर की उंचाई पर 35 दिन तक बने रहने का नया रिकार्ड स्थापित हुआ । हिमाचल सरकार ने प्रेम सिंह की इन अति महत्वपूर्ण उपलब्धियों की सराहना करते हुए उन्हें पुरस्कृत किया ।

जनवरी सन् 2005 में लद्दाख में 6121 मीटर की उंचाई वाली चोटी पर अपने दल के उपनेता के रुप में चढ़ने में कामयाब रहे । सन् 2006 में उत्तर (चीन) की ओर से एवरेस्ट की चढ़ाई आरम्भ हुई जिसके प्रेम सिंह फिर उपनेता थे । 6553 मीटर की उंचाई से ऊपर की आवश्यकताओं के प्रबन्धन का भार उनके ऊपर था । वे पुनः विश्व के उच्चतम शिखर पर पंहुचनें में सफल हुए और भारतीय पुलिस दल के ऐसे प्रथम सदस्य बने ।

उनकी एक अन्य उपलब्धि है । फिर अपनी व्यक्तिगत अकांक्षा का त्याग कर उन्होंनें एक अन्य अभियान में 7041 मीटर की उंचाई पर एक सदस्य के जीवन की रक्षा की । प्रेम सिंह को अन्य अलंकारों से सुसज्जित किए जाने की सम्भावना है । प्रेम सिंह का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है ।
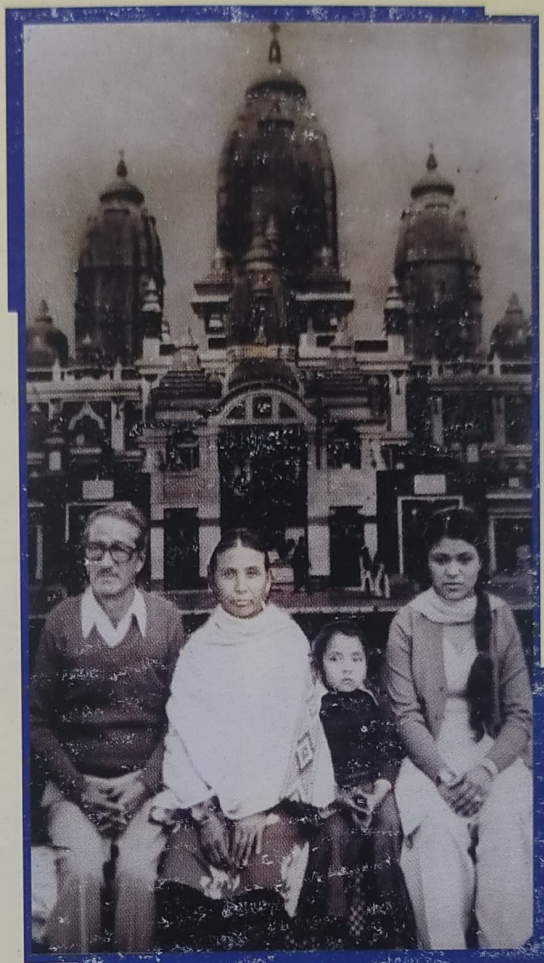
ठाकुर देवी सिंह अपने परिवार के सदस्यों के साथ

खूब राम ठाकुर,
पहाड़ी रामायण को टांकरी से नागरी में लिखते हुए

एवरेस्ट विजेता, प्रेम सिंह

पारम्परिक वेशभुषा में

GUPTA OFFSET PRINTERS, KULLU
MOBILE : 98163-90864